₹ 15

हिन्दी भाषियों की मासिक पत्रिका

कान्ति

अगस्त 2011

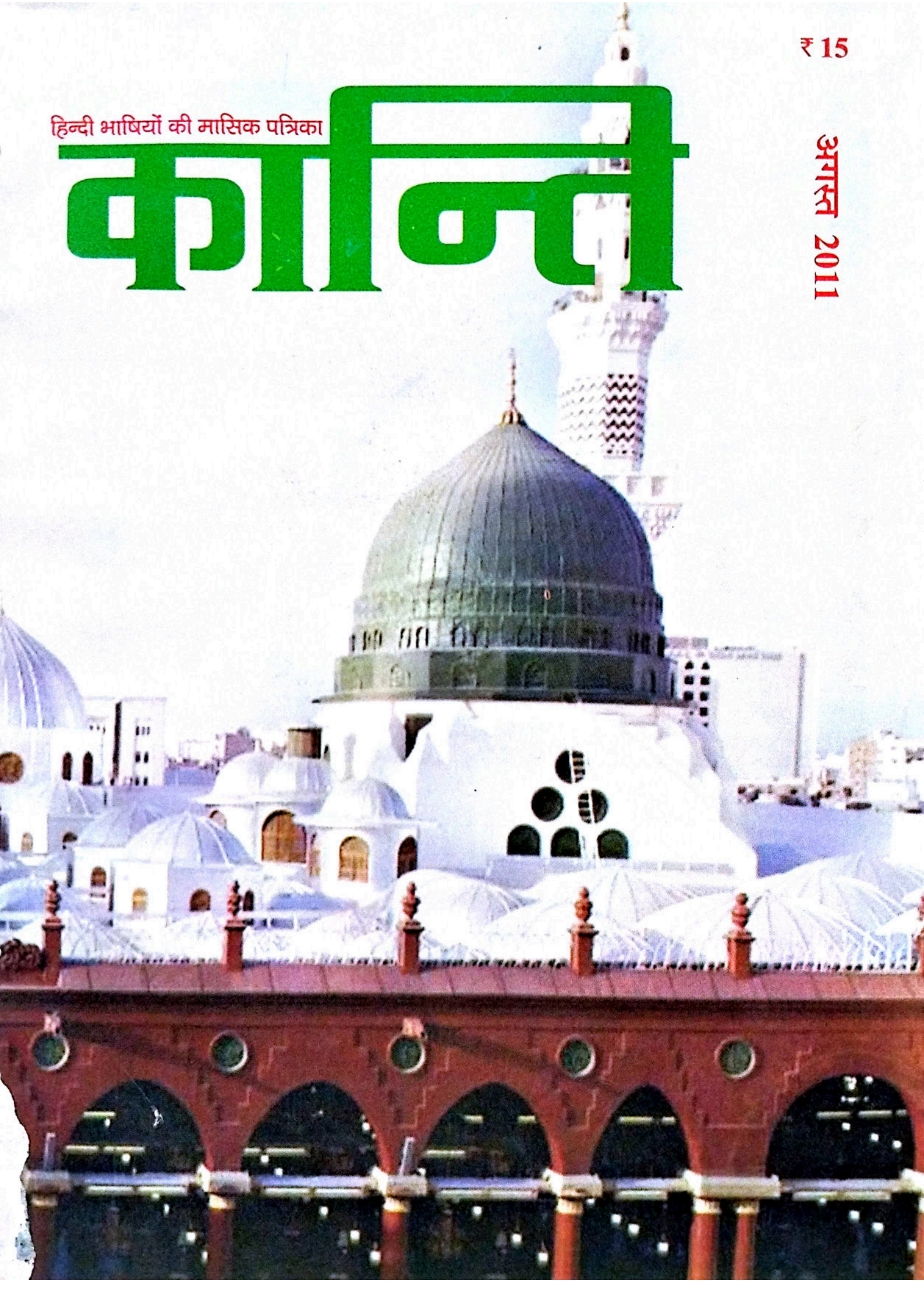

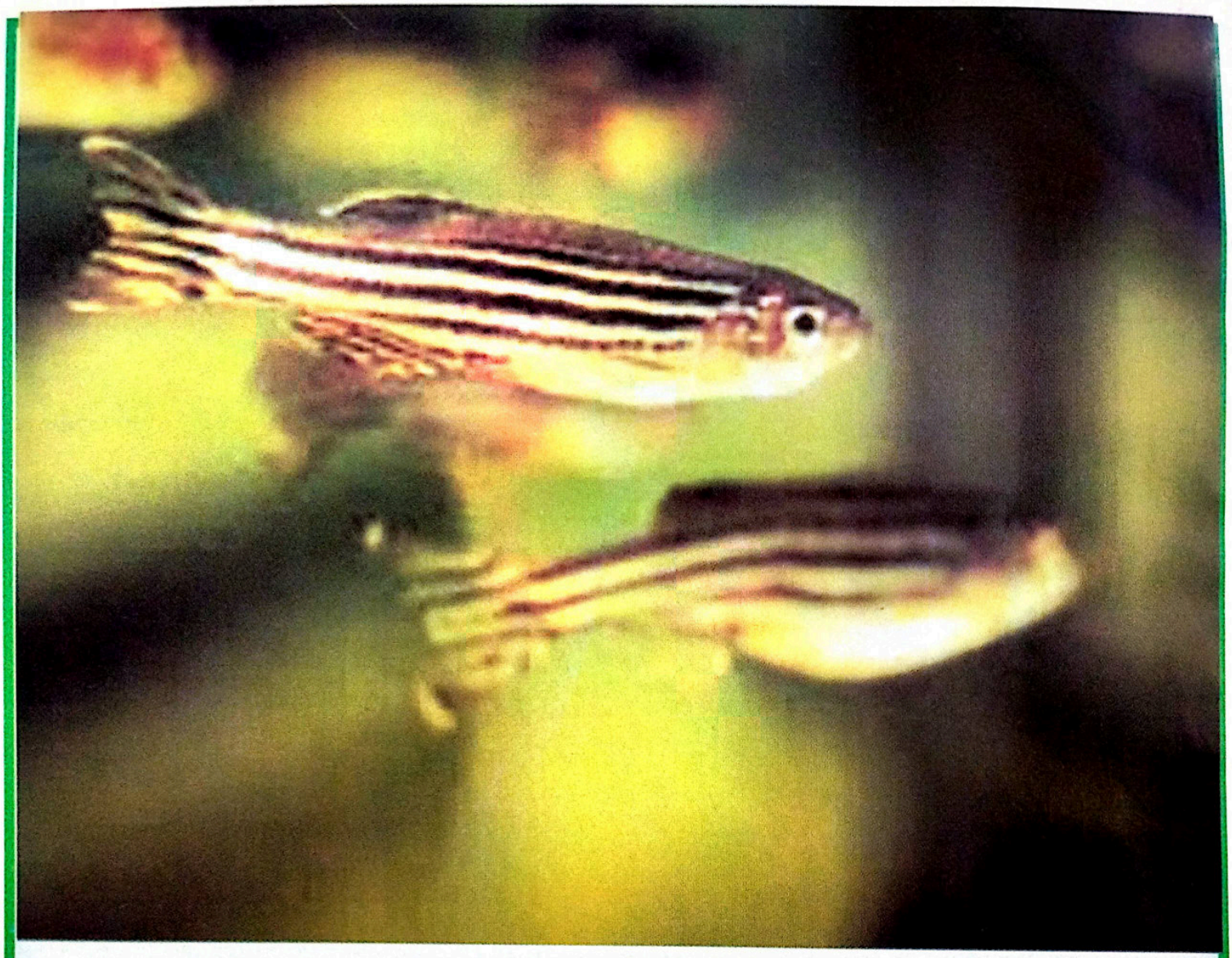

Juned : 9225983350
9970054366

MOHAMMED JUNED

Wholesale Fish Merchant & Commission Agent

Wholesale Fish Market,
Opp. K.T.C. Bus Stand, Madel, Margao, Goa

आपकी आशाओं का सुन्दर प्रतिबिम्ब

हिन्दी भाषियों की मासिक पत्रिका

कान्ति

वर्ष 21 अंक 2 अगस्त 2011

रमज़ान का महीना जिसमें क़ुरआन उतारा गया जो मानवों के लिए सर्वथा मार्गदर्शन है और ऐसी स्पष्ट शिक्षाओं पर आधारित है जो सीधा मार्ग दिखाने वाली और सत्य और असत्य का अन्तर खोल कर रख देने वाली हैं। –क़ुरआन

संपादक

डॉ० मुहम्मद अहमद

अपने विचार, लेख, रचनाएं भेजने एवं संपादकीय मामलों के लिए लिखें–

संपादक, 'कान्ति' मासिक

डी-314, दावत नगर, अबुल फ़ज़्ल इन्कलेव

जामिया नगर, नयी दिल्ली–110025

ई मेल editorkanti@yahoo.com

* * *

ख़रीदार बनने, एजेंसी लेने, प्रचार-प्रसार एवं प्रबंधकीय मामलों के लिए लिखें–

प्रबंधक, 'कान्ति' मासिक

डी-314, दावत नगर, अबुल फ़ज़्ल इन्कलेव

जामिया नगर, नयी दिल्ली–110025

फोन–(011)–26949430

सहयोग राशि

एक प्रति रु० 15/- विशेषांक रु० 25/-

वार्षिक रु० 160/-

दो वर्ष 300/- पांच वर्ष 700/-

सऊदी अरब और खाड़ी के देशों से–60 रियाल

यूरोप व अमेरिका से–25 US डॉलर

चेक / ड्राफ्ट **'मासिक कान्ति'** के नाम से बनवाएं

ग़ज़ल

क्या बताए कोई मर्तबा[1] आपका
मद्हख़्वां[2] है ख़ुदा, मुस्तफ़ा आपका

फ़तहे-मक्का[3] भी इक मोजिज़ा[4] आपका
कुफ़्र मुंह देखता रह गया आपका

रहबरी[5] है तो बस रहबरी आपकी
रास्ता है तो बस रास्ता आपका

उम्मते-मुसलिमा[6] कुछ मक़ामी[7] नहीं
कायनाती[8] है ये दायरा आपका

आपको क़त्ल करने जो आया था वो
आपको देखकर हो गया आपका

आज की उलझनों में फंसी ज़िन्दगी
पूछती फिर रही है पता आपका

देख लो मुंह के बल गिर पड़ा वो निज़ाम[9]
जो उड़ाता रहा मुज़हका[10] आपका

एक लम्हा न ठहरेंगे झूटे नबी
नाम तो लीजिएगा ज़रा आपका

आपकी नुक्तासंजी[11] से ऐसा लगा
मस्अले[12] मानतें हैं कहा आपका

इक कसक इक तड़प मांगता है 'हफ़ीज़'
दे के अल्लाह को वास्ता आपका।

---

1. दर्जा 2. प्रशंसक 3. मक्का-विजय 4. चमत्कार 5. नेतृत्व, रहनुमाई 6. मुस्लिम समुदाय 7. स्थानीय 8. विश्वव्यापी 9. जीवन-व्यवस्था 10. खिल्ली, उपहास, हंसी 11. किसी चीज़ के मर्म और बारीकियों को समझना 12. समस्याएं।

● **हफ़ीज़ मेरठी**



कहां क्या है ?

ग़ज़ल	–हफ़ीज़ मेरठी	3
क़ुरआन ज्योति		5
विनम्रता और दयालुता (हदीस मंजरी)		6
रमज़ान के रोज़ों के अपेक्षित गुण (संपादकीय)		7
पाखंडपूर्ण परम्परा (आपके पत्र)		8
इस्लाम : एक व्यावहारिक व्यवस्था	–सैयद हामिद अली	13
हज़रत अनीसा बिन्त अबी हारिसा रज़ि॰ (नेकी के सिपाही)	–तालिब हाशमी	19
इस्लाम के बारे में ग़ैर-मुस्लिम विद्वानों के विचार	–आमना उस्मानी	21
ठाकुर का कुआं (कहानी)	–मुंशी प्रेमचन्द	23
रमज़ान के रोज़ों के वास्तविक लाभ	–मौलाना अमीन अहसन इस्लाही	26-27
अल्लाह की रहमत और बरकत का महीना है रमज़ान	–विद्या प्रकाश	31
ईदुल फ़ित्र की अपेक्षाएं	–मौलाना सऊद आलम क़ासिमी	35
माहे रमज़ान (कविता)	–शौक़ आज़मी	37
संयम और ईद	–अक्षय कुमार जैन	37
जनकल्याण एवं परोपकार	–मुस्तफ़ा हसनी अस्सबाई	39
शरबत पिएं, मगर एहतियात के साथ	–विद्या प्रकाश	42
ईश्वर अवतार नहीं लेता	–स्वामी दयानन्द	43
यूसुफ़ ख़ान का बक्सा (लघुकथा)	–सुकीर्ति भटनागर	44
भ्रष्टाचार के ख़िलाफ़ जंग	–डॉ॰ असग़र अली इंजीनियर	45
मानव-अधिकार	–संपादन प्रभाग	48
कैसे बनते हैं बादल (बालवीथी)	–संपादन प्रभाग	49



(26) याद करो वह समय जबकि तुम थोड़े थे, धरती में तुमको कमज़ोर समझा जाता था, तुम डरते रहते थे कि कहीं लोग तुम्हें मिटा न दें। फिर अल्लाह ने तुम्हें शरण लेने का स्थान जुटाया, अपनी मदद से तुम्हारे हाथ मज़बूत किये और तुम्हें अच्छी रोज़ी पहुंचायी, शायद कि तुम कृतज्ञ बनो।[21] (27,28) ऐ लोगो जो ईमान लाए हो ! जानते-बूझते अल्लाह और उसके रसूल के साथ ख़ियानत (विश्वासघात) न करो, अपनी अमानतों में[22] ग़द्दारी के दोषी न बनो और जान रखो कि तुम्हारे माल और तुम्हारी संतान वास्तव में परीक्षा-सामग्री हैं[23] और अल्लाह के पास अज्र (बदला) देने के लिए बहुत कुछ है। (29) ऐ लोगो जो ईमान लाए हो ! अगर तुम ईशपरायणता अपनाओगे तो अल्लाह तुम्हारे लिए कसौटी जुटा देगा[24] और तुम्हारी बुराइयों को तुमसे दूर करेगा और तुम्हारे क़ुसूर माफ़ करेगा। अल्लाह बड़ा अनुग्रह करने वाला है।

–क़ुरआन, 8 : 26-29

---

21. यहां 'कृतज्ञ बनो' शब्द ध्यान देने योग्य है। ऊपर के व्याख्यान-क्रम को दृष्टि में रखा जाए तो स्पष्ट हो जाता है कि इस अवसर पर 'कृतज्ञ बनो' का तात्पर्य केवल इतना ही नहीं है कि लोग अल्लाह के इस उपकार को मानें कि उसने इस कमज़ोरी की हालत से उन्हें निकाला और मक्का के संकटमय जीवन से बचाकर शान्ति की जगह ले आया जहां पाक रोज़ी मिल रही है, बल्कि इसके साथ यह बात भी इसी कृतज्ञता के अर्थ में सम्मिलित है कि मुसलमान उस अल्लाह का और उसके रसूल का आज्ञापालन करें जिसने ये उपकार उन पर किये हैं और रसूल के मिशन में निष्ठा और प्राणोत्सर्जन के साथ काम करें और इस काम में जो ख़तरे, प्राणघातक स्थितियां और विपदाएं सामने आएं उनका वीरतापूर्ण मुक़ाबला उसी अल्लाह के भरोसे पर करते चले जाएं जिसने इससे पहले उनको संकटों से कुशलतापूर्वक निकाला, और विश्वास रखें कि जब वे अल्लाह का काम निष्ठा के साथ करेंगे तो अल्लाह ज़रूर उनका सहायक और संरक्षक होगा। अत: कृतज्ञता स्वीकारोक्ति की हद तक ही अपेक्षित नहीं है, बल्कि व्यावहारिक रूप में भी अभीष्ट है। उपकार को स्वीकार करने के बाद भी उपकारी की प्रसन्नता के लिए यत्न न करना और उसकी सेवा में निष्ठा न दिखाना और उसके बारे में यह सन्देह रखना कि न जाने वह आगे भी उपकार करेगा या नहीं, कदापि कृतज्ञता नहीं है, बल्कि उलटी कृतघ्नता है।

22. 'अपनी अमानतों' से तात्पर्य वे तमाम ज़िम्मेदारियां हैं जो किसी पर भरोसा करके उसके सुपुर्द की जाएं, भले ही वे वफ़ादारी के पालन की ज़िम्मेदारियां हों या सामूहिक समझौतों की, या संगठन (और संस्था) के रहस्यों की, या व्यक्तिगत व सामूहिक मालों की या किसी ऐसे पद की जो किसी व्यक्ति पर भरोसा करते हुए संगठन उसके सुपुर्द करे।

(और अधिक व्याख्या के लिए देखिये क़ुरआन की सूरा-4, (निसा), टिप्पणी 88)

23. मनुष्य की ईमानी-निष्ठा में जो चीज़ सामान्य रूप से बाधा पैदा करती है और जिस कारण मनुष्य प्राय: कपटाचार, विद्रोह और ख़ियानती विश्वासघात में लिप्त होता है, वह अपने आर्थिक स्वार्थ और अपनी सन्तान के हित से उसकी अपार दिलचस्पी होती है। इसीलिए कहा कि यह

(शेष पृष्ठ 11 पर)

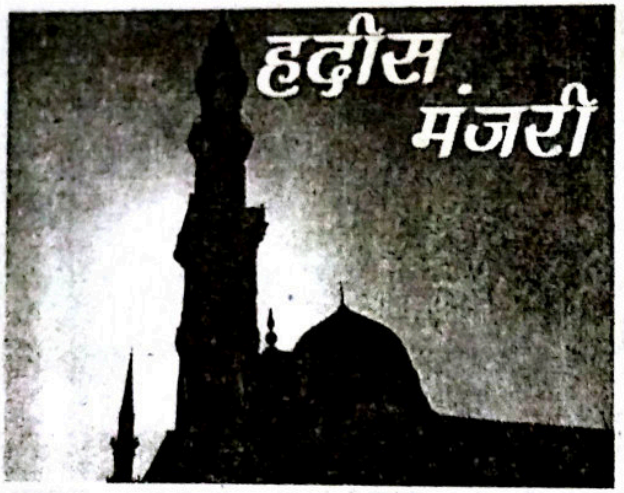

विनम्रता और दयालुता

● हज़रत इयाज़ बिन हिमार (रज़ि॰) से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) ने कहा : "अल्लाह ने मेरी ओर 'वह्य' (प्रकाशना) की कि आपस में एक-दूसरे से विनम्रता का व्यवहार करो यहां तक कि न कोई किसी के मुक़ाबले में गर्व करे और न कोई किसी पर ज़्यादती करे ।" –मुस्लिम

● हज़रत अबू हुरैरा (रज़ि॰) से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) ने कहा : "सदक़ा (दान) से माल में कमी नहीं होती और क्षमा करने पर अल्लाह अपने बन्दे की इज़्ज़त ही बढ़ाता है और जो कोई अल्लाह के लिए विनम्रता का व्यवहार करता है, तो अनिवार्यत: अल्लाह उसे उच्चता प्रदान करता है ।" –मुस्लिम

● हज़रत अनस (रज़ि॰) से रिवायत है कि वे बच्चों के पास से गुज़रे, तो उन्हें सलाम किया और कहा : नबी (सल्ल॰) ऐसा ही करते थे ।
–बुख़ारी, मुस्लिम

● हज़रत अनस (रज़ि॰) कहते हैं कि मदीना की बांदियों में से कोई बांदी नबी (सल्ल॰) का हाथ पकड़ लेती और फिर जहां चाहती आपको ले जाती । –बुख़ारी

● हज़रत असवद बिन यज़ीद कहते हैं कि हज़रत आइशा (रज़ि॰) से पूछा गया कि नबी (सल्ल॰) अपने घर में क्या करते थे? उन्होंने कहा : आप अपने घर वालों की मदद अर्थात सेवा में लगे रहते थे और जब नमाज़ का समय आ जाता, तो आप नमाज़ के लिए बाहर निकलते । –बुख़ारी

गर्व और आत्माभिमान का निषेध

● हज़रत अबू सईद अल-खुदरी (रज़ि॰) से रिवायत है कि नबी (सल्ल॰) ने कहा : "जन्नत और दोज़ख़ में वाद-विवाद हुआ । दोज़ख़ ने कहा: मेरे भीतर दमनकारी और अहंकारी लोग होंगे । और जन्नत ने कहा : मेरे भीतर निर्बल और मोहताज लोग होंगे । तो अल्लाह ने उनके बीच यह फ़ैसला किया कि ऐ जन्नत, तू मेरी दयालुता है । तेरे द्वारा मैं जिस पर चाहता हूं दया करता हूं । और ऐ दोज़ख़, तू मेरी यातना है । तेरे द्वारा मैं जिसे चाहता हूं यातना देता हूं । और तुम दोनों को भर देना मेरे ज़िम्मे है ।" –मुस्लिम

● हज़रत अबू हुरैरा (रज़ि॰) से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) ने कहा : "तीन व्यक्ति ऐसे हैं जिनसे क़ियामत के दिन अल्लाह बात न करेगा और न उन्हें निखारेगा और न उनकी ओर देखेगा और उनके लिए दुखदायिनी यातना है । (वे ये हैं) : बूढ़ा व्यभिचारी, झूठा बादशाह और निर्धन अहंकारी ।" –मुस्लिम

● हज़रत अबू हुरैरा (रज़ि॰) से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) ने कहा : "गौरव का स्वामी प्रतापवान अल्लाह कहता है : इज़्ज़त मेरा तहबंद है और बड़ाई मेरी चादर है । अब जिस किसी ने इन दोनों में से किसी को खींचना चाहा उसे मैं यातना दूंगा ।" –मुस्लिम
(रियाज़ुस्सालिहीन' से)

इस्लाम-परिचय
हिन्दी वेबसाइटें
www.islamdharma.org
www.islamicwebdunia.com
www.islamic-videos.com

रमज़ान के रोज़ों के अपेक्षित गुण

अल्लाह एक है । वह सर्वशक्तिमान है और अत्यंत करुणामय भी । उसके इन्सानों पर अनगिनत उपकार हैं । इनमें रमज़ान महीने के रोज़े भी हैं, जो इस्लाम में दूसरी बड़ी इबादत है । ये मुसलमानों पर अनिवार्य हैं । नमाज़ की तरह ये रोज़े भी अल्लाह के सभी पैग़म्बरों और सन्देशवाहकों की जीवन-व्यवस्था में अनिवार्य (फ़र्ज़) रहे हैं । आज के प्रचलित अन्य धर्मों में भी ये न्यूनाधिक रूप में मौजूद हैं । पवित्र कुरआन में है : 'ऐ मुसलमानो, तुम्हारे ऊपर रोज़ा फ़र्ज़ किया गया है, जिस तरह तुम से पहले की उम्मतों (समुदायों) पर फ़र्ज़ किया गया था' (2:183)। इस्लाम किसी क्षणिक क्रिया, अनुष्ठान या उपक्रम का नाम नहीं है, बल्कि वह इन्सान की पूरी ज़िन्दगी पर आच्छादित है । इस प्रकार वह पूरी ज़िन्दगी का ही सुधार नहीं चाहता, बल्कि परलोक की ज़िन्दगी को भी सफल देखना चाहता है । अत: इस्लाम का मौलिक उद्देश्य इन्सान की पूरी ज़िन्दगी को अल्लाह की इबादत बना देना है । इस उद्देश्य की प्राप्ति में रमज़ान के रोज़ों की भी महत्वपूर्ण भूमिका है । रमज़ान के रोज़ों के द्वारा इन्सान में तक़वा और ईशपरायणता का विशिष्ट गुण पैदा होता है, जो विभिन्न विकारों, बुराइयों और ख़राबियों से इन्सान को सुरक्षित रखता है । यह उत्तम चरित्र के आधारों में महत्वपूर्ण आधार है । वास्तव में रमज़ान के रोज़े चारित्रिक सुधार का बड़ा ज़रिया हैं । अल्लाह के रसूल हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) ने फ़रमाया कि 'रोज़ा (दुनिया में गुनाहों से और आख़िरत में जहन्नम से बचाने वाली) ढाल है ।' एक दूसरी हदीस में है, 'अत: जब तुममें से किसी का रोज़ा हो, तो चाहिए कि वह न अश्लील बात करे, न शोर मचाये और यदि कोई उससे गाली-गलौज करे या लड़ने-भिड़ने पर उतर आये तो (उससे भी और अपने आप से भी) कहे कि मैं रोज़े से हूं, मैं रोज़े से हूं' (मुस्लिम)।

यूं तो प्रत्येक मुसलमान के लिए बुरी बात कहने, गाली-गलौज करने लड़ने-भिड़ने आदि से प्रत्येक परिस्थिति में बचना आवश्यक है, लेकिन जब वह रोज़े से हो, तो उसके लिए शांति की इस नीति की आवश्यकता और अधिक बढ़ जाती है । रमज़ान के रोज़ों को यह भी अपेक्षित है कि रमज़ान मास में अपने चारित्रिक उठान की रोज़ेदार ने ट्रेनिंग ली है, उसका पूर्ण प्रभाव शेष ग्यारह महीनों तक उसकी ज़िन्दगी पर बना रहे, यहां तक कि उसे दूसरे प्रशिक्षण मास में पहुंचने का अवसर मिल जाए । अल्लाह के अंतिम पैग़म्बर हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) का यह कथन वास्तव में रोज़ों को विशिष्ट करता है, 'आदमी का हर अमल अल्लाह के यहां कुछ न कुछ बढ़ता है । एक नेकी दस गुनी से सात सौ गुनी तक फलती-फूलती है, मगर अल्लाह तआला कहता है कि रोज़ा इससे अलग है । वह ख़ास मेरे लिए है और मैं उसका जितना चाहता हूं, बदला देता हूं ।' रोज़ा ईशपरायणता प्राप्ति का बड़ा ज़रिया है । यह इन्सान को अल्लाह के निकट करता है और उसका कृपापात्र बनाता है । रोज़े के बिना सही अर्थ में ईशपरायणता (तक़वा) नहीं पैदा हो सकती । निस्संदेह ऐसी बहुत-सी चीज़ें हैं जो ईशपरायणता के विकास में सहायक हैं, मगर इस सिलसिले में रोज़ा जो भूमिका निभाता है, उसका कोई विकल्प नहीं बन सकता । रोज़ों की एक विशिष्ट महत्ता यह भी है कि यह कुछ दृष्टियों से इस्लाम की मौलिक प्रकृति का सबसे बड़ा प्रतिबिम्ब है और इस्लाम की जो धारणा कुरआन ने बतायी है, उसकी विशिष्ट रूप-रेखा रोज़े के आइने में सबसे अधिक स्पष्ट नज़र आती है । अत: रोज़ा इन्सान को केवल कर्म से ईशपरायण और परहेज़गार नहीं बनाता, बल्कि सोच एवं दृष्टि का भी परहेज़गार बनाता है । वह इन्सान को तक़वा (ईशपरायणता) ही नहीं प्रदान करता, अपितु इसका व्यापक अर्थ भी प्रदान करता है । अल्लाह तआला से दुआ है कि रोज़ा सभी रोज़ेदारों के भीतर अपेक्षित गुण पैदा करे, ताकि वे उसके उदार अनुग्रहों के पात्र बन सकें ।

पाखंडपूर्ण परम्परा

मासिक 'कान्ति' के मई 2011 अंक में कामता प्रसाद मिश्र का 'मूर्ति पूजा : सर्वथा अवैदिक और त्याज्य' शीर्षक लेख पढ़ा । लेख अच्छा लगा । मूर्तिपूजा धार्मिक अंधविश्वास और पाखंड के अतिरिक्त कुछ भी नहीं है । समाज के कुछ पंडे-पुजारी मूर्तिपूजा के नाम पर अपनी दुकानदारी सुनियोजित ढंग से चला रहे हैं और यह उनके जीविकोपार्जन का ज़रिया बना हुआ है । वे यह नहीं चाहते कि मूर्ति पूजन परम्परा समाप्त हो और उनकी धार्मिक दुकानदारी पर किसी प्रकार से कुठाराघात हो ।

आर्य समाज के प्रवर्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती प्रणीत अमर ग्रंथ 'सत्यार्थ प्रकाश' में पाषाण प्रतिमा पूजन परम्परा को सर्वथा अवैदिक बताया गया है । अनेक वैज्ञानिकों ने मंदिरों की प्राणप्रतिष्ठित प्रतिमाओं को प्रयोगशाला में ले जाकर वैज्ञानिक दृष्टि से सूक्ष्म परीक्षण तथा निरीक्षण किया तथा बताया कि देव प्रतिमाओं में प्राण तत्व नहीं पाया जाता । पाषाण प्रतिमा कलात्मक दृष्टि से सुन्दर, सराहनीय और प्रशंसनीय तो हो सकती है मगर सृष्टि नियंता ईश्वरीय शक्ति संपन्न, परम पूजनीय और परमादरणीय सृष्टि संचालिका नहीं । जो देव प्रतिमा अपनी नाक पर बैठी मक्खी तक नहीं उड़ा सकती वह अपने श्रद्धालुओं का किस प्रकार दुख दलन तथा दरिद्रता निवारण कर सकती है ।

संसार के विभिन्न क्षेत्रों में भूकंप जैसी प्राकृतिक आपदाएं प्राय: आती रहती हैं । लगभग 6-7 साल पूर्व महाविनाशकारी सुनामी लहरों के तेज़ तूफ़ानी और समन्दरी प्रकोप के फलस्वरूप दक्षिण भारत के साहिली इलाक़ों, श्रीलंका तथा इंडोनेशिया में बड़ी संख्या में लोगों की मौतें हो गयी और हज़ारों लोगों के मकान, कल-कारख़ाने, खेत-खलिहान तथा गगनचुम्बिनी विशालकाय अट्टालिकाएं सुनामी की तेज़ रफ़्तार वाली तबाहकारी लहरों के क्रूर पदाघात से क्षण मात्र में धराशायी हो गयीं ।

इस भीषण प्राकृतिक आपदा में मरने तथा प्रभावित होने वालों में अनेक ऐसे लोग थे जो मूर्तिपूजक तथा बुतपरस्त थे । वे मंदिरों में प्रतिदिन प्रात:काल नहा-धोकर देव प्रतिमाओं पर श्रद्धापूर्वक जलाभिषेक तथा दुग्धाभिषेक किया करते थे । सुवासित अगरबत्ती और कपूर प्रज्वलित कर पुष्पमाल सादर अर्पित किया करते थे तथा देव प्रतिमाओं का माहात्म्य गान किया करते थे । जिस समय सुनामी लहरों में मूर्ति पूजक श्रद्धालु डूब रहे थे और गेंद की तरह असहाय बहे जा रहे थे, उस वक़्त देव प्रतिमाएं कहां थी और उसने अपने भक्तों की प्राण रक्षा क्यों नहीं की ? अनेक उदाहरण हैं । विंध्यवासिनी धाम अथवा शीतला धाम में दर्शन पूजन की कामना से जा रहे श्रद्धालु भक्त रास्ते में ट्रक या रेल की चपेट में आकर हताहत हो गये । विंध्यवासिनी धाम तथा शारदा या शीतला धाम की पाषाण प्रतिमाओं ने उन पर दयादृष्टि क्यों नहीं की, उन्हें क्यों नहीं बचा लिया तथा उन पर क्यों नहीं अपना चमत्कार प्रदर्शित किया ।

मूर्ति पूजन परम्परा पाखंडपूर्ण है । इसकी आड़ में पंडों पुजारियों तथा मठाधीशों ने अंधविश्वासियों को मूर्ख बनाकर लाखों रुपयों की संपत्ति अर्जित की है । हम विदेशी बैंकों में जमा काले धन को स्वदेश लाने के लिए इतना हल्ला-गुल्ला मचाते हैं तथा इस मामले में लिप्त भ्रष्टाचारियों की निंदा करते हैं मगर धर्म की आड़ में अधार्मिक कृत्य तथा बुतपरस्ती कर लाखों-करोड़ों रुपये की चलाचल संपत्ति अवैध ढंग से संचित करने वाले मठाधीशों के ख़िलाफ़ एक शब्द नहीं बोलते बल्कि उनका सादर चरण स्पर्श कर आंख मूंदकर दान करते, चढ़ावा चढ़ाते हैं । हम यह भूल जाया करते हैं कि भ्रष्ट राजनेताओं तथा मठाधीशों-पुरोहितों का चरित्र एक जैसा है तथा दोनों राजनीति और मज़हब की आड़ में लोगों को बेवक़ूफ़ बनाकर अपना उल्लू सीधा करते हैं तथा वे आज लाखों-करोड़ों रुपये की संपत्ति के मालिक बने हैं । हमें धर्म के नाम पर समाज में प्रचलित अधार्मिक परम्पराओं तथा दूषित मान्यताओं से सावधान रहने की आवश्यकता हैं ।

मासिक 'कान्ति' के मई अंक में माहिरुल क़ादिरी का लिखा 'मानवता के आदर्श हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) लेख अच्छा लगा । सरल भाषाशैली में दिलचस्प ढंग से गंभीर

बात को प्रकट किया गया है । इस लेख में लेखकीय तथा संपादकीय प्रयास सार्थक हुआ है ।

विद्या प्रकाश

अचला घाट मार्ग, सिपाह, जौनपुर

न्याय की समस्या

'कान्ति' के जुलाई अंक का संपादकीय पढ़ा, जो सभी को झकझोरने वाला है । न्याय सस्ता, सरल सुगम मिले इसकी वकालत सभी करते हैं, लेकिन यह संभव कैसे बने इस पर विचार प्राय: नहीं किया जाता है । न्याय देरी से मिलने में न्यायालय का काम तथा पुलिस का काम बढ़ता है, वादी को मानसिक परेशानी उठानी पड़ती है और धंधा मिलता है वकीलों को ।

ऐसे में न्याय मिलने का प्रश्न ही नहीं उठता । लेखक ने यह परामर्श सही दिया है कि जब तक एक समय-सीमा के तहत न्याय देने की बाध्यता पैदा नहीं की जाएगी, न्याय मिल ही नहीं सकता ।

तारीख़ों पर तारीख़ों पड़ती रहेंगी और दोनों पक्ष परेशानी का सामना करते रहेंगे । हर तारीख़ पर 150-200 रुपये ख़र्च कीजिए और अगली तारीख़ की प्रतीक्षा कीजिए । यह क्रम चलता रहता है और न्याय की अपेक्षा में जीवन ही समाप्त हो जाता है ।

अत: इस गंभीर समस्या पर विचार करने की ज़रूरत है और इसका कोई रास्ता निकालने की आवश्यकता है । प्रश्न यह है कि इस पर कौन विचार करेगा और कौन यह सुविधा देगा ।

घेवरचन्द गोदीका

जयपुर, राजस्थान

धार्मिक अंधविश्वास

'कान्ति' के जुलाई 2011 ई० के अंक में मैंने मैत्रेय पुष्पा लिखित आलेख 'अंधी आस्थाओं का मायाजाल' का गहन अध्ययन किया ।

मैं इस निष्कर्ष पर पहुंचा कि प्रत्येक धर्म में धार्मिक अंधविश्वास, अराजकता, आडंबर आदि का जाल बिछ गया है । सच्चे धर्म की परिभाषा ही हम भुला बैठे हैं । धर्म की आड़ में धर्म के ठेकेदारों ने अपना-अपना व्यवसाय खोल रखा है ।

वर्तमान परिप्रेक्ष्य में देखा जाए तो अनेक प्रकार के अंधविश्वासों का प्रचार-प्रसार किया जाता है । अधिकांश लोग बहकावे में आ जाते हैं । धन का अनुचित अपव्यय करते हैं । झूठा ज्योतिष भी बढ़ता जा रहा है । धार्मिक संकीर्णता दिन-प्रतिदिन बढ़ती जा रही है । मैत्रेयी पुष्पा के सुनहरे विचारों को पूर्णत: अंगीकार करता हूं ।

रूपयश

भीलवाड़ा, राजस्थान

यादगार बनाएं !

'कान्ति' का जून 2011 अंक पढ़ा, बहुत अच्छा लगा । रचनाएं नवीनता एवं श्रेष्ठा लिए हुए है । 'कान्ति' मासिक 21वें वर्ष में प्रवेश करने जा रही है, बहुत-बहुत मुबारकबाद ।

यादगार बनाएं
21वें वर्ष के प्रथम अंक को,
यही है
कामना हमारी !
सदा उन्नति करे
'कान्ति' हमारी !
पहुंचे शिखर पर
चमके आफ़ताब जैसी !

सुरेन्द्र शर्मा 'गौतम'

राजापार्क, जयपुर

POSTAL LIBRARY

जीवन ज्योति केन्द्र

पोस्टल लाइब्रेरी

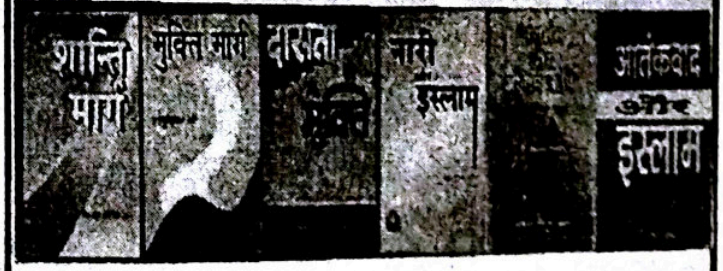

Bainy Singh Ki Talaiya
Gohalpur, Jabalpur-482002
Mob. : 9300929747, 9300101373

हृदय परिवर्तन

'कान्ति' का नवीन अंक जून 2011 ई॰ प्राप्त हुआ । शुरू से आख़िर तक पढ़ डाला । अंक बहुत ही अच्छा है । सभी रचनाएं एक से बढ़कर एक हैं । कविताएं ''दलित जहान'', ''तिमिर शेष न रहे'', ''रोशनी कहती कि खिड़की खोलिए'' और फ़ारूक़ 'फ़राज़' की ग़ज़ल बहुत अच्छी लगी । लघुकथा 'उपयोगिता' और कहानी हृदय परिवर्तन ने बहुत प्रभावित किया । ऐसी शिक्षाप्रद कहानियों को अवश्य स्थान दिया करें । एक नन्हे बच्चे ने एक चोर का हृदय परिवर्तन कर दिया–पढ़कर बहुत अच्छा लगा । सभी लेखकों को धन्यवाद !

यशपाल जैन 'आदर्श'
राजापार्क, जयपुर

अमर आत्मा

'कान्ति' का जून का अंक मिला, धन्यवाद !

संपादकीय लेख, 'कब सुधरेंगी उ॰प्र॰ और दिल्ली की छवियां' पढ़ा । बेशक इन दोनों राज्यों में मानवाधिकार हनन की सबसे ज़्यादा घटनाएं होती हैं तथा उ॰प्र॰ में सर्वाधिक शिकायतें पुलिस के ख़िलाफ़ पायी गयीं ।

इसके अतिरिक्त आलेख 'क़ियामत या महाप्रलय' भी पढ़ा । इसमें क़ुरआन की आयतों से सिद्ध किया गया है कि मरने के बाद भी आत्मा रहती है । शरीर नश्वर है, जबकि आत्मा अमर । गणितज्ञ श्रीनिवास रामानुजन के संबंध में उपयोगी जानकारी प्राप्त हुई । हफ़ीज़ मेरठी की ग़ज़ल दिल को छू गयी । कुल मिलाकर पूरा अंक ही शानदार रहा ।

अबरार अहमद
कोटा जंक्शन, कोटा, राजस्थान

अन्तर्राष्ट्रीय क़ानूनों का उल्लंघन

ऐसे संकेत हैं कि प्रत्येक नागरिक पर बढ़ते ऋण बोझ के साथ अमेरिका जलवायु परिवर्तनों तथा बेरोज़गारी, अराजकता के काल से ग्रस्त हो रहा है, विश्व में गिरती छवी को सुधारने तथा राजनैतिक लाभ पाने में आतंक के नाम पर ओसामा बिन लादेन की मृत्यु का पुष्टिकरण आश्चर्यजनक घटना है । क्या इस एक घटना से वास्तव में आतंक का सफ़ाया हो जाएगा ? विदित हो कि विगत पांच वर्षों से पाकिस्तान में ओसामा के रहने की जानकारी होने के बाद भी संयुक्त राष्ट्र द्वारा प्रस्ताव पारित करवा कर अन्य देशों की तरह पाकिस्तान पर प्रतिबंधात्मक कार्रवाइयां क्यों नहीं की गयीं । ऐसे हमले भी अन्तर्राष्ट्रीय क़ानूनों का उल्लंघन हैं, जबकि स्वयं अमेरिका तथा उसके सहयोगी देशों ने ओसामा को तलाशने से मारे जाने तक 9 वर्षों में लगभग 12 लाख निर्दोषों की हत्याएं की हैं । लोगों के परिवार, घरों, रोज़गार को नष्ट किया है तथा वहां जघन्यतम अमानवीय अनैतिक कृत्य भी किये हैं । एक पक्षीय कार्रवाइयों में निर्दोषों को भी हिरासत में लिया गया, जिनकी कोई सुनवाई नहीं, विपरीत इसके उन पर कुकृत्य, अमानवीय अत्याचारों का क्रम आज भी जारी है ।

किसी भी देश में आतंक के नाम पर ओसामा को मारने का अधिकार यदि अमेरिका अपने पास रखता है तब ऐसा संदेह और संभावनाएं वहीं बढ़ सकती हैं जिनमें 12

एहतिशाम ख़ान मोबाइल : 09425842976

पब्लिक ट्रैवेल्स

सिवनी से मंडला	प्रातः 7:20
सिवनी से छिंदवाड़ा	प्रातः 7:55
छिंदवाड़ा से बालाघाट	प्रात:10:30
मंडला से सिवनी	दिन 12:50
बालाघाट से सिवनी	सायं 6:00
सिवनी से नैनपुर	सायं 5:40
नैनपुर से सिवनी	दिन 12:20

प्रतिदिन

नोट : शादी व पार्टियों के लिए 33, 40 एवं 50 सीटर बस उपलब्ध है संपर्क करें–

एहतिशाम ख़ान, बस स्टैंड, सिवनी (मध्य प्रदेश)

लाख निर्दोषों की हत्याओं में बदले की कार्रवाइयां हों । ऐसी दशा में न्याय कर पाना असंभव होगा फिर दूसरी ओर क्या पूरा आतंक मिटाने में विश्व की संपूर्ण मानव जाति को मौत और हिरासत के दांव पर लगाया जाएगा ?

पश्चिम देशों की तर्ज़ पर अब हमारे देश में लगभग आठ ह्यूमेन मिल्क बैंक संचालित किये जा रहे हैं । इनमें मां का दूध उन नवजात शिशुओं के लिए संग्रहित किया जा रहा है जिन्हें अपनी मां का दूध किसी कारण नहीं मिल पाता । उल्लेखनीय है कि पश्चिम देशों ने भारत जैसे सुसंस्कृत देशों में महिलाओं को उस संस्कृति की ओर मोड़ा है जहां उनमें अश्लील पहनावे, अश्लील प्रवृत्तियों के साथ उनके चरित्र पर संदेह की धारणाएं बढ़ती जा रही हैं । दुष्परिणाम स्वरूप छेड़छाड़, बलात्कार, हत्याएं तथा अनैतिक संबंधों में प्रबल रूप से बढ़ोतरी हो रही है । तब ऐसी विषम परिस्थितियों में अपने बच्चों का पेट काट कर ह्यूमेन मिल्क बैंक में अन्य नवजातों के लिए दूध संग्रहित कराना कहां तक नैतिक दृष्टि से मान्य हो सकता है ।

यदि देश में ऐसा हो रहा है तो वह पूर्णत: अमानवीय, चरित्रहीन-अनैतिक, घृणित, निर्लज्जयुक्त घोर निंदनीय तथा धर्म विरोधी है । विशेषकर धर्मनिरपेक्ष भारत में देश उतना ही असंवैधानिक भी है जितना कि महिला का किसी पर-पुरुष के लिए उसके बच्चे हेतु अपनी कोख को किराये पर रखना । प्रत्येक माता अपने बच्चे को दो वर्ष तक दूध इसलिए पिलाती है कि उसके बच्चे का शरीर ही नहीं अपितु मां के समान बच्चे का चरित्र निर्माण हो सके । यह प्रक्रिया धार्मिक, आत्मीय तथा पारिवारिक संबंधों को दृढ़ करती है ।

धार्मिक मान्यताओं के अनुसार (1) बच्चे को किसी अन्य महिला ने दूध पिलाया तब उस महिला के बच्चे इस बच्चे के भाई-बहन बन जाते हैं (2) किसी ज़रूरतमंद बच्चे को उसी धर्म की उच्च चरित्रों वाली महिला की दूध पिलाने की पात्र होती है (3) इन बच्चों के भाई-बहन बन जाने के कारण उनमें विवाह करना अवैध हो जाता है ।

अतएव ह्यूमेन मिल्क बैंक से दूध पिलाने पर अनेकों समस्याएं खड़ी हो जाएंगी, जिनका समाधान असंभव लगता है । अत: केन्द्र एवं राज्य शासन को ऐसे घृणित कार्यों पर तुरंत ही प्रतिबंध लगाना चाहिए ।

मलिक
नागपुर

क़ुरआन ज्योति

(पृष्ठ 5 का शेष)

माल और औलाद, जिनकी मुहब्बत में गिरफ़्तार होकर तुम प्राय: सत्य से हट जाते हो, वास्तव में यह दुनिया की परीक्षा-स्थली में तुम्हारे लिए परीक्षा-सामग्री हैं । जिसे तुम बेटा या बेटी कहते हो, वास्तविकता की भाषा में वह परीक्षा का एक परचा है और जिसे तुम जायदाद या कारोबार कहते हो, वह भी वास्तव में एक दूसरी परीक्षा का परचा है । ये चीज़ें तुम्हारे सुपुर्द की ही इसलिए गयी हैं कि इनके द्वारा तुम्हें जांचकर देखा जाए कि तुम कहां तक मर्यादाओं और सीमाओं को ध्यान में रखते हो । कहां तक ज़िम्मेदारियों का बोझ लादे हुए भावनाओं के आकर्षण के बाद भी सीधे रास्ते पर चलते हो और कहां तक अपने मन को जो दुनिया की इन चीज़ों की मुहब्बत में गिरफ़्तार होता है, इस तरह वश में रखते हो कि पूरी तरह सत्य के दास भी बने रहो और उन चीज़ों के हक़ भी उस हद तक अदा करते रहो, जिस हद तक अल्लाह ने स्वयं उनका हक़ निश्चित किया है ।

24. कसौटी उस चीज़ को कहते हैं जो खरे और खोटे के अन्तर को स्पष्ट करती है । यही तात्पर्य 'फ़ुरक़ान' का भी है । इसलिए हमने 'फ़ुरक़ान' का अनुवाद इस शब्द (अर्थात कसौटी) से किया है । अल्लाह के कथन का मंशा यह है कि अगर तुम दुनिया में अल्लाह से डरते हुए काम करोगे और तुम्हारी हार्दिक इच्छा यह **हो कि तुम** कोई ऐसी हरकत न कर बैठो जो अल्लाह की प्रसन्नता के विरुद्ध हो, तो अल्लाह तुम्हारे भीतर वह परख-शक्ति पैदा कर देगा जिससे क़दम-क़दम पर तुम्हें स्वयं यह मालूम होता रहेगा कि कौन-सा रवैया सही है और कौन-सा ग़लत, किस रवैये में अल्लाह की प्रसन्नता है और किसमें उसका रोष । जीवन के हर मोड़, हर दोराहे, हर ऊंच-नीच में तुम्हारा भीतरी विवेक तुम्हें बताने लगेगा कि किधर क़दम उठाना चाहिए और किधर न उठाना चाहिए, कौन-सा रास्ता सत्य पर आधारित है और अल्लाह की ओर जाता है और कौन-सा रास्ता असत्य पर आधारित है और शैतान से मिलाता है ।

क़ादिरी दवाख़ाना की कामयाब यूनानी दवाएं

DIAL
033-2469-3173
033-2489-3539



किसी भी प्रकार के दर्द, चोट, मोच, गठिया, जलने, कटने और बच्चों की मालिश में बहुत ही लाभदायक।



जाफ़रानी तेल®

गैस्टिक के दर्द में?

क़ब्ज़ ट्रोज़न

अनपच, भूख की कमी, जिगर का दर्द, क़ब्ज़, सीने की जलन और पेटी की सभी बीमारियों में बहुत ही लाभदायक।

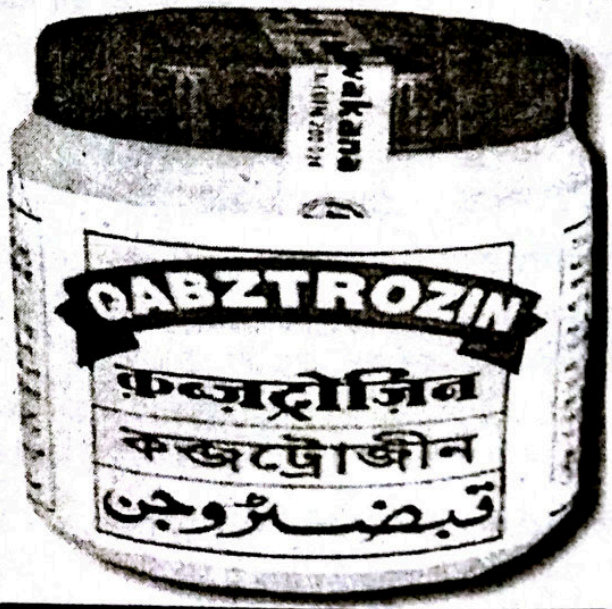

Qadri Dawakhana
B-18, NAWAB WAJID ALI SHAH ROAD, KOLKATA - 24,

DISTRIBUTORS:
DARYA BADI DAWAKHANA 393, E. R. Road, Pydhonie, Mumbai - 400 003 Ph: 022-2341-1957,
RELAX ENTERPRISES 3416, Bahishti Wada, No.1, Dhule, - 424 001 Ph: 02562-236952

इस्लाम : व्यावहारिक जीवन-व्यवस्था

❖ सैयद हामिद अली

संसार के विभिन्न धार्मिक ग्रंथों का अध्ययन कीजिये ब्रह्माण्ड की सृष्टि और उसकी व्यवस्था एवं प्रबंध से संबंधित सारे ग्रंथ सामान्यत: ज्ञान और बुद्धि में न समाने वाली, गंदी बहुदेववादी आस्थाओं एवं कथाओं से भरे मिलेंगे। कुरआन वास्तव में एक धार्मिक ग्रंथ होने के बावजूद ज्ञान और बुद्धि में न समाने वाली तथा गंदी कथाओं से न केवल यह कि ख़ाली है, बल्कि वह बहुदेववाद एवं बहुदेववादी काल्पनिक कथाओं पर कड़ी आलोचना करता है। कुरआन स्पष्ट करता है कि कायनात देवताओं की लीला और उनके युद्ध क्रीड़ा का स्थल नहीं, एक तत्वदर्शी, नीतिज्ञ एवं सर्वज्ञ खुदा की सृष्टि है जो कायनात का अकेला बनाने वाला, स्वामी, प्रभु परवरदिगार और शासक है। उसके ईश्वरवाद में कोई उसका साझीदार नहीं। वह तमाम दोषों एवं त्रुटियों तथा गंदी बातों से पाक है।

"अल्लाह पाक है उन (तमाम) बातों से जो ये (बहुदेववादी) बयान करते हैं।" (मोमिन : 99)

वह श्रेष्ठ गुणों वाला है।

"और अल्लाह ही के लिए हैं ऊंचे गुण और वह ज़बरदस्त एवं तत्वदर्शी है।" (सूरह नहल : 60)

सारे अच्छे गुण और अच्छी विशेषताएं उसी के लिए है।

कहो अल्लाह के सिवा कोई खुदा नहीं उसी के लिए हैं सारे अच्छे गुण।" (ताहा : 8)

बाइबल का पुराना नियम (Old Testament) धार्मिक ग्रंथों में इस दृष्टि से उच्च स्थान रखता है कि उस में तौहीद की स्पष्ट एवं प्रभावपूर्ण शिक्षा है। और वह बहुदेववादी काल्पनिक कथाओं से लगभग ख़ाली है। मगर उसकी प्रथम पुस्तक "उत्पत्ति" में कायनात और इन्सानों की सृष्टि की जो तफ़सील और हज़रत मूसा से पूर्व का जो इतिहास बयान हुआ है, ज्ञान एवं विज्ञान की प्रगतियों ने उसकी बहुत-सी बातों को ग़लत सिद्ध कर दिया है। "बाइबल कुरआन और साइंस" (The Bible, The Quran & Science) इस विषय पर एक शोध पुस्तक है, जो हाल ही में फ्रांसीसी भाषा में प्रकाशित हुई और अरबी तथा अंग्रेज़ी में इसका अनुवाद हुआ है। इसके लेखक (Maurice Bucaille) ने लगभग 93 पृष्ठों में पुराना नियम पर और लगभग 66 पृष्ठों में नये नियम (New Testament) पर बहस की है और यह सिद्ध किया है कि बाइबल के दोनों भाग ऐतिहासिक रूप से अप्रमाणित एवं असुरक्षित तथा ज्ञान एवं बुद्धि की दृष्टि से वैज्ञानिक वास्तविकताओं से टकराते हैं। पुस्तक की भूमिका में लेखक लिखते हैं–

"बाइबल की मूल प्रतियों और वैज्ञानिक आविष्कारों में टकराव ने इन्सानों के लिए सोच-विचार तथा चिंतन-मनन के लिए सामग्री उपलब्ध कर दी है। पहले यह बात मान ली गयी थी कि बाइबलों की मूल प्रति और विज्ञान के बीच परस्पर सहमति, पुष्टि एवं समर्थन पवित्र मूल प्रति के प्रमाणित होने के लिए एक अनिवार्य तत्व है। सेंट आगस्टाइन ने 82 नं० की पत्री में हम जिसे बाद में उद्धृत करेंगे, इस नियम को वैधानिक रूप से स्वीकार कर लिया है। किंतु ज्यों-ज्यों विज्ञान की प्रगति होती गयी त्यों-त्यों यह बात स्पष्ट होती गयी कि (बाइबल की) पुस्तक और विज्ञान के बीच, विरोध एवं मतभेद हैं। इसलिए तय किया गया कि इनमें तुलना न की जाएगी। इस प्रकार एक ऐसी परिस्थिति सामने आ गयी जिससे हमें मजबूरन यह स्वीकार करना पड़ रहा है कि बाइबल के टीकाकारों और वैज्ञानिकों को एक-दूसरे का विरोधी बना दिया है। हम किसी प्रकार यह स्वीकार नहीं कर सकते कि खुदा की प्रकाशना (वह्य) ऐसे बयान देगी, जो पूरी तरह से वास्तविकता के विरुद्ध हो। दोनों में तालमेल की एक ही सूरत है और वह यह कि, (बाइबल की) जो पंक्ति या जो वाक्य वैज्ञानिक दृष्टिकोण से अस्वीकार्य हों, उसे मूल वास्तविक एवं प्रमाणित न समझा जाए, किंतु इस हल को न अपनाया गया। इसके बजाय (बाइबल की) मूल प्रति की सत्यता को कड़ाई के साथ बाक़ी रखा गया और बाइबल की पुस्तकों की सत्यता एवं प्रमाणिकता के सिलसिले में विशेषज्ञ एक ऐसी पोज़ीशन अपनाने पर विवश हो गये जो वैज्ञानिकों के लिए मुश्किल ही से स्वीकार्य हो सकती है।"

भूमिका के बाद वे विस्तार से "पुराने नियम" के बयानों पर बहस करते हैं और बताते हैं कि किस प्रकार ये बयान, वैज्ञानिक तथ्यों से टकराते हैं। इसके बाद 'उपसंहार'

अनाथ लड़कियों की पुकार

VOICE OF ORPHAN GIRLS

मुस्लिम लड़कियों का यतीमख़ाना (गया)

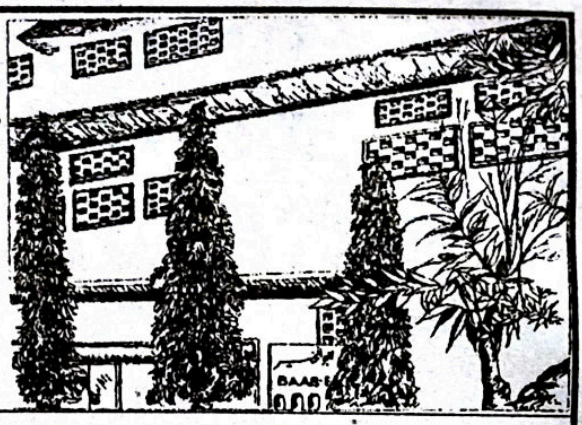

संक्षिप्त परिचय

लड़कियों के लिए आधुनिक और इस्लामी तालीम से लैस राष्ट्रीय स्तर का एक आदर्श रिहाइशी इदारा

● 24 वर्षीय सेवाएं ● 19 विभाग ● शिक्षा : प्राथमिक से मैट्रिक तक ● पत्राचार शिक्षा ● 6 छात्राओं ने हिफ़्ज़ के साथ मैट्रिक पास किया ● प्रौढ़ शिक्षा ● वोकेशनल सेन्टर ● कटिंग और सिलाई : 6 बैच 70 छात्राएं ● ज़री वर्क्स : 3 बैच 40 छात्राएं ● 1993 ई॰ से 2010 ई॰ तक 63 अनाथ बच्चियों और 37 मां-बाप वाली बच्चियों ने मैट्रिक पास किया ● वार्षिक ख़र्च : 13 लाख रुपये से अधिक ● आमदनी का स्रोत : मुस्लिम अवाम के चन्दे ● इदारा 120 अनाथ बच्चियों का सारा ख़र्च पूरा करता है ● किफ़ाला स्कीम के तहत एक यतीम बच्ची का वार्षिक ख़र्च 8000/- रुपये है—आप भी एक अनाथ बच्ची का ख़र्च उठा कर सवाब में शरीक हों ।

सहायता के विभिन्न रूप : ● ज़कात ● सदक़े ● अतिया ● पैदावार की ज़कात ● दीनी किताबें ● ज़मीन की ख़रीदारी और क़र्ज़ की अदायगी ● स्टाफ़ की मासिक आय के लिए 73000/- रुपये ● मां-बाप या रिश्तेदारों के नाम कमरा या हॉल बनवाना और निर्माण कार्यों के लिए ईंटें, सीमेंट, सरिया और अन्य सामग्री या उसका मूल्य देना ● यहां प्रतिवर्ष हिसाब चेक किये जाते हैं और ऑडिट होता है । ● इदारा में खुद आकर बराबरी का नमूना देखें कि अनाथ बच्चियां और वे बच्चियां जिनके मां-बाप हैं किस तरह मिलकर रहा करती हैं ।

यह इदारा आप से उदार सहायता की अपील करता है ।

विदेशी चन्दा देने वाले : भारत सरकार से "मुस्लिम लड़कियों का यतीमख़ाना (गया) को विदेशों से चन्दा लेने का इजाज़तनामा प्राप्त हो गया है ।

विदेशों में रहने वाले अब BANK A/c No. 300402010009042

BANK CODE NO. UBININBBJAM में अपनी रक़म भेज सकते हैं ।

चेक या ड्राफ्ट पर केवल यह लिखें—"THE GAYA MUSLIM GIRLS ORPHANAGE"

.....पता.....

GENERAL SECRETARY, THE GAYA MUSLIM GIRLS' ORPHANAGE

At : KOLOWNA, P.O.: CHERKI-824237, Distt.: GAYA (BIHAR) INDIA

☎ 0631-2734437 ● Mobile : 9934480190

E-mail : thegayamuslimgirlsorphanage@gmail.com, Website : www.gmgo.org

BANK A/C NO.: 7752 UNION BANK OF INDIA (MAIN BRANCH, GAYA)

CORE BANKING A/C NO.: 300402010007752

संस्थापक महासचिव

इक़बाल अहमद ख़ां

के शीर्षक के अंतर्गत ईसाइयों की वैटीकन काउंसिल के फ़ैसले का वर्णन करते हैं ।

''दूसरी वैटीकन काउंसिल (1962-1965 ई॰) ने इस अनीतिपूर्ण एवं अस्वीकार्य रवैये में (जिसका ज़िक्र ऊपर हुआ) बड़ी हद तक कमी की और पुराने नियम की किताबों के बारे में इस प्रकार के विचार व्यक्त किये कि वे ऐसे तत्वों पर आधारित हैं, जो दोषपूर्ण एवं पुराने हैं ।

कुरआन मजीद के बारे में लेखक महोदय भूमिका में लिखते हैं–

''मैंने ख़ालिस विनीत भाव से पहले से किसी बात को मन में बिना बिठाये कुरआनी वह्य को जांचा है । मैं देखना चाह रहा था कि कुरआनी तथ्यों और वर्तमान वैज्ञानिक ज्ञान एवं तथ्यों में किस हद तक तालमेल है । (कुरआन के) अनुवादों से यह बात मेरी जानकारी में आयी कि कुरआन ने तमाम तरह के प्राकृतिक प्रतीकों एवं सौन्दर्य की ओर बार-बार इशारे किये हैं । किंतु इस प्रकार मुझे संक्षिप्त ज्ञान ही प्राप्त हो सका । जब मैंने अरबी में कुरआन के तथ्यों को बहुत क़रीब से जांचा, तभी मेरे सामने इन प्राकृतिक प्रतीकों एवं सौन्दर्य की एक सूची आयी और मुझे इस बात के खुले साक्ष्य मिले कि कुरआन में एक बयान भी ऐसा नहीं है, जो वर्तमान वैज्ञानिक दृष्टि से आपत्तिजनक हो ।

जांच की यही विधि मैंने 'पुराने नियम' और नये नियम' से संबंधित भी उसी विनीतभाव को पूर्ण रूप से रखते हुए दोहरायी 'पुराने नियम'' के सिलसिले में इसकी पहली पुस्तक 'उत्पत्ति' से आगे न जा सका । मैंने उसमें ऐसे-ऐसे बयान पाये जो वर्तमान विज्ञान की ठोस वास्तविकताओं से किसी तरह मेल नहीं खाते थे ।''

उक्त किताब में कुरआन और आधुनिक विज्ञान (The Quran & Modern Science) के एक शीर्षक के अंतर्गत एक उपशीर्षक है ''परिचय'' (Introduction) लेखक महोदय उसमें कहते हैं ।

''विज्ञान से इस हद तक तालमेल ने, जो कुरआन में बहुत अधिक स्पष्ट है, पहले-पहल मुझे बहुत आश्चर्य में डाल दिया । मैं किसी भी तरह से यह संभव नहीं समझता था कि तेरह सौ वर्ष से अधिक मुद्दत पहले कोई व्यक्ति ऐसी किताब लिख सकता है, जिसमें बिल्कुल अलग-अलग चीज़ों से संबंधित इतने अधिक बयान हों और वे सब के सब वर्तमान वैज्ञानिक ज्ञान से बिल्कुल मेल खाते हों मैं शुरू में इस्लाम पर बिल्कुल विश्वास न रखता था मैंने कुरआनी भाषा को बिल्कुल खुले मन एवं विनीत भाव से जांचा । मुझ पर अगर किसी बात का असर था तो इस बात का जो मुझे नवजवानी में दिखायी गयी थी । (पश्चिम के) लोग मुसलमानों को 'मुसलमान' कहने के बजाय ''मुहम्मडन'' कहते हैं । इसका का स्पष्ट मतलब यह है कि इस्लाम एक धर्म है, जो एक मनुष्य (मुहम्मद) का बनाया हुआ है और ईश्वरीय होने की दृष्टि से इसका कोई मूल्य नहीं है ।''

'परिचय' को वे इन शब्दों पर समाप्त करते हैं–

''उपर्युक्त विवरण से यह बात स्पष्ट हो जाती है कि यह मनगढ़ंत बात, जो कुछ लोगों की ओर से फैलायी गयी है कि मुहम्मद कुरआन के लेखक हैं, एक दम अस्वीकार्य हैं । यह कैसे संभव है कि एक व्यक्ति जो अनपढ़ हो, अरबी साहित्य में गुणों एवं कला की दृष्टि से पूरे अरबी साहित्य में सबसे अधिक महत्वपूर्ण लेखक मान लिया जाए और वह ऐसे तथ्यों को बयान करे जिन तक उस समय के लोगों की पहुंच संभव न थी और यह सब इस तरह कि इस विषय पर उसके बयानों में छोटी-सी ग़लती भी न हो ।

इस विश्लेषण में शुद्ध वैज्ञानिक दृष्टिकोण से सिद्धांत अपनाये गये हैं । ये सिद्धांत हमें इस निष्कर्ष तक पहुंचाते हैं कि एक इन्सान के लिए, जो सातवीं सदी ई॰ में रहता था, इस बात की कल्पना भी नहीं की जा सकती है कि वह कुरआन में बिल्कुल भिन्न-भिन्न प्रकार की वस्तुओं के बारे में ऐसे बयान दे, जो उसके ज़माने के न हों और जो सदियों बाद होने वाले अनुसंधानों के अनुकूल हों । मेरी दृष्टि में इस बात का कोई औचित्य संभव नहीं है कि कुरआन मानव की रचना है ।''

'परिचय' के बाद वे यह सिद्ध करते हैं कि बाइबल के विपरीत कुरआन पूरी तरह प्रमाणित एवं सुरक्षित है । फिर वे एक सौ नौ पृष्ठों में प्राकृतिक प्रतीक एवं सौन्दर्य तथा मनुष्य पर बीती घटनाओं के बारे में कुरआन के बयान पर विस्तृत बहस करके स्पष्ट करते हैं कि कुरआन के बयान आज के ज्ञान एवं वैज्ञानिक तथ्यों के बिल्कुल अनुकूल हैं ।

किताब के आख़िर में वे अपनी बहस के इस निष्कर्ष की पुनरावृत्ति करते हैं कि चौदह सौ वर्ष पूर्व इन बयानों के होते हुए जो आज की वैज्ञानिक खोजों एवं अनुसंधानों के अनुकूल हैं, किसी भी तरह यह संभव नहीं है कि कुरआन को किसी मनुष्य का कलाम कहा जा सके ।

सच यह है कि ज्ञान और विज्ञान की प्रगति के फलस्वरूप न केवल यूनान के महान दार्शनिकों के बहुत से सिद्धांत एवं विचारधाराएं ग़लत सिद्ध हो गयीं, बल्कि हाल के महान वैज्ञानिकों के बहुतेरे सिद्धांत एवं विचार भी या तो संदिग्ध हो गये या रद्द कर दिये गये । परन्तु क़ुरआन का कोई एक बयान भी ग़लत सिद्ध न हो सका । जबकि उसकी सैकड़ों आयतों में कायनात और उसकी विभिन्न वस्तुओं की संरचना उनके विकास और उनके प्रबंध आदि का वर्णन है । यही नहीं क़ुरआन में बहुत से ऐसे बयान हैं, जिनका अनुमोदन विज्ञान के आधुनिकतम शोध एवं आविष्कार से होता है । (देखिये The Bible The Quran & Science)

ये हैं ज्ञान और चिंतन जगत की बातें । अब व्यावहारिक जगत में आइये । यह एक बिल्कुल स्पष्ट वास्तविकता है कि चौदह सौ साल पहले के मानव-जगत का हाल आज से बिल्कुल भिन्न था । विशेष रूप से अरब का, जो बहुत ही पिछड़ा देश था । वर्तमान औद्योगिक, आण्विक तथा अंतरिक्षीय युग ने आज के सभ्य जगत में जो अनन्त पेचीदा समस्याएं खड़ी कर दी हैं, उस दौर का कोई बड़े से बड़ा दार्शनिक और चिंतक उनकी कल्पना भी नहीं कर सकता था । जहां तक इन समस्याओं के समाधान का संबंध है, जो व्यक्ति इन समस्याओं को और उन परिस्थितियों को, जिनमें ये समस्याएं पैदा हुईं, जानता ही न हो, तो वह उन समस्याओं को किस प्रकार हल कर सकता है ।

किंतु हम बड़े ही आश्चर्य के साथ यह देखते हैं कि आज की जिन पेचीदा समस्याओं को हल करने में धर्मनिरपेक्ष लोकतंत्र और समाजवाद असफल हैं । वे इस्लामी शिक्षाओं से पूरी तरह हल होती नज़र आती हैं और कोई एक समस्या भी बाक़ी नहीं रहती, जो इस्लामी शिक्षाओं की रोशनी में हल न होती हो । आज यह बात दुनिया के ज्ञान और बुद्धि रखने वाले सभी मुसलमानों, क़ानूनविदों चिंतकों एवं विचारकों के यहां स्वयंसिद्ध सत्य की श्रेणी में आ गयी है कि इस्लाम एक ऐसी जीवन व्यवस्था है, जो आज की तमाम उलझी हुई गुत्थियों तथा हल न हो पा रही समस्याओं का उचित एवं वास्तविक हल है । (जीवन के विभिन्न क्षेत्रों, उनकी समस्याओं और उनके इस्लामी हल के सिलसिले में तमिल सहित भारत और विश्व की विभिन्न भाषाओं में इस्लामी विद्वानों एवं चिंतकों का विस्तृत एवं तार्किक साहित्य मौजूद है, जो इस सिलसिले में संतोषजनक सामग्री उपलब्ध कराता है । विशेष रूप से अरबी और उर्दू में इस विषय पर सैकड़ों किताबें मौजूद हैं) यही नहीं बहुत से ग़ैर मुस्लिम शोधकर्ता भी इस वास्तविकता को मानने और स्वीकारने लगे हैं और पूरे विश्व में इस्लामी जीवन-व्यवस्था इस दृष्टि से अध्ययन और बहस का विषय बनी हुई है ।

इस्लामी जीवन-व्यवस्था आज से चौदह सौ वर्ष पूर्व आज से बिल्कुल भिन्न परिस्थितियों में तैयार हुई । किंतु वह आज की जटिलतम समस्याओं एवं जीवन की बिल्कुल उलझी हुई गुत्थियों का हल है, यह इस बात का प्रमाण है कि इस्लाम मानव-बुद्धि की उपज नहीं, बल्कि उस सर्वज्ञ हस्ती का प्रदान किया हुआ है, जो क़ौमों और मिल्लतों के भूत, वर्तमान और भविष्य तथा भविष्य में सामने आने वाली सारी परिस्थितियों एवं समस्याओं से भली-भांति भिज्ञ है और उन्हें हल करने की पूरी क्षमता रखता है । आज के मुस्लिम देश यदि जटिल समस्याओं से जूझ रहे हैं, तो इसका ज़िम्मेदार इस्लाम नहीं, इस्लामी जीवन-व्यवस्था से उनकी दूरी है वरना जहां भी इस्लामी क़ानून थोड़े-बहुत भी लागू हैं, वहां परिस्थितियां वर्तमान विकसित देशों से बेहतर हैं । इस्लामी जीवन-व्यवस्था से मुस्लिम देशों की मौजूदा दूरी, उनके सत्ताधारी लोगों का पश्चिमी सभ्यता के प्रभाव एवं दबाव में आना तथा उनके रूस (जहां साम्यवाद दम तोड़ चुका है) या पश्चिमी देशों की दासता स्वीकार कर लेने का परिणाम है । अल्लाह का शुक्र है कि अब मुस्लिम समुदाय का सोचने-समझने वाला वर्ग बुद्धिजीवी, विद्वान, विचारक, कॉलेजों और यूनीवर्सिटियों के छात्र और शिक्षक इस्लामी जीवन-व्यवस्था के प्रचार-प्रसार करने और उसको मानव-जीवन में लागू करने के लिए पूरी दुनिया में प्रयासरत हैं ।

अब चौथी और आख़िरी बात को लीजिए, क्या इस्लाम लोकतंत्र और साम्यवाद की भांति मात्र सैद्धांतिक व्यवस्था है या वह व्यावहारिक रूप से स्थापित और लागू होकर मानव-जाति की सफलता एवं मुक्ति का साधन बन चुका है ? इस प्रश्न का उत्तर प्रमाणित इतिहास की रोशनी में इस्लाम के पक्ष में है । यह मानव इतिहास की एक सर्वमान्य एवं प्रमाणित वास्तविकता है कि हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) ने इस्लाम की दावत ही पेश नहीं की, बल्कि लाखों लोगों के जीवन को इस्लाम के सांचे में ढालकर पूरी तरह बदल दिया । फिर उन लोगों से आप ने ऐसे समाज की स्थापना की, जिसमें विभिन्न क़बीलों, वंशों और क़ौमों के लोग

बिना किसी भेदभाव के शरीक थे । यह इस्लामी जीवन व्यवस्था का एक आदर्श एवं अनुकरणीय समाज था। इतिहास में इससे बेहतर या उस जैसा समाज पाया नहीं जाता। फिर उस समाज को साथ लेकर आपने इस्लामी जीवन व्यवस्था को पूरे अरब में लागू एवं स्थापित कर दिया । आपके देहांत के बाद आपके सच्चे उत्तराधिकारियों एवं अनुयायियों, ख़लीफ़ा और सहाबा ने सीरिया, इराक़, ईरान, अफ़ग़ानिस्तान और मिस्र आदि देशों में इस व्यवस्था को प्रभावी बना दिया । इन देशों की पूरी की पूरी आबादियों ने इस्लाम को अपने इहलोक-परलोक की सफलता एवं मुक्ति का साधन समझा और छोटी-सी मुद्दत में वहां की आबादियां इस्लाम की छत्रछाया में आ गयीं और इस्लाम ने अरब और ग़ैर-अरब, काले और गोरे, अमीर और ग़रीब, ऊंचे और नीचे, औरत और मर्द, सब को न्याय, बहुमुखी विकास तथा मुक्ति एवं सफलता की ओर अग्रसर किया । इतिहास के ठोस प्रमाणों के प्रकाश में यह बात पूरे विश्वास के साथ कही जा सकती है कि हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) और उनके उत्तराधिकारी-ख़लीफ़ों का दौर पूरे मानव-इतिहास का 'स्वर्ण युग' था जिसमें आम इन्सान ज़ुल्म, ज़ोर-ज़बरदस्ती, शोषण, हत्या एवं विनाश से सुरक्षित थे । शांति और सुव्यवस्था का राज था, सब को जान, माल और आबरू की सुरक्षा प्राप्त थी, ग़रीबी दूर हो चुकी थी, कमज़ोर और दलित वर्ग को समाज में सम्मानजनक स्थान प्राप्त था । ऊंच-नीच का भेदभाव समाप्त हो चुका था। मनुष्यों की सारी समस्याएं हल हो चुकी थीं और वे बहुमुखी विकास की ओर अग्रसर थे । लोगों के आचार एवं चरित्र उच्च कोटि के थे, समाज भी अनुकरणीय एवं आदर्श था तथा शासक भी । इन्सानों पर इन्सानों का अत्याचारी, अन्यायपूर्ण एवं अज्ञानतापूर्ण क़ानून नहीं, बल्कि सर्वज्ञ ईश्वर का समानतापूर्ण एवं न्यायपूर्ण क़ानून उसके सच्चे बन्दों के हाथों लागू था । बाद के दौर में यद्यपि मुस्लिम-समाज इस्लामी आचार-व्यवहार की दृष्टि से पतनोन्मुख हो गया और सत्ता ऐसे लोगों के हाथों में आ गयी, जो इस्लाम के उच्च आदर्श से निम्न स्तर के थे । फिर भी इस्लामी क़ानून बड़ी हद तक लागू रहा और यह इसी का नतीजा था कि मुसलमान दुनिया पर छा गये और लंबी मुद्दत तक दुनिया के वैचारिक, राजनैतिक एवं नैतिक रहनुमा बने रहे ।

इस्लाम दुनिया की एकमात्र जीवन-व्यवस्था है, जो न केवल यह कि पूरी तरह व्यावहारिक सिद्ध हुई है, बल्कि उसने लागू और स्थापित होकर मानवजाति की समस्त समस्याओं का समाधान पेश किया और विभिन्न जातियों एवं देशों से संबंद्ध लोगों को एक उम्मत (समुदाय) बनाकर बहुमुखी विकास तथा लोक-परलोक की सफलता की ओर अग्रसर किया और हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) एकमात्र क्रांतिकारी रहनुमा हैं, जिन्होंने जीवन संबंधी सारी समस्याओं के समाधान में पूरी मानवजाति की रहनुमाई की । यह रहनुमाई एवं मार्गदर्शन व्यक्तिगत ज्ञान और विचार के आधार पर नहीं, बल्कि ईशप्रदत्त विशेष ज्ञान और अन्तर्दृष्टि के आधार पर था । आपने न केवल यह कि इस्लामी जीवन-व्यवस्था प्रस्तुत की, बल्कि उसके अनुसार एक आदर्श समाज का निर्माण किया तथा राजनैतिक एवं सामाजिक क्रांति का मार्ग प्रशस्त किया जिसके बाद यह जीवन-व्यवस्था समय की सर्वाधिक शक्तिशाली एवं सुव्यवस्थित शासन-प्रणाली बन गयी और इसने मानवजाति को सफलता एवं मुक्ति के दर्शन करा दिये ।

यह मानवजाति का सौभाग्य है कि न केवल इस्लामी जीवन-व्यवस्था क़ुरआन और हदीस में सुरक्षित है, बल्कि हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) की पूरी पवित्र जीवनी पूरे विस्तार के साथ इतिहास में मौजूद है । यह इस जीवन व्यवस्था की व्यावहारिक व्याख्या है । आपने जिस प्रकार के लोग तैयार किये और जिस प्रकार का समाज स्थापित किया, उसका विवरण भी इतिहास में सुरक्षित है । आपने इस्लामी समाज और इस्लामी राज्य की रूप-रेखा कैसे तैयार की और उसका विकास किस प्रकार किया तथा इस्लामी क्रांति किस प्रकार बरपा की और उनके बाद ख़लीफ़ों ने किस प्रकार इस्लाम की रोशनी में मानवजाति की समस्याएं हल कीं यह सब कुछ इतिहास में अनुपम उदाहरण के रूप में सुरक्षित है और इन विवरणों की रोशनी में मुस्लिम फ़ुक़हा (धर्मशास्त्रियों) एवं क़ानूनविदों ने जीवन के विभिन्न विभागों से संबंधित जो विस्तृत क़ानून बनाए, उनका विशाल भंडार भी मौजूद है । साथ ही वर्तमान दौर के मुस्लिम चिंतकों और इस्लामी तहरीकों (Islamic Movements) के नेताओं का तैयार किया हुआ विशाल साहित्य भी मौजूद है । जो यह बताता है कि वर्तमान दौर की जटिल समस्याएं इस्लाम की रोशनी में किस प्रकार हल हो सकती हैं और इस्लामी क्रांति आज के दौर में किस तरह लायी जा सकती है ।

हमारी हिन्दी पुस्तकें

• औरत और इस्लाम	मौलाना सय्यद जलालुद्दीन उमरी	24.00
• औरत और प्राकृतिक नियम	मौलाना सय्यद अबुल आला मौदूदी	18.00
• आख़िरत के अज़ाब से ख़ानदान को बचाईए	मौलाना सय्यद जलालुद्दीन उमरी	10.00
• आख़िरी नबी (सल्ल०)	हमूदा अब्दुल आती	5.00
• आदाबे ज़िन्दगी	मौलाना मुहम्मद यूसुफ़ इस्लाही	110.00
• आतंकवाद और इस्लाम	डॉ० अब्दुल मुग़नी	12.00
• आतंकवाद और आक्रमक नीति	प्रो० खुर्शीद अहमद	10.00
• आवागमनीय पुर्नजन्म	डॉ० मुहम्मद अहमद	40.00
• अनेकेश्वरवाद की वास्तविकता	मौलाना अमीन अहसन इस्लाही	60.00
• अहम हिदायतें	मौलाना सय्यद अबुल आला मौदूदी	15.00
• अच्छे लोग	इरफान ख़लीली	25.00
• अनूदित कुरआन मजीद	मौलाना सय्यद अबुल आला मौदूदी	400.00
• अन्देशों के गिरफ़्तार	माइल ख़ैराबादी	15.00
• अन्धा इन्साफ़ (बच्चों के लिए)	मतीन तारिक़ बाग़पती	05.00
• अनमोल नसीहतें	अब्दुल बदीअ सक़र	35.00
• अपनी इस्लाह आप	नईम सिद्दीक़ी	05.00
• अमानत का बोझ	माइल ख़ैराबादी	10.00
• अल-असमाउलहुस्ना (काव्य)	मुहम्मद फ़ारूक़ ख़ाँ	05.00
• अल्लाह का दीन नौजवानों से क्या चाहता है	मौलाना सय्यद जलालुद्दीन उमरी	05.00
• अल्लाह के रसूल का व्यावहार अपने शत्रुओं के साथ	मुहम्मद फ़ारूक़ ख़ाँ	08.00
• अल्लाह ही के हो कर रहो	खुर्रम मुराद	08.00
• इक़बाल की कविताएँ (बच्चों के लिए)	सनाउल्लाह सुमन	14.00
• ईदुल-फ़ित्र किसके लिए?	मौलाना सय्यद अबुल आला मौदूदी	04.00
• इंसान और उसकी समस्याएं	मौलाना सय्यद जलालुद्दीन उमरी	15.00
• इंसान अपने आप को पहचान	मौलाना वहीदुद्दीन ख़ां	06.00
• इंसान की आर्थिक समस्या और उसका इस्लामी हल	मौलाना सय्यद अबुल आला मौदूदी	08.00

MARKAZI MAKTABA ISLAMI PUBLISHERS

D-307, Dawat Nagar, Abul Fazl Enclave, Jamia Nagar, New Delhi-110025
Phone: 26971652, 26954341, 26946447(D) Fax: 26947858
E-mail: mmipublishers@gmail.com Website: www.mmipublishers.net

हज़रत अनीसा बिन्त अबी हारिसा (रज़ि॰)

❖ तालिब हाशमी

हज़रत अनीसा बिन्त अबी हारिसा (रज़ि॰) का ताल्लुक़ ख़ज़रज के ख़ानदान अदी बिन नज्जार से था । इस्लाम लाने से पहले यानी अज्ञानकाल में आपकी शादी नोमान औसी से हुई थी । जब नोमान औसी की मृत्यु हो गयी तो आपकी शादी मालिक बिन सनान खुदरी से हो गयी । उनकी यह शादी भी हिजरते नबवी (सल्ल॰) से पहले ही हो चुकी थी ।

बैअते उक़्बा के बाद मदीना मुनव्वरा के घर-घर में इस्लाम फैलने लगा तो मालिक बिन सनान (रज़ि॰) और हज़रत अनीसा (रज़ि॰)–दोनों पति-पत्नी इस्लाम के आग़ोश में आ गये । जलीलुलक़द्र सहाबी हज़रत अबू सईद खुदरी (रज़ि॰) हज़रत अनीसा (रज़ि॰) के ही बेटे थे ।

हज़रत अनीसा (रज़ि॰) के पति हज़रत मालिक बिन सनान (रज़ि॰) जंगे उहद में मर्दानावार लड़ते हुए शहीद हुए । चूंकि हज़रत मालिक (रज़ि॰) ने कोई जायदाद नहीं छोड़ी थी इसलिए हज़रत अनीसा (रज़ि॰) और उनके 12 वर्षीय बेटे हज़रत अबू सईद (रज़ि॰) बड़ी ही तंगदस्ती में दिन गुज़ारने लगे ।

हज़रत अनीसा (रज़ि॰) ने एक दिन अपने बेटे से कहा : ''बेटे ! अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) की सेवा में जाओ । आज उन्होंने अमुक व्यक्ति को कुछ (खाने-पीने को) दिया है । तुम को भी कुछ न कुछ अवश्य प्रदान करेंगे ।''

हज़रत अबू सईद खुदरी (रज़ि॰) ने अपनी मां से पूछा : ''घर में कुछ है ?''

मां ने इन्कार में सिर हिला दिया तो वे सीधे आप (सल्ल॰) की सेवा में उपस्थित हुए ।

जिस समय हज़रत अबू सईद खुदरी (रज़ि॰) वहां पहुंचे उस समय आप (सल्ल॰) खुत्बा दे रहे थे । खुत्बे के शब्द ये थे : ''जो व्यक्ति तंगदस्ती (दरिद्रता) में सब्र करे अल्लाह उसको ग़नी कर देगा ।''

आप (सल्ल॰) की यह बात सुनकर हज़रत अबू सईद (रज़ि॰) जो उस समय केवल 12 वर्ष के थे, ने दिल में कहा कि मेरे पास तो एक ऊंटनी (याक़ूता) मौजूद है इसलिए आप (सल्ल॰) के सामने हाथ फैलाकर आपको ज़हमत देने की क्या ज़रूरत है । यही सोचते हुए वह अपनी मां के पास ख़ाली हाथ लौट आये ।

मां-बेटे को अल्लाह तआला ने सब्र का यह फल दिया कि कुछ ही अरसे में उनकी तंगदस्ती खुशहाली में बदल गयी और धन-संपत्ति में वे तमाम अंसारियों से आगे बढ़ गये ।

मारूफ़
शू पैलेस
जी॰ई॰ रोड, बस स्टैंड, बी॰एम॰वाई॰
चरौदा, दुर्ग (छत्तीसगढ़)
फ़ोन : 0788-6534786

मक़सूद भाई मोबाइल : 9406090786
एस॰के॰ इंटरप्राइजेज़
होल सेल शू मर्चेन्ट
अलंकार कम्पलेक्स के निकट
कैम्प-2, भिलाई, (छत्तीसगढ़)
फ़ोन : 0788 6535786

2. हज़रत जलबीब (रज़ि॰) की पत्नी

हज़रत जलबीब (रज़ि॰) की पत्नी एक अंसारी ख़ातून थीं । आप (सल्ल॰) की इच्छा पर उन्होंने हज़रत जलबीब (रज़ि॰) से शादी की और आप (सल्ल॰) ने उनके लिए ख़ुशगवार वैवाहिक जीवन और ख़ुशहाल ज़िन्दगी की विशेष रूप से दुआ फ़रमायी ।

हज़रत जलबीब (रज़ि॰) अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) के एक जांनिसार सहाबी थे । लेकिन देखने में वह बहुत ही बदसूरत थे । चेहरा-मोहरा भी अच्छा न था और क़द भी बहुत छोटा था । इसलिए कोई भी व्यक्ति अपनी बेटी उस बदशक्ल और ठिगने शख़्स को देने के लिए तैयार न होता था ।

अंत में अल्लाह के रसूल हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) ने अपने इस जांनिसार सहाबा के लिए अंसार के एक परिवार में रिश्ता भेजा । लड़की के माता-पिता इसके लिए झिझक रहे थे । लेकिन उस सआदतमन्द बेटी ने जब उस रिश्ते के बारे में सुना तो अपने मां-बाप के सामने अल्लाह का यह आदेश पेश किया : "जब अल्लाह और उसका रसूल (सल्ल॰) किसी बात का फ़ैसला कर दें तो किसी मुसलमान को उसमें आपत्ति करने की गुंजाइश नहीं ।"

फिर कहा : "जो अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) की मर्ज़ी है वही मेरी भी है और मैं हज़रत जलबीब (रज़ि॰) से शादी करने के लिए सहर्ष तैयार हूं ।"

अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) को जब यह पता चला तो आप (सल्ल॰) बहुत प्रसन्न हुए और दुआ फ़रमायी :

"इलाही, इस लड़की पर ख़ैर का दरिया बहा दे । और उसकी ज़िन्दगी को तल्ख़ न कर ।"

इसके बाद आप (सल्ल॰) ने जलबीब (रज़ि॰) को संबोधित करते हुए कहा, "मैं अमुक लड़की से तुम्हारा निकाह करता हूं ।" उन्होंने अर्ज किया : "ऐ अल्लाह के रसूल (सल्ल॰)! आप हमें खोटा पाएंगे ।"

अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) ने कहा : "नहीं ! तुम ख़ुदा के नज़दीक खोटे नहीं हो ।"

फिर आप (सल्ल॰) ने हज़रत जलबीब (रज़ि॰) का निकाह उस नेकबख़्त लड़की से कर दिया । कहा जाता है कि आप (सल्ल॰) की दुआ का यह असर हुआ कि उनका पारिवारिक जीवन बहुत बाबरकत साबित हुआ । हज़रत जलबीब (रज़ि॰) बहुत ही आसूदाहाल हो गये और तमाम अंसारियों में उनकी नेक पत्नी से बढ़कर कोई औरत शाह ख़र्च न थी ।

3. हज़रत फ़कीहा अंसारिया (रज़ि॰)

हज़रत फ़कीहा अंसारिया (रज़ि॰) का ताल्लुक़ क़बीला ख़ज़रज के साअ्दा ख़ानदान से था । इनके पिता का नाम उबैद बिन वलीम था । उनकी शादी अपने चचाज़ाद भाई हज़रत साअ्द बिन उबादा (रज़ि॰) से हुई थी । हिजरते नबवी से पहले ही अपने पति के साथ इस्लाम क़ुबूल कर चुकी थी । हज़रत क़ैस बिन साअ्द (रज़ि॰) जिनकी सख़ावत मशहूर है, हज़रत फ़कीहा अंसारिया के ही बेटे थे ।

कहते हैं कि हज़रत फ़कीहा (रज़ि॰) ने ही अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) की इच्छा और अनुमति से अपने ग़ुलाम को आदेश दिया कि वह मस्जिदे नबवी के लिए मेम्बर तैयार करे । अतएव उनके ग़ुलाम ने ग़ाबा की झाड़ की लकड़ी से मिम्बर का निर्माण किया ।

Niyaz Ahmed
Tel. : 2292062 (S)
M. : 98261-29877
STAR
Hosiery Centre
Wholeseller
Readymade & Handloom
B/43 Uttar Gangotri, Supela, Bhilai, Durg (C.G.)

इस्लाम के बारे में ग़ैर-मुस्लिम विद्वानों के विचार

संकलन : **आमना उस्मानी**

इस्लाम ताक़त के बल पर और तलवार के ज़रिये फैला ? यह एक ऐसी अनुचित और निराधार बात है कि कोई भी न्यायप्रिय व्यक्ति इसे नहीं मान सकता । असंख्य न्यायप्रिय ग़ैर-मुस्लिमों ने इस बात को स्वीकारा है कि इस्लाम तलवार के बल पर नहीं, बल्कि अपनी सच्ची शिक्षा एवं प्राकृतिक आकर्षण के कारण फैला है ।

अतएव इस संबंध में डॉक्टर ताराचंद लिखते हैं :

''इस्लाम में निस्संदेह ऐसी विशेषताएं व गुण मौजूद हैं, जिनके कारण उसने बहुत थोड़े समय में ही अत्यधिक प्रगति की । सातवीं सदी में जब इस्लाम का झंडा बुलंद हुआ और अरब के समस्त क़बीले एक झंडे के नीचे जमा हो गये, तो वे तेज़ी के साथ चारों ओर फैलने लगे ।''

डॉक्टर ताराचन्द आगे लिखते हैं–

''कोलम में मीतकनो नाम के क़ब्रिस्तान में अली बिन उस्मान की क़ब्र पर 204 हिजरी (783 ई०) का पत्थर लगा है जिससे मालूम होता है कि आठवीं सदी में मालाबार के तट पर मुसलमान आबाद हो गये थे । मुसलमानों का प्रभाव बहुत जल्द बढ़ा । हिन्दू राजाओं ने उनकी बड़ी आवभगत की । उनको व्यापार की सुविधाएं उपलब्ध करायीं, उनको ज़मीनें ख़रीदने और मस्जिदें बनाने की अनुमति दी । मालाबार में आबाद होते ही उन्होंने अपने धर्म को फैलाने का प्रयास किया । मुसलमान पादरी व पुरोहित नहीं होते, लेकिन हर मुसलमान का कर्तव्य है कि वह अपने धर्म का प्रचार करे ।''

इस्लाम के प्रचार व प्रसार के बारे में डॉक्टर ताराचन्द लिखते हैं :

''इस प्रचार व प्रसार के काम में न केवल मर्द, बल्कि औरतों तक ने बहुत अधिक भाग लिया । यहां तक कि मुसलमान क़ैदी भी इस्लाम के प्रचार-प्रसार के लिए तैयार रहते थे । एक मुसलमान क़ैदी ने सबसे पहले यूरोप में इस्लाम फैलाया । शैख़ अहमद मुजद्दिद को सम्राट जहांगीर ने क़ैदख़ाने में डाल दिया, तो उन्होंने दो साल में सैकड़ों क़ैदियों को मुसलमान बना लिया । आठवीं सदी में तो इस्लाम को दिन दूनी और रात चौगुनी तरक़्क़ी हुई ।

डॉ० ताराचन्द ने इसके कई कारण लिखे हैं–

1. लोग उनको सम्मान की दृष्टि से देखते थे । उनकी दौलत व ताक़त का और चाल-चलन का असर लोगों पर पड़ा ।

2. मुसलमानों का धर्म सादा और अच्छा था । उनकी पूजा के तरीक़े दिलों में घर करने वाले और रात-दिन ख़ुदा की याद दिलाने वाले थे ।

3. रीनान एक फ़्रांसीसी विद्वान ने माना है कि जब मैं किसी मस्जिद में जाता हूं, तो मेरा दिल एक बड़े ही अनोखे आनन्द से भर जाता है और दिल में यह विचार पैदा होता है कि मैं मुसलमान क्यों न हुआ । जब रीनान जैसे कट्टर और नास्तिक वैज्ञानिक के दिल पर इस्लामी इबादत का ऐसा असर (प्रभाव) होता था, तो भला दूसरों के बारे में क्या कहना ।

4. एक और बात जो भूलनी नहीं चाहिए, वह यह कि पहली सदी में इस्लाम एक बड़ा व्यावहारिक धर्म था । इस्लाम के मानने वाले अपने अक़ीदों को केवल ज़ुबान से नहीं दोहराते थे, बल्कि अपने जीवन व चाल-चलन में भी उसके पाबन्द होते थे ।

5. उनका नमाज़ पढ़ने का समय, पंक्तियों का क्रम, रोज़ों की मेहनत, दान और ज़कात का तरीक़ा, समाज में समानता व उदारता का व्यवहार ऐसी चीज़ें थी, जो आदमी के दिल पर प्रभाव डाले बिना नहीं रह सकती थीं ।

श्री स्टेन्ले लीन पोल अपनी प्रख्यात पुस्तक ''मोरेस इन स्पेन'' में लिखते हैं–''स्पेनवासियों को धार्मिक स्वतंत्रता के संबंध में कोई शिकायत न थी । वे इस नयी हुकूमत से ख़ुश थे और खुलकर इसको स्वीकार करते थे कि अरबों की हुकूमत हमारे निकट फिरंगियों या गोथ की हुकूमत से अधिक पसन्दीदा है और इसका प्रमाण कि ईसाई अपने नये शासकों से ख़ुश थे, यह है कि आठवीं सदी में एक भी विद्रोह की घटना नहीं हुई ।

गुलामों के साथ गोथ और रूमी शासकों ने बड़ा ही निर्मम व अत्याचारी व्यवहार किया था । वे इस नयी हुकूमत में अपने को बधाई देते हैं । श्री लीन पोल आगे लिखते हैं कि–''मुसलमानों के निकट सवाब (पुण्य) के कामों में

गुलाम आज़ाद करने से अधिक कोई चीज़ प्रिय नहीं है, अत: कोई आश्चर्य की बात नहीं है कि हम स्पेन में गुलामों को तेज़ी के साथ नया धर्म (इस्लाम) स्वीकार करते और उसके द्वारा आज़ाद होते देखते हैं, लेकिन केवल गुलामों ही ने इस धर्म को स्वीकार नहीं किया बल्कि बड़ी-बड़ी जायदादों व संपत्ति वाले तथा उच्च सम्मान प्राप्त लोग भी मुसलमान हो गये इसलिए कि इस्लाम जैसे ईश्वरीय धर्म की सादा शिक्षा एवं महानता को सच्चे दिल से उन्होंने पसन्द किया ।''

प्रोफ़ेसर गिब्बन लिखते हैं–

''इस्लामी इतिहास में कितनी ही बार ऐसे क्षण आये कि इस्लामी सभ्यता का बड़ी कठोरता के साथ मुक़ाबला किया गया, लेकिन इसके बावजूद वह पराजित न हो सकी । इसका बड़ा कारण यह है कि आध्यात्मवाद या आध्यात्म-वादियों (सूफ़ियों) की सोच व तरीक़ा अर्थात् प्रचार-प्रसार का तरीक़ा तुरन्त उसकी मदद को आ जाता और उसे इतनी शक्ति व बल प्रदान करता कि कोई शक्ति इसका मुक़ाबला नहीं कर सकती थी ।''

डॉक्टर राजेन्द्र प्रसाद लिखते हैं–

''यह बात पूरे विश्वास के साथ कही जा सकती है कि शुरू से इनकी (मुसलमानों की) ओर से यह प्रयत्न रहा कि हिन्दुओं के साथ न्याय पर आधारित व्यवहार किया जाए । प्रारंभिक काल की घटना है कि जब ब्राह्मनावाद पर मुहम्मद बिन क़ासिम ने विजय प्राप्त किया, तो लोगों ने धार्मिक स्वतंत्रता की प्रार्थना की ।

मुहम्मद बिन क़ासिम ने इराक़ के गवर्नर हज्जाज के पास पत्र भेजा जिसका जवाब यह आया कि चूंकि हिन्दुओं ने आज्ञापालन कर लिया और ख़लीफ़ा को कर देना स्वीकार कर लिया है, अत: अब उनसे किसी और चीज़ की मांग नहीं की जा सकती । अब वे हमारी सुरक्षा में हैं और हम उनकी जान व माल पर किसी प्रकार का आक्रमण नहीं कर सकते । उनको अपने देवी-देवताओं की पूजा करने की अनुमति दी जाती है । किसी व्यक्ति को अपने धर्म का अनुसरण करने से कदापि न रोका जाए, वे जिस प्रकार चाहें अपने घरों में रह सकते हैं ।''

महात्मा गांधी कहते हैं–

''पैग़म्बर हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) की पवित्र जीवनी के अध्ययन से मेरे इस विश्वास में और अधिक दृढ़ता व मज़बूती पैदा हो गयी कि इस्लाम ने तलवार के बल पर इस धरती पर अपना प्रभाव नहीं जमाया, बल्कि पैग़म्बरे इस्लाम का अत्यंत सादा जीवन, मानवता के प्रति उनकी सहानुभूति व दयाभाव और सम्मान, अपने साथियों और अनुयायियों के साथ गहरा रिश्ता, साहस, बहादुरी, निर्भय, ईश्वर पर पूर्ण विश्वास और अपने उद्देश्य व लक्ष्य की सत्यता पर पूर्ण भरोसा ही इस्लाम की सफलता के वास्तविक कारण थे ।''

हिन्दुस्तानी चर्च मुंबई के फ़ादर विलियम कहते हैं–

''इस्लाम शांति का धर्म है जो लोग यह कहते हैं कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने इसे तलवार के द्वारा फैलाया, तो यह एक मनगढ़ंत बात है ।''

तेज़ बहादुर सिन्हा, संपादक रूहेल खंड, बरेली लिखते हैं–''मुसलमान शासकों ने तलवार की ताक़त रखते हुए हिन्दुओं की हर धार्मिक चेतना यहां तक कि अंधविश्वासों तक का सम्मान किया ।''

सर थामस आर्नाल्ड लिखते हैं–

''विश्वव्यापी धर्मों में इस्लाम अकेला ऐसा धर्म है, जो वेतन पाने वाले प्रचारकों और धनी प्रचारक मिशनों के बजाए आम मुसलमानों के द्वारा ज़मीन के एक किनारे से दूसरे किनारे तक फैल गया ।

इस्लाम का प्रचार मुसलमान शासकों ने नहीं किया, बल्कि धार्मिक विद्वानों, बुज़ुर्गों, पर्यटकों और व्यापारियों ने अच्छा नमूना प्रस्तुत करके इस्लाम को फैलाया । मुसलमान व्यापारी बड़े ही सफल प्रचारक साबित हुए । बुज़ुर्गों (सूफ़ियों) का फिर भी एक मिशन था, वे तो थे ही इस्लाम के लिए परन्तु व्यापारियों का व्यापार के दौरान में हर प्रकार का चरित्र व व्यवहार रहता था कि इस्लाम आपसे आप लोगों के दिलों में उतर जाता था । इस्लामी सेना ने कभी किसी को इस्लाम स्वीकार करने पर मजबूर नहीं किया ।''

डॉक्टर एच०डी० सेन्टहीलर लिखते हैं–

''यह आरोप कि इस्लाम स्वीकार न करने की सज़ा तलवार थी उतना ही भोंडा आरोप इस्लाम विरोधियों ने अन्याय करते हुए इस्लाम पर लगाये । आरोप लगाने वाले या तो इस्लाम को जानते नहीं या जान-बूझकर सत्य को छुपाते हैं ।''

ठाकुर का कुआं

■ मुंशी प्रेमचन्द

(1)

जोखू ने लोटा मुंह से लगाया तो पानी में बहुत अधिक दुर्गंध आयी । गंगी से बोला, "यह कैसा पानी है ? मारे बास के पिया नहीं जाता । गला सूखा जा रहा है और तू सड़ा हुआ पानी पिलाये देती है ।"

गंगी प्रतिदिन शाम को पानी भर लिया करती थी । कुआं दूर था, बार-बार जाना कठिन था । कल वह पानी लायी तो उसमें गंध नहीं थी आज दुर्गंध कैसी ? लोटा नाक से लगाया तो सचमुच दुर्गंध थी । अवश्य ही कोई जानवर कुएं में गिरकर मर गया होगा, मगर दूसरा पानी आवे कहां है ?

ठाकुर के कुएं पर कौन चढ़ने देगा, दूर से लोग डांट बताएंगे । साहू का कुआं गांव के उस छोड़ पर है, लेकिन वहां भी कौन पानी भरने देगा, कोई कुआं गांव में है नहीं ।

जोखू कई दिन से बीमार है, कुछ देर प्यास रोके चुप पड़ा रहा फिर बोला, "अब तो मारे प्यास के रहा नहीं जाता, थोड़ा पानी नाक बन्द करके पी लूं ।"

गंगी ने पानी न दिया, गंदा पानी पीने से रोग बढ़ जाएगा, इतना जानती थी । लेकिन यह न जानती थी कि पानी को उबाल लेने से उसकी ख़राबी ख़त्म हो जाती है। बोली, "यह पानी कैसे पियोगे ? न जाने कौन जानवर मरा है, मैं कुएं से दूसरा पानी ला देती हूं ।"

जोखू ने आश्चर्य से उसकी ओर देखा और बोला "दूसरा पानी कहां से लाएगी ?"

"ठाकुर और साहू के दो कुएं तो हैं, क्या एक लोटा पानी न भरने देंगे ?"

"हाथ-पांव तुड़वा आएगी और कुछ न होगा, बैठ चुपके से देवता आशीर्वाद देंगे, ठाकुर लाठी मारेंगे, साहू एक के पांच लेंगे । ग़रीबों का दुख कौन समझता है, हम तो मर भी जाते हैं तो कोई द्वार पर झांकने नहीं आता, कंधा देना तो बड़ी बात है । ऐसे लोग कुएं से पानी भरने देंगे ।"

इन शब्दों में कड़वा सच था । गंगी क्या जवाब देती, लेकिन उसने वह दुर्गंध वाला पानी जोखू को पीने के लिए न दिया ।

(2)

रात के नौ बजे थे । थके-मांदे मज़दूर तो सो चुके थे । ठाकुर के दरवाज़े पर दस-पांच मनचले इकट्ठा थे । मैदानी बहादुरी का न तो अब समय रहा न अवसर, क़ानूनी बहादुरी की बातें हो रही थीं ।

कितनी होशियारी से ठाकुर ने थानेदार को एक विशेष मुक़दमे में रिश्वत दे दी और साफ़ निकल गये । कितनी चतुराई से एक महत्वपूर्ण मुक़दमे की नक़ल ले आए । नाज़िर और पर्यवेक्षक सभी कहते थे कि नक़ल नहीं मिल सकती । कोई पचास मांगता, कोई सौ, यहां बिना पैसे कौड़ी नक़ल उड़ा दी, काम करने का ढंग चाहिए ।"

इसी समय गंगी कुएं से पानी भरने पहुंची ।

कुप्पी का धुंधला प्रकाश कुएं पर आ रहा था । गंगी जगत की आड़ में बैठी अवसर की प्रतीक्षा करने लगी । इस कुएं का पानी सारा गांव पीता है, किसी के लिए रोक नहीं । केवल ये बदनसीब नहीं भर सकते ।

गंगी का विद्रोही मन सामाजिक प्रतिबंधों और मजबूरियों पर चोटें करने लगा । "हम क्यों नीच हैं और ये लोग क्यों ऊंचे हैं ? इसलिए कि ये लोग गले में धागा डाल लेते हैं ? यहां तो जितने हैं एक से एक छटे हुए हैं । चोरी ये करें, धोखाधड़ी ये करें, झूठे मुक़दमे ये बनाएं । अभी उस दिन इसी ठाकुर ने बेचारे चरवाहे की एक भेड़ ली और बाद में मार कर खा गया । इन्हीं पंडित के घर में बारहों महीने जुआ होता है । यही साहू जी घी में तेल मिलाकर बेचते हैं । काम करा लेते हैं मजूरी देते नानी मरती है । किस बात में हैं, हम से ऊंचे ? हां अपने मुंह से हम से ऊंचे हैं । हम गली-गली चिल्लाए नहीं कि हम ऊंचे हैं । कभी गांव में आ जाती हूं तो तरस भरी आंखों से देखने लगते हैं, जैसे सबकी छाती पर सांप लोटने लगता है, इस पर घमंड यह कि हम ऊंचे हैं कुएं पर किसी के आने की आहट हुई । गंगी का दिल धक-धक करने लगा । कहीं देख लिया तो ग़ज़ब हो

INFORMATION BROCHURE



- Almanar Social Service a registered society. Bridging the gap between giving and receiving ends.



- Working in the field of education, health and employment generation.
- A unique charitable institution in Jharkhand.



- Projects in progress : Model primary school, Health

المنار سوشل سروس

Almanar Social Service

(An NGO registered societies Act XXI of 1860

President
Abul Arif
(M.Sc.)

Office : Jharna Road, Near Eidgaah Azadnagar,
Jamshedpur-832110
Tel. : +91-657-6542806, +91-9279149654

Secretary
Haider Imam
(B.com. PG Dip)

Our Bank A/c No. 29601010007675
CANARA BANK
Kabir Memorial School, Zakir Nagar, Mango, Jamshedpur (Jharkhand)

जाएगा । उसने घड़ा और रस्सी उठा ली और झुककर चलती हुई एक घने वृक्ष के अंधेरे साये में जाकर खड़ी हो गयी । उन लोगों को कब दया आती है किसी पर । बेचारे महंगू को इतना मारा कि महीनों ख़ून थूकता रहा इसीलिए कि उसने बेगार न दी थी, इस पर ये लोग ऊंचे बनते हैं ?''

कुएं पर दो महिलाएं पानी भरने आयी थीं, उनमें बातचीत हो रही थी । ''हम लोगों को आराम से बैठे देखकर इन पुरुषों को जलन होती है ।''

खाना खाने बैठे और आदेश हुआ कि ताज़ा पानी भर लाओ । घड़े के लिए पैसे नहीं हैं ।''

हां, यह तो न हुआ कि कलश उठाकर भर लाते, बस आदेश दे दिया कि ताज़ा पानी भर लाओ, जैसे हम दासियां ही तो हैं ।''

दासियां नहीं तो और क्या हो तुम लोग, रोटी कपड़ा नहीं मिलता, दस पांच रुपये भी छीन झपट कर ले लेती हो, दासियां और कैसी होती हैं ।'' ''जी मत जलाओ दीदी, पल भर आराम करने को मन तरस कर रह जाता है, इतना काम किसी दूसरे के घर कर देती तो इससे कहीं अधिक आराम से रहती और वह उपकार मानता सो अलग । यहां काम करते-करते मर जाओ मगर किसी का मुंह ही सीधा नहीं होता ।''

दोनों महिलाएं पानी भरकर चली गयीं तो गंगी वृक्ष की छांव से निकली और कुएं की ज़गत के पास आयी । मनचले जा चुके थे और ठाकुर भी दरवाज़ा बन्द करके अन्दर आंगन में सोने जा रहे थे । गंगी ने चैन की सांस ली, किसी तरह मैदान तो साफ़ हुआ । अमृत चुरा कर लाने के लिए जो राज कुमार किसी युग में गया था वह भी संभवत: इतनी सतर्कता से और इतना झिझक कर न गया होगा ।

गंगी दबे पांव कुएं की जगत पर चढ़ी, विजय का ऐसा अनुभव उसे पहले कभी नहीं हुआ था ।

उसने रस्सी का फंदा घड़े में डाला, दाहिने, बाएं चौकन्नी दृष्टि से देखा जैसे कोई सैनिक शत्रुओं के क़िले में सेंध लगा रहा हो । अगर इस समय वह पकड़ी जाए तो फिर इसके लिए क्षमा की रत्ती भर आशा न थी । अंत में देवताओं को याद करके उसने कलेजा मज़बूत किया और घड़ा कुएं में डाल दिया । घड़े ने कुएं में डुबकी लगायी, बहुत ही धीरे, तनिक भी आवाज़ न हुई । गंगी ने दो-चार हाथ जल्दी-जल्दी मारे । घड़ा कुएं के मुंह तक आ गया । कोई बड़ा पहलवान भी इतनी तेज़ी से घड़ा नहीं खींच सकता था ।

गंगी झुकी ताकि घड़ा पकड़कर जगत पर रख ले कि अचानक ठाकुर का दरवाज़ा खुल गया । शेर के जबड़े भी इतने भयानक नहीं होंगे । जितना भयानक उस खुले दरवाज़े का दृश्य था । गंगी के हाथ से रस्सी छूट गयी । रस्सी के साथ घड़ा धड़ाम से पानी में गिरा और कई क्षणों तक पानी में हिलकोरों की आवाज़ सुनायी देती रही ।

ठाकुर कौन है, कौन है पुकारते हुए कुएं की ओर दौड़े जा रहे थे और गंगी जगत से कूदकर भागी जा रही थी ।

घर पहुंचकर गंगी ने देखा कि जोखू लोटा मुंह से लगाए वही मैला, गंदा, दुर्गंध वाला पानी पी रहा है ।

प्रो॰ मुहम्मद क़मरुज़्ज़मा

9826809922
9826689853

पापुलर ट्रेवल्स

लग्जरी बस सेवा 2/2 (स्लीपर) के लिए सम्पर्क करें ।

अम्बिकापुर से बिलासपुर	रात्रि	23:20
अम्बिकापुर से रायपुर	प्रात:	03:00
अम्बिकापुर से डाल्टेनगंज	रात्रि	21:30
अम्बिकापुर से डाल्टेनगंज	रात्रि	22:25
अम्बिकापुर से डाल्टेनगंज	रात्रि	22:30
मुननगढ़ से डाल्टेनगंज	रात्रि	19:10
अम्बिकापुर से मननगढ़	संध्या	05:00
अम्बिकापुर से चीरमीरी	प्रात:	06:30
अम्बिकापुर से मननगढ़	संध्या	16:10
रायगढ़ से डाल्टेनगंज	रात्रि	21:40

राम मंदिर के पास, अम्बिकापुर, सरगुजा (छत्तीसगढ़)

रमज़ान के रोज़ों के वास्तविक लाभ

■ मौलाना अमीन अहसन इस्लाही

वासना और मनेच्छाओं के प्रभाव से मनुष्य के भीतर अल्लाह से जो दूरी और उसकी निर्धारित सीमाओं के प्रति जो असावधानी पैदा होती है, उसके सुधार के लिए अल्लाह तआला ने रोज़े की इबादत का प्रावधान किया है । इस इबादत का संकेत सभी प्राचीन धर्मों में मिलता है । विशेष रूप से आत्म शुद्धि के जितने भी तरीक़े ग़लत या सही दुनिया में अब तक अपनाये गये हैं, उन सब में इस इबादत को बड़ा महत्व प्राप्त रहा है । धर्मों के अध्ययन से यह बात भी मालूम होती है कि पिछले धर्मों में इस इबादत की शर्तें इस्लाम की तुलना में अधिक कठोर थीं । इस्लाम स्वाभाविक धर्म है, इसलिए इसने इसकी उन शर्तों को आसान कर दिया है, जो मनुष्य की आम शक्ति और सामर्थ्य से अधिक थीं ।

यह इबादत कठिन होने के कारण सभी इबादतों में सबसे प्रमुख है । इसका कारण यह है कि मनेच्छाओं पर नियंत्रण और आत्म-शुद्धि यह एक कठिन काम है । यह मनुष्य के अत्यंत उद्दंड और अनियंत्रित रुझानों को नियंत्रित करके मौलिक मानव-स्वभाव के अनुकूल बनाती ।

मनुष्य की इच्छाओं के जो पहलू सबसे अधिक ध्यातव्य हैं उनमें वासना, इच्छाएं और भावनाएं प्रमुख हैं । इनके स्वभाव में तेज़ी, उत्तेजना और जोश है, इसलिए इच्छा और इरादे को इन पर क़ाबू पाने के लिए बड़ा अभ्यास करना पड़ता है । यह अभ्यास इतना कठोर और हतोत्साहित कर देने वाला है कि प्राचीन धर्मों के अध्ययन से मालूम होता है कि आत्मा की शुद्धिकरण के बहुत से अभिलाषी इससे ही निराश हो गये कि इनको नियंत्रण में लाया जा सकता है । अत: उन्होंने इनको नियंत्रण में लाने और इनका प्रशिक्षण करने के बजाय इसे पूर्णत: समाप्त करने के उपाय सोचने और अपनाने लगे, लेकिन इस्लाम एक स्वाभाविक धर्म है और ये चीज़ें भी मानव-स्वभाव के अनिवार्य अवयवों में से हैं, जिनके बिना मनुष्य का व्यक्तित्व पूरा नहीं हो सकता ।

यही कारण है कि इस्लाम ने इन्हें समाप्त करने की अनुमति नहीं दी बल्कि इसे नियंत्रित करके सही मार्ग पर

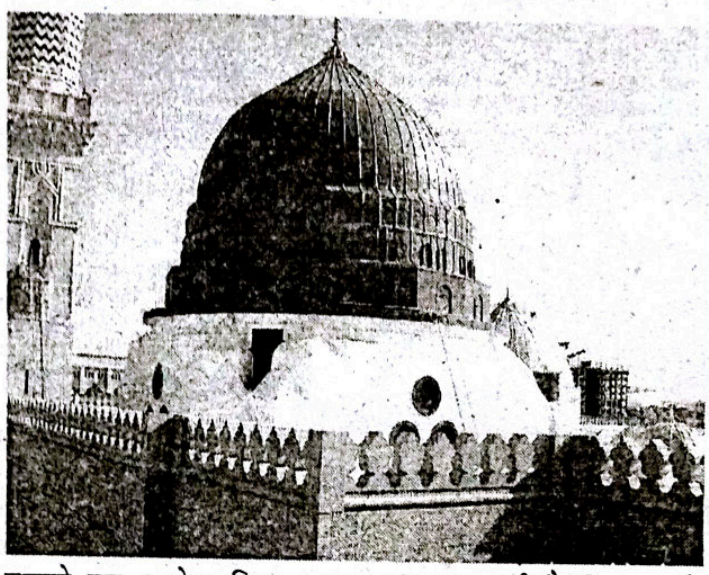

लगाने का आदेश दिया । यह एक सच्चाई है कि इनको नियंत्रण में करना इन्हें समाप्त करने की तुलना में बहुत कठिन है ।

एक बेक़ाबू घोड़े को ख़त्म करना हो तो बंदूक़ की एक गोली काफ़ी है, लेकिन उसको सधा कर सवारी के काम में लाना बड़े अभ्यास, बड़ी कठिनाइयों और बड़े ख़तरों का काम है । रोज़े की इबादत इस्लाम ने इसलिए नियत की है कि एक ओर तो यह मनेच्छाओं के उद्दंड रुझानों को संतुलित करता है और दूसरी ओर यह मनुष्य की संकल्प शक्ति को शक्तिशाली बनाता है ।

रोज़े की सबसे बड़ा लाभ यह है कि इससे मनुष्य की आत्मा को मनेच्छाओं के दबाव से बड़ी हद तक आज़ादी मिल जाती है । हमारी आत्मा का वास्तविक लगाव अल्लाह की ओर है, वह स्वाभाविक रूप से उसके समीप है । वह फ़रिश्तों से बराबरी और बुराइयों से दूरी चाहती है । हमारी आत्मा सांसारिक जीवन के बंधनों में बंधे रहने के बजाय उच्च लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए बढ़ना चाहती है । आत्मा की इन अपेक्षाओं और मनेच्छाओं की मांगें एक-दूसरे के विपरीत हैं । इन दोनों में संघर्ष चलता रहता है और इस संघर्ष में जीत अक्सर मनेच्छाओं की ही होती है । इसका कारण यह है कि मनेच्छाओं की मांगें पूरी करने में मनुष्य को तुरंत सुख और आनंद मिलता है । इसके विपरीत आत्मा की अपेक्षाओं को

रमज़ान के रोज़े और चरित्र-सुधार

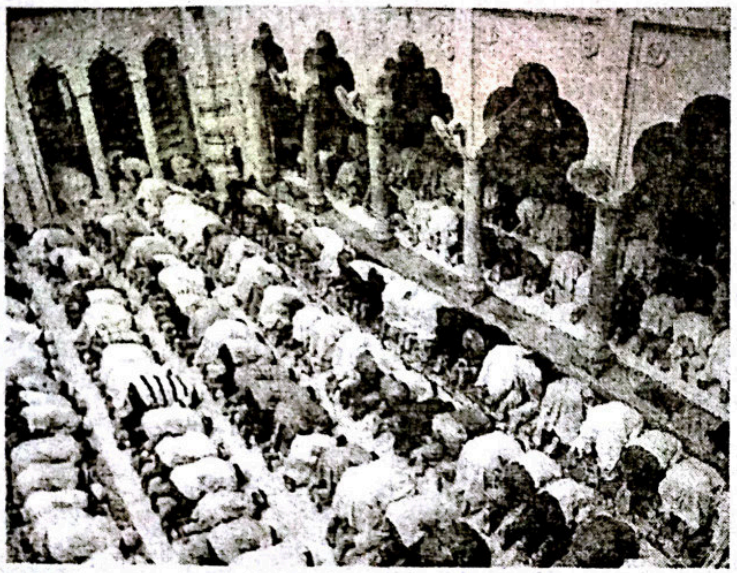

पूरा करने में मनुष्य को अपने सुख और आनंद का बलिदान करना होता है, इसलिए लोग सामान्य रूप से ऐसा करने से बचते हैं । अगर यही स्थिति लंबे समय तक बनी रहे और आत्मा की अपेक्षाओं को दबाया जाता रहे, तो धीरे-धीरे आत्मा की उड़ान समाप्त होने लगती है और फिर आत्मा भी समाप्त हो जाती है । रोज़ा इस स्थिति में समय-समय पर परिवर्तन करता रहता है । यह उन चीज़ों पर बहुत से प्रतिबंध लगा देता है, जो वासनाओं एवं मनेच्छाओं को बढ़ाती हैं । रोज़े में मनुष्य का खाना-पीना और सोना सब कम हो जाता है और दूसरी दिलचस्पियों पर भी कुछ प्रतिबंध लग जाते हैं । इनका प्रभाव यह होता है कि मनेच्छाओं का उभार बहुत कम हो जाता है और आत्मा को अपनी पसन्द की उड़ान के लिए मौक़ा मिल जाता है ।

रोज़े की यह विशेषता है कि अल्लाह तआला ने रोज़ा रखने वालों को ख़ास अपने हाथ से इनाम देने का वादा किया है । वैसे तो इस्लाम में जितनी इबादतें हैं सब अल्लाह ही के लिए हैं, लेकिन रोज़े में बन्दा दुनिया और दुनिया के सुखों को छोड़कर अल्लाह का अधिक प्रिय पात्र हो जाता है । अगर एक बन्दा रोज़े की सारी कठिनाइयां और सारे प्रतिबंध केवल इसलिए झेलता है कि उसकी आत्मा इस संसार के दलदल से आज़ाद होकर अल्लाह का सामीप्य प्राप्त कर सके तो निस्संदेह उसके प्रयास इसके पात्र हैं कि अल्लाह उसे अपने हाथों से इनाम दे । एक हदीस है–

"अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने फ़रमाया कि आदम के बेटे का हर अमल उसके लिए है, मगर रोज़ा मेरे लिए है और मैं ही इसका बदला दूंगा । रोज़ा एक ढाल है । जब किसी का रोज़ा हो तो उसे चाहिए कि न अश्लीलता की कोई बात करे और न हल्ला-हंगामा करे । अगर कोई व्यक्ति उससे गाली-गलौज करे या लड़ाई-झगड़ा करे तो उससे कह दे कि भाई ! मैं रोज़े से हूं । रोज़ादार के लिए दो ख़ुशियां हैं–एक उसे तब प्राप्त होती है, जब वह रोज़ा खोलता है और दूसरी उस समय प्राप्त होगी जब वह अपने पालनहार से मिलेगा ।"

एक दूसरी रिवायत में कुछ और बातें हैं, जिससे इस हदीस की वास्तविकता पर रोशनी पड़ती है–

"बन्दा अपना खाना-पीना और अपनी दूसरी इच्छाएं मेरे लिए छोड़ता है । रोज़ा मेरे लिए है और मैं ही इसका बदला दूंगा । नेकियों का बदला दस गुना है ('मुस्लिम' के शब्द हैं कि) नेकियां दस गुने से लेकर सात सौ गुना तक बढ़ायी जाएंगी मगर रोज़े के बारे में अल्लाह तआला फ़रमाता है कि यह मेरे लिए है और मैं ही इसका बदला दूंगा ।"

इसका दूसरा लाभ यह है कि मनुष्य के अन्दर बिगाड़ के जो बड़े-बड़े दरवाज़े हैं, रोज़ा उनको बड़ी हद तक बन्द कर देता है । एक से अधिक हदीसों में यह व्याख्या की गयी है कि ज़ुबान और गुप्तांग दो ऐसी चीज़ें हैं, जिनके कारण आदमी बिगाड़ में पड़ जाता है और न जाने कितने बिगाड़ में दूसरों को भी ले जाता है । यही रास्ते हैं, जिनसे शैतान इन्सान पर सबसे ज़्यादा हमला करता है । अगर कोई आदमी इनकी सुरक्षा कर सके तो समझिए कि उसने खुद को जहन्नम की यातना से बचा लिया ।

रोज़ा इनकी सुरक्षा का बेहतर से बेहतर इन्तिज़ाम करता है । रोज़े में मनुष्य के लिए केवल खाना-पीना ही हराम नहीं हो जाता, बल्कि लड़ना, झगड़ना, झूठ, परनिंदा और अनावश्यक बातों में भाग लेना जैसे ज़ुबान के गुनाह से भी वह बचने लगता है । इसी तरह रोज़े की अवधि में केवल यौनेच्छाओं

को ही पूरा करना हराम नहीं होता, बल्कि वे सभी चीज़ें भी रोज़े के उद्देश्य के विरुद्ध हैं जो कामेच्छा को भड़काने वाली हैं ।

रोज़े का तीसरा लाभ यह है कि व्यक्ति की इच्छाशक्ति का बेहतरीन प्रशिक्षण होता है । इस्लामी जीवन व्यवस्था (शरीअत) की सीमाओं का पालन करने के लिए सबसे अधिक आवश्यक चीज़ यह है कि मनुष्य की इच्छाशक्ति बहुत ही मज़बूत हो । कमज़ोर और लचीले इरादे का आदमी हर क़दम पर ठोकर खा सकता है । जब भी कोई चीज़ उसके ग़ुस्से को भड़काने वाली सामने आ जाएगी, वह भड़क उठेगा जब भी कोई लालच पैदा करने वाली चीज़ उसके सामने आएगी वह उसके पीछे लग जाएगा और जहां भी कोई चीज़ उसकी कामेच्छा को उकसाने वाली मिलेगी वह फिसल पड़ेगा । शरीअत की सीमाओं का पालन करने के लिए बहुत मज़बूत और दृढ़ संकल्प वाला व्यक्ति चाहिए ।

रोज़े से इसी दृढ़ता और अडिगता का पोषण होता है और फिर इसी से ईशपरायणता प्राप्त होती है, जो रोज़े का वास्तविक लक्ष्य है । यही शक्ति ईमान वाले के हाथ में वह हथियार है, जिससे वह शैतान का हर आक्रमण रोक सके ।

रोज़े से मनुष्य के भीतर बलिदान की भावना भी विकसित होती है । बलिदान मनुष्य की उन उच्च भावनाओं में से एक है, जिनसे भलाई के काम करने के लिए मनुष्य में सक्रियता उत्पन्न होती है । मनुष्य जब रोज़े में भूखा-प्यासा रहता है और अपनी दूसरी इच्छाओं को दबाने पर मजबूर होता है तो इस प्रकार उसे ग़रीबों और पीड़ितों के दुख-दर्द को समझने और उनका अनुभव करने का अवसर मिलता है । वह भूख और प्यास का मज़ा चखकर भूखों और प्यासों से बहुत निकट हो जाता है । उनकी आवश्यकताओं और कठिनाइयों को समझने लगता है । स्वाभाविक रूप से उसके भीतर यह भावना भी उत्पन्न हो जाती है कि उनके लिए कुछ कर सकता है तो करे । किसी व्यक्ति में यह भावना कम होती है, किसी में अधिक । जिनके अन्दर बलिदान की भावना कम होती है रोज़ा कुछ न कुछ उन्हें भी सक्रिय कर देता है और जिनके अन्दर यह भावना पहले से मौजूद होती है रोज़ा उनकी भावनाओं को विकसित करने के लिए मानो वसंत का मौसम होता है ।

रोज़े की हालत में मनुष्य का क़ुरआन मजीद से जुड़ाव बहुत बढ़ जाता है । इसका एक कारण तो यह है कि बहुत-सी सांसारिक व्यस्तताओं का बोझ रोज़ा रखने वालों पर से उतरा होता है और दूसरा कारण यह है कि रोज़े की हालत में मनुष्य की प्रकृति का रुझान भी बदल जाता है । ऐसे में स्वाभाविक रूप से वह क़ुरआन पढ़ने और उस पर सोच-विचार करने के लिए आकर्षित होता है । संभवत: यही कारण है कि अल्लाह ने क़ुरआन के अवतरण के लिए रमज़ान के महीने को चुना ।

कुछ हदीसों में आया है कि रमज़ान के महीने में हज़रत जिबरील (अलैहि०) हर रात क़ुरआन पढ़ने-पढ़ाने के लिए अल्लाह के रसूल (सल्ल०) के पास आया करते थे । रमज़ान की रातों में क़ुरआन मजीद सुनने और सुनाने का जो महत्व है वह प्रत्येक व्यक्ति को ज्ञात है । ये सारी बातें गवाही देती हैं कि क़ुरआन मजीद का रोज़ों से और रोज़ों का क़ुरआन मजीद से गहरा लगाव है ।

रोज़े का वास्तविक लक्ष्य मन, मस्तिष्क, शरीर और आत्मा सबका अल्लाह तआला की ओर एकाग्र हो जाना है । पवित्र क़ुरआन में वर्णित अल्लाह के अनुपालन और

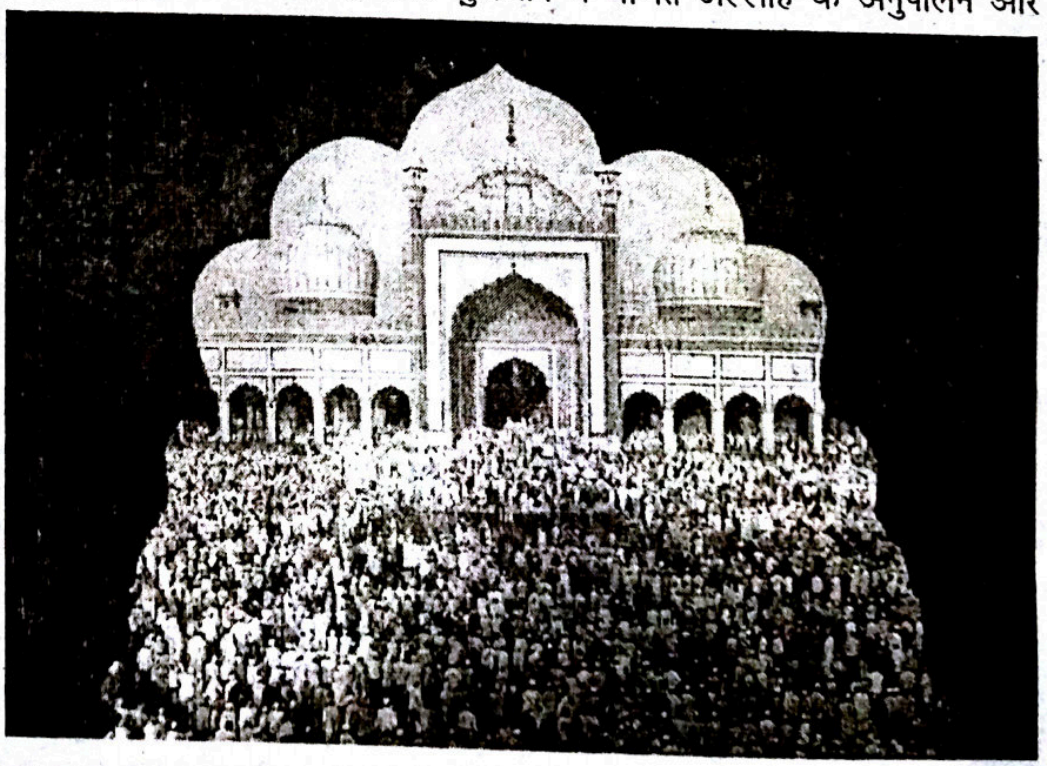

उसकी शिक्षाओं एवं उसके दिखाये सन्मार्ग का अनुगामी बनने की यह प्रवृत्ति लोगों को रोज़े से प्राप्त होती है और इसी को प्राप्त करने के लिए रोज़े के साथ एतिकाफ़ को भी शामिल कर दिया गया है । एतिकाफ़, अर्थात रमज़ान के अंतिम दस दिनों में मस्जिद के एक कोने में एकांतवास करना और स्वयं को पूर्णतः अल्लाह की इबादत के लिए समर्पित कर देना । यह प्रत्येक व्यक्ति के लिए रमज़ान के रोज़ों की तरह ज़रूरी नहीं है, बल्कि यह ऐच्छिक है, लेकिन आत्मा की शुद्धि के दृष्टिकोण से इसका बहुत महत्व है । अगर रमज़ान के महीने के अन्तिम दस दिनों में व्यक्ति ऐतिकाफ़ में बैठ जाए तो इससे रोज़े का वास्तविक लक्ष्य प्राप्त करने की संभावना बहुत बढ़ जाती है ।

रोज़े के लाभों में से ये कुछ लाभ हैं, जो यहां बयान किये गये हैं लेकिन ये लाभ उसी स्थिति में सामने आते हैं, जब व्यक्ति अपने रोज़ों को उन सभी बुराइयों से सुरक्षित रख सके, जो रोज़े को ख़राब कर देने वाली हैं ।

रोज़े की इबादत इसलिए नियत की गयी कि व्यक्ति अपनी इच्छाओं को नियंत्रित कर सके । यह लक्ष्य उसी स्थिति में प्राप्त हो सकता है, जब व्यक्ति इस लक्ष्य को रोज़ों में बनाये रखे और उन रुचियों को जहां तक संभव हो दबाये जिनके आगे अपने दैनिक जीवन में वह अक्सर विवश हो जाया करता है और यह विवशता उसे बहुत-सी नैतिक और शरई कमज़ोरियों का शिकार बना देती है । बहुत से लोग रोज़े के इस लक्ष्य की कोई परवाह नहीं करते । वे समझते हैं कि रमज़ान का महीना ख़ास खाने-पीने का महीना है । कुछ लोग ऐसा भी समझते हैं कि इस महीने में खाने-पीने पर जितना भी ख़र्च किया जाए । अल्लाह के यहां उसका कोई हिसाब नहीं होगा । लोग रोज़े की पैदा की हुई भूख-प्यास को मनेच्छाओं को मारने के बजाय मनेच्छाओं के पोषण का माध्यम बना लेते हैं । यह सही है कि रोज़ा खाने-पीने के शौक़ को बढ़ा देता है, लेकिन रोज़े का लक्ष्य उस उकसाहट को दबाना है, न कि उसका पोषण करना ।

इसी प्रकार जब व्यक्ति भूखा-प्यासा रहता है तो उसका गुस्सा बढ़ जाता है । जहां कोई बात उसके मर्ज़ी के ख़िलाफ़ हुई तुरंत उसको गुस्सा आ जाता है । रोज़े के लक्ष्यों में से यह भी है कि जिनके स्वभाव में गुस्सा अधिक हों वे रोज़े के माध्यम से अपने स्वभाव का सुधार करें । लेकिन यह सुधार उसी स्थिति में हो सकता है, जब व्यक्ति रोज़े को अपने स्वभाव के सुधार का ज़रिया बनाए । अगर वह रोज़े को अपने स्वभाव के सुधार का ज़रिया ही न बनाए तो इसकी आशंका है कि रोज़ा उसके लिए लाभदायक होने के बजाय हानिकारक हो जाए । बहुत से लोग रोज़े को ढाल के बजाय तलवार की तरह इस्तेमाल करने लगते हैं । वे स्वयं को नियंत्रित रखने के बजाय उग्र हो जाते हैं । बीवी, बच्चों और अधीनस्थों को बात-बात पर डांटने लगते हैं, यहां तक कि गाली-गलौज और मार-पीट पर भी उतर आते हैं । जो व्यक्ति भी रोज़े की बरकतों से लाभ उठाना चाहता है उसे चाहिए कि वह रोज़े को अपने ऊपर एक लगाम के रूप में इस्तेमाल करें । अगर व्यक्ति में रोज़े के सम्मान की भावना हो तो उसकी सहनशक्ति बहुत बढ़ जाती है । दिखावे का रोग जिस प्रकार दूसरी इबादतों के साथ लगा हुआ है, उसी प्रकार रोज़े के साथ भी लगा हुआ है । बहुत से लोग रोज़े तो रखते हैं, लेकिन उद्देश्य अल्लाह की मर्ज़ी प्राप्त करने के बजाय यह होता कि अगर रोज़ा नहीं रखा तो पड़ोसी क्या कहेंगे । लोगों के बीच दीनदारी का जो भ्रम है वह समाप्त हो जाएगा, तो ऐसा रोज़ा उसी उद्देश्य के लिए हो जाएगा, जिसके लिए वह रखा गया है ।

इससे बचने के लिए चाहिए कि व्यक्ति अपनी नीयत को पाक रखे । अपने सामने बार-बार रोज़े का महत्व और उसका मूल्य स्पष्ट करना चाहिए ताकि उसकी निगाह दूसरी तरफ़ से हट कर केवल अल्लाह की ओर हो जाए । रमज़ान के अलावा नफ़्ल रोज़ें को रखकर भी आदमी इस रोग से मुक्ति पा सकता है । कोशिश यह होनी चाहिए कि रोज़े को लोगों से छिपा कर रखे ।

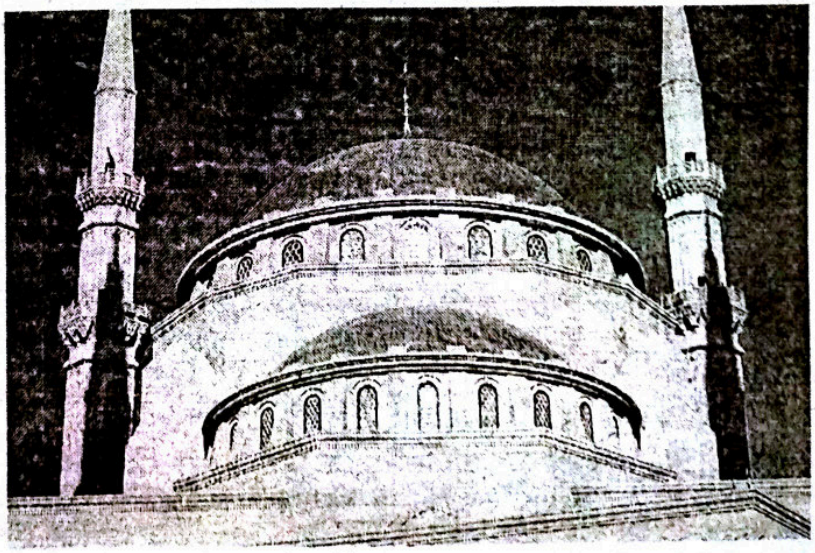

इस्लामिक सेन्टर वेलोर

अपील

अल्हमदुलिल्लाह, इस्लामिक सेन्टर वेलोर तामिलनाडु की सरज़मीन पर पिछले 33 वर्षों से नवमुस्लिम मर्दों, औरतों एवं बच्चों की तालीमो-तर्बियत की व्यवस्था कर रहा है । सन 1978 से सन 2010 तक 'सेन्टर' की सेवाओं का संक्षिप्त विवरण नीचे दिया जा रहा है :

• 31 मार्च 2011 तक सेन्टर से लाभांवित होने वाले छात्र/छात्राओं की संख्या :
• छात्र–4845 • छात्राएं–2959 • कुल–7804

- 10 साल पहले सेन्टर में 'कुल्लियतुल मआरिफ़' के नाम से एक दर्सगाह शुरू की गयी है । दर्सगाह में दसवीं से बारहवीं (X से XII) कक्षा के छात्राओं को दीन की शिक्षा दी जाती है । ताकि महिलाओं में दावती और इस्लाही काम हो सके । इस दर्सगाह से फ़ारिग़ होकर दीन की सेवा में लगी हुई छात्राओं की संख्या 32 है । 16 छात्राएं शिक्षा हासिल कर रही हैं ।
- पिछले साल से लड़कों के लिए एक तीन साला दावती कोर्स "कुल्लियतुल इस्लाम" के नाम से शुरू किया गया है । यह दसवीं पास या उससे आगे के छात्रों के लिए है ।
- सेन्टर से फ़ारिग़ 80 छात्रों ने दीनी दर्सगाहों से सनद हासिल की है । फ़िलहाल 11 छात्र पढ़ रहे हैं ।
- 90 छात्रों ने ITI की टेक्निकल शिक्षा हासिल की है । इस समय 9 छात्र पढ़ रहे हैं ।
- छात्राओं के लिए कंप्यूटर की बुनियादी शिक्षा और टेलरिंग सिखाने की व्यवस्था है ।
- सेन्टर ने क्षेत्रीय आबादी के बच्चों की शिक्षा एवं प्रशिक्षण के लिए इंग्लिश मीडियम स्कूल खोला है । इस स्कूल में तमिल, उर्दू और दीनियात की शिक्षा भी दी जाती है । इस (ICV नर्सरी और प्राइमरी) स्कूल को सरकार की ओर से मान्यता दे दी गयी है । 467 छात्र/छात्राएं शिक्षा ग्रहण कर रही हैं ।
- 18 नवमुस्लिम बस्तियों में मस्जिदों की स्थापना, मस्जिदों की देखभाल, इमामों की नियुक्ति, मक्तबों एवं प्रौढ़ शिक्षा केन्द्रों की व्यवस्था की गयी ।
- इस समय देशबंधुओं के तीन गांव इस्लामिक सेन्टर ने दावत के कामों के लिए चुने हैं । 8 दावत का काम करने वाले, 8 महिला एवं पुरुष इस क़ाम में लगे हुए हैं, जिनकी कोशिशों से अल्लाह तआला के फ़ज़्ल से 60 भाइयों और बहनों को दीन हक़ की सआदत नसीब हुई है ।
- सेन्टर ने पोस्टल लाइब्रेरी की व्यवस्था की है । तमिल और अंग्रेज़ी की कुछ चुनी हुई किताबें डाक से अपने ख़र्च पर भेजी जाती हैं । अब तक 24,588 बिरादराने वतन और 5237 बिरादराने मिल्लत इस लाइब्रेरी से लाभान्वित हो चुके हैं ।

रमज़ान के महीने की आमद के इस मुबारक अवसर पर हम आप से पुरख़ुलूस अपील करते हैं कि आप अपनी गिरांक़द्र अआनत, ज़कात व सदक़ात आदि इरसाल फ़रमाएं । अपने दोस्त अहबाब को भी इस कारे-ख़ैर के लिए उभारें । अल्लाह तआला आपको और आपके घर वालों को इस कारे-ख़ैर का बेहतरीन सिला अता फ़रमाए और दारैन की सआदतों से बहरोबर फ़रमाए । सेहत व आफ़ियत से नवाज़े । फ़क़त वस्सलाम

ड्राफ़्ट व चेक इस नाम पर बनवाएं : "ISLAMIC CENTRE VELLORE"

ऑन लाइन रक़म भेजने के लिए : Union Bank of India, Vellore Ac/No. 333001010019006

सदर
ए॰ शब्बीर अहमद अफ़ी॰ अन्हु

जनरल सेक्रेट्री
के॰ एम॰ सिराज अहमद

ISLAMIC CENTRE VELLORE
19/4, Madar Saheb Street, R.N. Palayam, Vellore-632001, Tamil Nadu (India)
Union Bank of India, Vellore, Ph. : 0416-2223825

अल्लाह की रहमत और बरकत का महीना है रमज़ान

❖ विद्या प्रकाश

इस्लाम धर्मावलंबियों में माहे रमज़ानुल मुबारक इस्लामी कैलेंडर का नौवां और सबसे ज़्यादा पाक और बरकतों वाला महीना माना जाता है । इस्लामी जगत में माहे रमज़ानुल मुबारंक का अनेक दृष्टियों से बड़ा माहात्म्य है ।

रमज़ान के मुबारक महीने में रोज़ों और आत्म-संयम का विशेष महत्व है । इन दिनों प्रत्येक रोज़ेदार मुसलमान भोर से सायंकाल तक पाक परवरदिगार की रज़ा के अनुसार खाद्य तथ पेय पदार्थों का सेवन नहीं करता और अन्न का एक कण भी उसके मुंह में नहीं जाता ।

रमज़ान में हर बालिग़ मर्द और औरत पर रोज़ा फ़र्ज़ है । इन रोज़ों का अख़्लाक़ी पहलू और नज़रिया यह है कि जब कोई व्यक्ति रोज़ा रखता है तो उसे दूसरों की भूख, प्यास और तकलीफ़ का एहसास होता है । इन्सान के अन्दर जज़्ब-ए-इन्सानियत पैदा करने के लिए यह एहसास होना आवश्यक है । यदि उसके दिलों-दिमाग़ में यह एहसास और फ़िक्र न पैदा हो तो उसका सही रास्ते पर चलना और सुधरना मुश्किल और नामुमकिन हो जाए ।

जब तक व्यक्ति के दिल में दूसरों के दुख-दर्द और तकलीफ़ का एहसास न हो तब तक वह इन्सान कहलाने का अधिकारी नहीं हो सकता और उसमें व चौपाया जानवर में कोई फ़र्क़ नहीं रह जाएगा । रोज़ा उसके दिल में इन्सानी एहसास जगाते हैं और जब आदमी के हृदय में यह एहसास जागृत हो जाया करता है, वह यथाशक्ति और यथासामर्थ्य दूसरों की खुद हरमुमकिन मदद करने लगता है । रोज़ों से तक़वा और ईशपरायणता पैदा होती है जो इसका अस्ल मक़सद है ।

रोज़ा सिर्फ़ दिन भर भूखा रहने का नाम नहीं है । रोज़ा पूरे बदले से रखा जाता है जो इस्लाम के पांच बुनियादी स्तंभों में प्रमुख है । रमज़ान में रोज़ों का मतलब और मक़सद केवल दिन भर कुछ न खाने-पीने तक महदूद नहीं है बल्कि रोज़ों का अर्थ व्यापक तथा सभी प्रकार की नैतिक बुराइयों से बचाव और हिफ़ाज़त है । माहे रमज़ान में एक सच्चा मुसलमान न आंखों से अश्लील दृश्यावलोकन करता है, न ज़िह्वा से किसी की निंदा और चुग़ली करता है, न कान से किसी की बुराई और चुग़ली सुनता है और न ही अन्य अवकर्म, दुष्कर्म करता है । वास्तव में यह पूरा मास प्रशिक्षण मास है । रोज़ेदार हाथ से सुकर्म और दान-पुण्य करेगा । कान से पवित्र कुरआन और सद्वचन सुनेगा । पैरों से मस्जिदों और इबादतगाहों में जाएगा । मुंह से अच्छे बोल बोलेगा । नेत्रों से कुअरान शरीफ़ की तिलावत करेगा । रमज़ान मनुष्य की समस्त ज्ञानेन्द्रियों, कार्मेन्दियों, हृदय तथा मस्तिष्क पर नियंत्रण, बुराइयों पर रोक तथा अच्छाइयों की वृद्धि का अवसर है ।

इस मुबारक पाक महीने में रोज़ेदार हर तरह की बुराइयों से दूर रहता है । इस महीने में रोज़ेदार पूरे क़ुरआन पाक को एक बार अवश्य तिलावत करता है जिसे तरावीह कहा जाता है और जो मस्जिदों में बाअक़ीदत पढ़ी जाती है । रोज़ा-ए- रमज़ान के दिनों में महिलाएं भी घरों में क़ुरआन पाक की तिलावत करती हैं ।

इस मुबारक पाक महीने में रोज़ेदार हर तरह की बुराइयों से दूर रहता है । इस महीने में रोज़ेदार पूरे कुरआन पाक को एक बार अवश्य तिलावत करता है जिसे तरावीह कहा जाता है और जो मस्जिदों में बाअक़ीदत पढ़ी जाती है । रोज़ा-ए-

AL-HERA LIBRARY

(Run and Managed by **Sabiha Welfare Trust,** Registration No. 5418/4603)

Near Road No. 10, Main Road, Jawahar Nagar, P.O. Azadnagar,
Mango, Jamshedpur-832110, Jharkhand (INDIA)
E-mail : al_hera_library@sify.com, Mob. : 09334634662, 09204000609

APPEAL

An academic library named **"AL-HERA LIBRARY"** was established in 2004 to uplift the education standard in the downtrodden people of the society. Now it is running under **"SABIHA WELFARE TRUST" Regn. no. 5418/4603, PAN No. AAITS2377J.** This is the only academic library in approx. 8 lakhs populated area, it works progressively and achieving its goal day by day. It was started with 75 books only & after 6 consecutive years it reaches 4656 books. But still it requires your support to fulfill the student's requirements. Apart from that library also works for carrier counseling, AIDS awareness, blood donation, quiz contest etc.

The president of the library received **CMD** (chairman and managing director) award 2006 in the category of **"CORPORATE RESPONSIBILITY"** from Cummins in India held at Pune. Visit **(orkut.com>search>type al hera library).**

Here is the kind request to all of you that please bring your hand forward for this noble cause to serve the students for their glorious future and make our country developed and strong through education.

You are requested to send your donations to :
A/C name : SABIHA WELFARE TRUST
Bank name : STATE BANK OF INDIA
Branch : Bistupur, Jamshedpur, Jharkhand
A/C no. : 30573132872

May Allah give you returns, Inshallah, Ameen

PRESIDENT
MD. SHAHNAWAZ QUAMAR

रमज़ान के दिनों में महिलाएं भी घरों में कुरआन पाक की तिलावत करती हैं ।

इस मुबारक महीने के अन्तिम दस दिनों में किसी एक रात को कुरआन शरीफ़ का मानव समुदाय के कल्याण के लिए अवतरण हुआ था । इस रात को शबेक़द्र कहा जाता है । इस रात में हर मुसलमान अपना पूरा वक़्त अल्लाह तआला की इबादत में लगा देता है । इस इबादत का सवाब (पुण्य) कई गुना ज़्यादा हासिल होता है । कहा जाता है कि यह रात मुराद मांगने की भी अहम रात है । इस महीने की आख़िरी जुमे को जुमअतुल विदा भी कहते हैं । आख़िरी नमाज़ को अलविदा की नमाज़ भी कहा जाता है ।



रमज़ान इबादतों का पाक महीना है । इस महीने में हर अक़ीदतमंद मुसलमान ज़्यादा से ज़्यादा इबादत में मशग़ूल रहता तथा नेक काम करता है । यदि किसी वजह से कोई मुसलमान इस माह रोज़ा नहीं रखता तो उसे दूसरे रोज़ेदार का ध्यान रखना चाहिए यानी उसे किसी रोज़ेदार के सामने कुछ खाना-पीना नहीं चाहिए । जितना ज़्यादा से ज़्यादा मुमकिन हो सके, मुफ़लिसों, अपाहिजों व ज़रूरतमंदों को ख़ैरातो ज़कात प्रदान करना चाहिए । पता नहीं अगले रमज़ान में हम रहें या न रहें ।

पता नहीं, यह रमज़ान हमारे आप में से किसी का आख़िरी रमज़ान हो । इसलिए हम सबको चाहिए कि इस मुबारक माह में अपने रब्बुल आलमीन से अपनी और हमारे जैसे तमाम लोगों की बख़्शिश की दुआएं करें और हमारे अन्दर ईमानो सच्चाई के रास्ते पर चलने का जज़्बा, हौसला और शक्ति पैदा हो । हम इस्लामी शिक्षाओं के अनुगामी बनें और जब हमारी मौत हो, हक़ व ईमान एवं अल्लाह तआला के बताए हुए रास्ते पर हो ।

इस माह में जहन्नम के दरवाज़े बन्द कर दिये जाते हैं, शैतान क़ैद कर लिए जाते हैं, जन्नत के दरवाज़े खोल दिये जाते हैं और अल्लाह तआला अपने बन्दों को सुधरने का पूरा मौक़ा देता है और अपने बन्दों की दुआएं क़बूल करता है । रमज़ानुल मुबारक अल्लाह का पाक महीना है । इस माह में पाबन्दी के साथ रोज़ा, नमाज़-ए-तरावीह, तिलावते कलाम पाक, शबेक़द्र में रात भर इबादत, आख़िरी अशरे में एतिकाफ़ और ज़कातो सदक़ा से दुनिया का ज़र्रा-ज़र्रा पाक और ज़िन्दगी संयमित हो उठती है । यह अल्लाह पाक की रहमतों और बरकतों का महीना है । आइए इस मुबारक मौक़े पर हम शुभ कृत्य करने का शुभ संकल्प करें ।

जब तक व्यक्ति के दिल में दूसरों के दुख-दर्द और तकलीफ़ का एहसास न हो तब तक वह इन्सान कहलाने का अधिकारी नहीं हो सकता और उसमें व चौपाया जानवर में कोई फ़र्क़ नहीं रह जाएगा । रोज़ा उसके दिल में इन्सानी एहसास जगाते हैं और जब आदमी के हृदय में यह एहसास जागृत हो जाया करता है, वह यथाशक्ति और यथासामर्थ्य दूसरों की ख़ुद हरमुमकिन मदद करने लगता है । रोज़ों से तक़वा और ईशपरायणता पैदा होती है जो इसका अस्ल मक़सद है ।

अनाथ लड़कों की पुकार

VOICE OF ORPHAN BOYS

यतीमख़ाना इस्लामिया (गया)



एक परिचय

● दीनी और असरी शिक्षा की अपनी तरह की जानी-मानी रिहाइशी पाठशाला ● 93 वर्षों की सेवाएं ● बहुत से विभाग ● शिक्षा के पड़ाव : प्राथमिक से मैट्रिक तक ● हिफ़्ज़ का विभाग : हिफ़्ज़ के साथ-साथ मैट्रिक ● हर वर्ष बिहार स्कूल बोर्ड परीक्षा का 100 प्रतिशत रिज़ल्ट ● पत्राचार शिक्षा 2010-2011 के सत्र के लिए 11वीं, 12वीं और बी०ए० में प्रवेश जारी ● कंप्यूटर की भी शिक्षा ● किफ़ाला स्कीम के तहत एक अनाथ छात्र पर वार्षिक ख़र्च 8000/- रुपये प्रति वर्ष ● कुल वार्षिक ख़र्च 14 लाख से अधिक ● आमदनी का स्रोत : मुस्लिम अवाम के चन्दे ● 125 अनाथ बच्चे जिनका पूरा ख़र्च इदारा ही उठाता है ।

● जिस रूप में संभव हो मदद करके अल्लाह से बड़ा इनाम प्राप्त करें–उदाहरण के लिए ● ज़कात ● सदक़े ● अतिया ● पैदावार की ज़कात ● क़ुरबानी की ख़ाल ● एक अनाथ बच्चे का वार्षिक ख़र्च ● अपने या किसी बुज़ुर्ग के नाम पर कमरा या हॉल बनवाना आदि ।

● याद रखें यहां हर वर्ष ऑडिट (Audit) भी कराया जाता है । आप ख़ुद यतीमख़ाना इस्लामिया पहुंच कर बराबरी का व्यावहारिक नमूना अपनी आंखों से देखें कि किस प्रकार अनाथ और मां-बाप वाले बच्चे मिल-जुलकर रहा करते हैं ।

यह इदारा आप से उदार सहायता की अपील करता है ।

नोट : यह इदारा विदेशी मुद्रा के क़ानून FCRA के तहत भी रजिस्टर्ड है ।

अब आप विदेश से BANK A/c No. 300402010000187

BANK CODE NO. UBININBBJAM,

UNION BANK OF INDIA (MAIN BRANCH, GAYA)

.....में अपनी रक़म भेज सकते हैं.....

चेक या ड्राफ्ट पर केवल यह लिखें–THE GAYA MUSLIM ORPHANAGE

.....चेक, ड्राफ़्ट, मनीऑर्डर या ख़त भेजने का पता.....

Hon. SECRETARY, THE GAYA MUSLIM ORPHANAGE

At+P.o : CHERKI-824237, Distt : GAYA (BIHAR) INDIA

BANK A/C NO. : 10581; UNION BANK OF INDIA (MAIN BRANCH, GAYA)

CORE BANKING A/C NO.: 300402010010581

☎ 0631-2734428 ● Mobile : 9955655960

E-mail : gmocde@yahoo.co.in, Website : www.gmogaya.com

अध्यक्ष
डॉ० फ़रासत हुसैन

नाज़िम
डॉ० मुहम्मद एहतिशाम रसूल

ईदुल फ़ित्र की अपेक्षाएं

❖ मौलाना सऊद आलम क़ासिमी

इन्सानों पर अल्लाह तआला की बेशुमार नेमतें हैं । हमारी हर सांस अल्लाह की बख़्शी हुई नेमत है । जीवन का हर क्षण अल्लाह का इनाम है । अगर वह उसे रोक ले तो कोई हासिल नहीं कर सकता । इसीलिए क़ुरआन कहता है : 'अगर तुम अल्लाह की नेमतों की गणना करना चाहो तो नहीं गिन सकोगे ।' (नह्ल : 18)

अल्लाह की सबसे बड़ी नेमत यह है कि उसने हमें इन्सान और सारी मख़लूक़ में श्रेष्ठ बनाया । सही और ग़लत की पहचान हमें सिखायी और अपनी हिदायत और पहचान से नवाज़ा । यदि इन्सान सोचे, तो ईमान और सत्कर्म की तौफ़ीक़ अल्लाह की बहुमूल्य नेमत है । इसलिए कि यह हमारे लिए इस दुनिया की भी भलाई का साधन है और आख़िरत में भी कामयाबी और निजात का रास्ता है । माहे सियाम (रोज़ों के महीने) की इबादतों और नेकियों का सालेह आमाल (सत्कर्मों) में एक विशेष स्थान प्राप्त है । अल्लाह तआला का फ़रमान है : 'बनी आदम का हर अमल उसके लिए है, सिवाय रोज़े के । रोज़ा मेरे लिए है और मैं ही उसका बदला दूंगा ।'

वास्तविकता यह है कि ईद का दिन आभार व्यक्त करने का दिन है और ईद की नमाज़ भी शुक्र अदा करने की नमाज़ है । जब इन्सान को कोई नेमत मिले, तो उसका तक़ाज़ा है कि जिस ज़ात ने वह नेमत प्रदान की आदमी उसका शुक्र कदा करे । शुक्र करना नेमत को स्वीकार करना है । इस बात का प्रदर्शन है कि नेमत अता करने वाले का एहसान मानना आदमी जानता है । यह उच्च आचरण और शालीनता की पहचान है । शुक्र ईमान और नाशुक्री कुफ़्र है । इसीलिए हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि०) ने फ़रमाया है : शुक्र आधा ईमान है ।

काफ़िर की पहचान यह है कि जब उसे कोई नेमत मिलती है तो वह उसे अपना हक़ ठहराता है और उसके लिए उस ज़ात का आभार प्रकट नहीं करता जिसकी कृपा से वह नेमत मिली है । फिर जब वह चीज़ छिन जाती है तो गिला-शिकवा करता है । जबकि मोमिन की पहचान यह है कि जब कोई नेमत उसे मिलती है तो वह उसका शुक्र अदा करता है और अगर छिन जाती है तो उस पर सब्र करता है । अल्लाह का फ़रमान है :

"और हम भलाई और बुराई दोनों के ज़रिये तुमको आज़माते हैं और तुमको हमारी तरफ़ पलटना है ।"

(अम्बिया : 35)

हज़रत सुलैमान (अलैहि०) ने अपने राज्य के एक सेवक के आश्चर्यजनक कारनामे को देखा तो उसे आज़माइश का ज़रिया समझते हुए फ़रमाया :

"यह मेरे रब का अनुग्रह है, ताकि वह मुझे आज़माये कि मैं शुक्र अदा करता हूं या अल्लाह की कृपा का इन्कारी हो जाता हूं । जो कोई अल्लाह के प्रति कृतज्ञता दर्शाता है उसका वह काम उसके ही लिए लाभदायक है और जो नाशुक्री करता है तो बेशक मेरा रब बड़ा बेनियाज़ और दया करने वाला है ।" (नम्ल : 40)

ईदुल फ़ित्र शुक्राने की नमाज़ इसलिए है कि अल्लाह ने अपनी दया और कृपा से रमज़ानुल मुबारक का महीना प्रदान किया और फिर उसमें हमें रोज़ा, नमाज़, तिलावते क़ुरआन और सदक़े व ख़ैरात का सौभाग्य मिला जिससे प्रत्यक्ष व मन में छुपी हुई बुराइयों से पाक होने का मौक़ा मिला । मानव जगत के साथ सहानुभूति दिखाने और दूसरों का दुख-दर्द बांटने की सआदत नसीब हुई हमारे रिज़्क़ में बरकत और कुशादगी पैदा हुई अच्छी-अच्छी चीज़ें खाने को मिलीं और रोज़ों की बरकत से जिस्म की बहुत-सी बीमारियों और बहुत-सी ख़ुराफ़ातों से छुटकारा मिला । इस पर हम अल्लाह के प्रति कृतज्ञता दर्शाते हैं । उसके शुक्राने का सजदा अदा करते हैं, बल्कि हमारा सारा व्यक्तित्व हमारा सरापा शुक्र और उपकार बन जाता है । "हम तेरी ही तारीफ़ करते हैं और तेरा ही शुक्र अदा करते हैं ।" बल्कि सर से पांव तक शुक्र और एहसान है ।

आप भली-भांति समझ सकते हैं कि शुक्राने की नमाज़ वही अदा कर सकता है जिसने उस नेमत की क़दर की हो

यानी रमज़ान की बरकतों को समेटा हो । मगर जिसकी बीमार आंखों को यह नेमत ज़हमत नज़र आयी हो, वह रोज़ा रखने के बजाय अपना पेट भरने में लगा हो, नमाज़ों में खड़े होने, रातों को जाग कर नफ़लें पढ़ने और सहरी खाने के बजाय अपनी काया को आराम देने में लगा हो, सदक़ा, ख़ैरात करने के बजाय बुख़्ल और कंजूसी में ग्रस्त हो, उसके लिए न तो शुक्राने की नमाज़ पढ़ने और अल्लाह के प्रति कृतज्ञता दिखाने का यह अवसर है और न कोई औचित्य । इसीलिए तो नबी करीम (सल्ल०) ने फ़रमाया : जिसने क़ुदरत होने के बावजूद रोज़ा नहीं रखा, वह हमारी ईदगाह में न आये ।''

ईद का दिन रूहानी नेमतों के साथ भौतिक नेमतों के भी प्रदर्शन का सुअवसर है । बढ़िया खाने और कपड़े और खुशी का माहौल आज के दिन की ज़ीनत है । उनका प्रदर्शन होना चाहिए । नबी करीम (सल्ल०) का इरशाद है : अल्लाह अपने बन्दों पर अपनी नेमत का प्रभाव देखना चाहता है । नबी करीम (सल्ल०) ने यह भी फ़रमाया : अल्लाह जिस बन्दे पर इनाम करता है और वह उस नेमत का असर अपने ऊपर प्रकट करता है, तो उसके बारे में लिखा जाता है कि वह अल्लाह का दोस्त है और उसकी नेमत का शुक्र अदा करने वाला है । जिस बन्दे पर अल्लाह इनाम करता है और उसका असर वह अपने ऊपर ज़ाहिर नहीं करता तो उसके बारे में लिखा जाता है कि वह अल्लाह का शत्रु और उसके प्रति घृणा का पात्र है । उसकी नेमत का इन्कार करने वाला है ।' नेमत का प्रदर्शन इसीलिए ज़रूरी है कि अल्लाह की नेमत को प्रकट करना उसके प्रति कृतज्ञता दिखाना है । उसको छुपाना, प्रकट न करना नेमत की बेक़द्री और उसका इन्कार है ।

इसीलिए खाना खाकर अल्लाह का शुक्र करने वाले को धैर्य के साथ नफ़ल रोज़ा रखने वाले के बराबर सवाब दिया जाएगा । (बुख़ारी व इब्न माजा) जिन मुसलमानों को ये नेमतें मयस्सर नहीं हैं उनको ज़रूरत की चीज़ें उपलब्ध कराना मालदारों पर लाज़िम किया गया है । उनको अपनी इस दीनी और समाजी ज़िम्मेदारी को पूरा करने की चिंता होनी चाहिए । कृतज्ञता के प्रदर्शन द्वारा ही आदमी दूसरी अन्य नेमतों का हक़दार बनता है, नाशुक्री करेगा तो यह रवैया नेमतों के छिन जाने का कारण बनता है । अल्लाह का इरशाद है : ''अगर तुमने शुक्र किया तो और प्रदान करूंगा और अगर अकृतज्ञ बने तो मेरा अज़ाब बहुत सख़्त है ।

(इबराहीम : 7)

क़ुरआन हकीम में अल्लाह तआला ने एक बस्ती की मिसाल दी है जो सुख व शांति का जीवन गुज़ार रही थी । हर ओर से उसको खुला रिज़्क़ मिल रहा था । मगर उसने अल्लाह की नेमतों के प्रति अकृतज्ञता दिखानी शुरू कर दी, तब उसके नागरिकों को अल्लाह ने उनके करतूतों का यह मज़ा चखाया कि भूख और भय की मुसीबतें उन पर टूट पड़ीं । (नहल)

अदी बिन इरतात ने ख़लीफ़ा उमर बिन अब्दुल अज़ीज को लिखा : मैं ऐसे क्षेत्र में हूं जहां अल्लाह के नेमतों की बहुतायत है, मगर कृतज्ञता में कमी के कारण मुझसे पहले मुसलमानों पर छुपी रही ।' ख़लीफ़ा ने जवाब में लिखा : अल्लाह जब किसी क़ौम को अपनी नेमतों से नवाज़ता है और वह उनके लिए अल्लाह का शुक्र बजा लाती है तो उन पर नेमतों को बढ़ा दिया जाता है ।

शुक्रगुज़ारी का एक पहलू तो यह है कि आदमी ज़ुबान से कृतज्ञता प्रकट करने के लिए उसकी तारीफ़ करे, हम्द व सना, तसबीह और तकबीर करे । ईदगाह में हम वास्तव में यही शुक्र बजा लाने जमा होते हैं । शुक्रगुज़ारी का दूसरा पहलू यह है कि आदमी इनाम करने वाले रब्बुल इज़्ज़त का एहसान माने । उसके आदेशों का पालन करे और नाफ़रमानी से बचे । हर हाल में उसकी पसन्द और नापसन्द का ध्यान रखे । यह अमल ईदगाह से लौटने के साथ ही शुरू हो जाता है । इन्सान को शुक्र के इस पहलू से ग़ाफ़िल नहीं होना चाहिए । अगर नमाज़ का वक़्त आया और हमारे क़दम मस्जिद की ओर नहीं बढ़े, हराम रिज़्क़ सामने आया और हमारे हाथ न रुके, बदकारी और बदकलामी का अवसर मिला और हम अल्लाह की नाराज़गी का ख़याल न रख सके, ग़रीबी और मुफ़लिसी का मारा आदमी नज़र आया और हमारे दिल में से दया के सोते नहीं फूटे, तो समझा यह जाएगा कि हमारा शुक्र जो आज हम ज़ुबानी अदा करने यहां जमा हुए हैं, वह क्षणिक और बस मौखिक है । उसका कोई प्रभाव हमारे ऊपर नहीं पड़ा, बल्कि हमारा अमल उसके विपरीत रहा ।

माहे रमज़ान

खुला है आज दर बाग़े जिनां[1] का
ज़माना है बहारे बेख़िज़ां का
मुबारक माहे रमज़ां की है आमद[2]
पयामे[3] ईद है साले रवां[4] का
अजब इफ़्तारो सहरी का मज़ा है
न पूछो ज़ाइक़ा कामो दहां[5] का
ख़ुशी होगी ख़ुदा से मिलके जितनी
वहां तक क्या गुमां वहमो गुमां का
यह रोज़ा एक रूहानी ग़िज़ा[6] है
मुहाफ़िज़[7] है हमारे जिस्मो जां का
शिकम[8] ख़ाली मगर दिल में हलावत[9]
शगुफ़्ता[10] हाल है पीरो जवां का
यह पाकीज़ा अमल है उनका शेवा[11]
जिन्हें डर है ख़ुदाए ग़ैबदां का
सहर से शाम तक भूखे प्यासे
अमल है यह दिलों के इम्तिहां का
कुशादा[12] हो गयी मोमिन की रोज़ी
तवाना[13] हाथ है हर नातवां[14] का
मसर्रत[15] ही मसर्रत है यह रोज़ा
करम है ख़ालिक़े हर दो जहां का
ख़ुदा से मांग लो जो मांगना हो
कि दरवाज़ा खुला है आसमां का
ज़ुबाने ख़ुश्क से दिल की दुआएं
यक़ीनी है असर आहो फ़ग़ां[16] का
उठाओ हाथ कारे ख़ैर में 'शौक़'
भरोसा कुछ नहीं उम्रे रवां का ।

● **शौक़ आज़मी**

1. स्वर्ग, 2. आना, 3. सन्देश, 4. जारी, 5. खाना-पीना, 6. आहार, 7. रक्षक, 8. पेट, 9. मिठास, 10. खिला हुआ, खुश, 11. तौर-तरीक़ा, 12. विस्तीर्ण, 13. मज़बूत, 16. कमज़ोर, 15. ख़ुशी, 16. फ़रियाद, शिकायत

संयम और ईद

❖ **अक्षय कुमार जैन**

ईद अरबी भाषा का शब्द है और इसके मायने हैं–निहायत ख़ुशी व प्रसन्नता का दिन । केवल नये-नये वस्त्र धारण करने, मकान-दुकान को सुसज्जित करने और स्वादिष्ट व्यंजन तैयार करने को ईद नहीं कहते हैं–यह तो ईद का एक बाहरी रूप या प्रदर्शन है ईद हमारे लिए संयम, समानता, सहानुभूति, करुणा, स्नेह, ममत्व, समता, प्रेम का पैग़ाम लेकर आती है । अपने अज़ीज़ों, दोस्तों, रिश्तेदारों, पड़ोसियों, पूरे वतन व पूरी क़ौम के साथ कैसा व्यवहार करना चाहिए, उनको अपनी ख़ुशी में और उनकी ख़ुशी में अपने आपको कैसे शामिल किया जाए, यही इस त्योहार (पवित्र दिन) की शिक्षा है, ईद उत्सव ही नहीं, इबादत भी है–एक सीख है, प्रेरणा है और सामाजिक जीवन का एक उदाहरण भी ।

हज़ारों-लाखों लोग जब एक साथ ईद की नमाज़ के वक़्त पूरे अनुशासन के साथ ख़ुदा के सामने झुकते हैं तो जो इबादत का, ख़ुदा को शुक्रिया अदा करने का नज़ारा दिखायी देता है, वह समानता का अद्‌भुत पैग़ाम देता है । नमाज़ की रस्म अदा होने के बाद सारे गिले-शिकवों को भूलकर एक-दूसरे को गले लगाकर मुबारकबाद देने का, ख़ुशहाली की दुआएं मांगने का दौर–यह त्योहार–रमज़ान के रोज़ों को रखकर अल्लाह के आज्ञापालन पर ख़ुशी मनाने, प्यार बांटने, गले लगाने, दान पुण्य करने का मौक़ा होता है ।

मदद के लिए अपील

जामिया मिस्बाहुल उलूम चौकोनियां, पूर्वी उत्तर प्रदेश का एक जाना-माना तालीमी इदारा है। यह इदारा सिद्धार्थ नगर ज़िला के ग्रामीण क्षेत्र में है। यहां लगभग सभी राज्यों और पड़ोसी देश नेपाल के छात्र तालीम हासिल कर रहे हैं। यह इदारा आधी सदी से तालीम व तर्बियत के मोर्चे पर मुस्लिम समाज की सेवा कर रहा है। यहां प्राइमरी से लेकर आलिमीयत तक की तालीम का पूरा इन्तिज़ाम है। यहां दीनी और अस्री उलूम को एक ख़ास इम्तिज़ाज के साथ सिमोया गया है, जिसके कारण जामिया को तालीमी मैदान में एक अलग और प्रतिष्ठित स्थान प्राप्त है। यहां क़याम और तआम की सारी सहूलतें उपलब्ध हैं। जामिया मिस्बाहुल उलूम की विशेषता तालीम के साथ इस्लामी बुनियादों पर छात्रों की मिसाली तर्बियत करना है।

जामिया के मंसूबे

● मर्कज़ी लाइब्रेरी की तामीर ● जामिया की मस्जिद के अधूरे कामों को पूरा करना ● लड़कियों के लिए अलग दर्सगाह की तामीर ● टेक्निकल सेन्टर का क़याम ● होस्टल की तामीर ● अनाथालय की तामीर ● फैमिली क्वार्टर्स की तामीर

अह्ले ख़ैर हज़रात से दरख़्वास्त है कि जामिया की दिल खोलकर मदद करें और अल्लाह के यहां उसका बदला पाएं।

—: भेजने का पता :—

जामिया मिस्बाहुल उलूम

चौकोनियां भारत भारी, सिद्धार्थनगर-272191

फ़ोन : 09450587737, 09793424547

जामिया का बैंक खाता नं०

A/c No. 30290663653 S.B.I. डुमरियागंज, कोड-1250

जनकल्याण एवं परोपकार

❑ मुस्तफ़ा हसनी अस्सबाई

किसी क़ौम के ज़िन्दा क़ौम कहलाने तथा प्रगति की दौड़ में आगे बढ़ते रहने का सबसे बड़ा प्रमाण यह समझा जाता है कि उसके सदस्यों के दिलों में मानव प्रेम व सहयोग की भावना कूट-कूटकर भरी हो । यही भावनाएं इस बात का निर्णय करने के लिए भी सबसे जानदार दलील होती हैं कि वह क़ौम मानवता का नेतृत्व करने की योग्यता रखती है या नहीं ?

ऐसी धारणाएं जो न केवल मानव समाज पर भलाई व कल्याण और रहमत की बारिशें कर दें, बल्कि इस धरती की सभी चीज़ें उनसे समुचित लाभ उठा सके, ऐसी अमर सभ्यताओं को जन्म देती हैं, जो मानव के बुनियादी जौहर को चमकाएं । संसार की सभ्यताओं की उच्चता का फ़ैसला भी इन्हीं उच्च आधारों पर किया जा सकता है ।

मुस्लिम उम्मत वास्तव में इस मैदान में उस ऊंचाई तक पहुंचती है, जहां तक न तो इससे पहले की क़ौमों में से कोई पहुंची थी और न ही बाद की कोई क़ौम पहुंच सकी । इस्लाम से पहले की सभ्यताओं में नेकी व भलाई का क्षेत्र इबादतगाहों और मदरसों की चारदीवारी तक सीमित था । रहा आज का दौर, तो यह वास्तविकता है कि इसमें पाश्चात्य क़ौमें सामूहिक संस्थाओं के माध्यम से सामाजिक आवश्यकताओं की पूर्ति के मामले में अत्यंत ऊंचाई तक पहुंच चुकी हैं, लेकिन इसी के साथ यह भी स्वीकार करना होगा कि इस क्षेत्र में उनकी गतिविधियों की प्रेरक न अल्लाह की रज़ा (प्रसन्नता) की प्राप्ति है और न मानवता के प्रति हमदर्दी की भावनाएं, जबकि उम्मते मुस्लिमा ने अपनी उन्नति के काल में इन्हीं उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए इस क्षेत्र में सराहनीय व अद्वितीय कार्य किये हैं । बल्कि सही स्थिति यह है पाश्चात्य क़ौमें तो इंन्सानी हमदर्दी की उस सीमा तक आज भी नहीं पहुंच सकी हैं, जिससे उम्मते मुस्लिमा अपने पतन काल में भी बहुत उच्च है । पाश्चात्य जगत की लोक हितैषी गतिविधियों के पीछे हमेशा सत्ता प्राप्ति, शोहरत, प्रोपगैंडा तथा अपना नाम चमकाने का उद्देश्य रहा है । यही वे उद्देश्य थे जिनकी प्राप्ति के लिए वे लोकहित के कार्य करते रहे । लेकिन उम्मते मुस्लिमा के सामने ऐसे सारे कार्यों में बस एक ही उद्देश्य रहा है और वह है–अल्लाह की रज़ा की प्राप्ति । अत: उनकी कोशिश यह नहीं रही कि वे एक इंच काम करके उसका इतना ढोल पीटें कि लोग उस काम को एक मील समझें । इसके विपरीत वे नेकी और भलाई के काम परदे के पीछे अंजाम देते हैं, ताकि अल्लाह ही जाने और बस ।

इस मामले में सुल्तान सलाहुद्दीन अय्यूबी का नाम विशेष रूप से लिया जा सकता है, जिसने अपनी निजी संपत्ति से शाम (सीरिया) और मिस्र के इलाक़ों में जनकल्याण की बहुत-सी संस्थाएं स्थापित की, मस्जिदें व मदरसे बनवाये, सराएं व आराम घर और कुएं तैयार कराये । लेकिन उन सब को अपने मित्रों, फ़ौजी अफ़सरों, वज़ीरों व सहयोगियों के नाम से जोड़ा और किसी संस्था का नाम अपने नाम पर नहीं रखा । जनहित के कार्यों में केवल अल्लाह की पसन्द और ख़ुशी की प्राप्ति के उद्देश्य का यह उच्च मापदंड है, जिसमें अपने नाम मात्र की इच्छा का बिल्कुल कोई दख़ल नहीं है ।

एक दूसरा पहलू यह है कि पाश्चात्य जगत में स्थापित होने वाली जनकल्याण संस्थाओं से केवल वही लोग लाभ उठा सकते हैं, जो उसी क्षेत्र या देश के नागरिक हों । लेकिन मुसलमानों ने जो संस्थाएं स्थापित कीं उनके द्वार हर इन्सान के लिए खुले थे, चाहे वह किसी क़ौम का सदस्य हो, किसी धर्म का मानने वाला हो और किसी भी क्षेत्र का रहने वाला क्यों न हो । दूसरे यह कि हमने यह संस्थाएं ऐसे महान उद्देश्य व आदर्श की प्राप्ति के लिए स्थापित कीं जिनसे पाश्चात्य जगत आज भी भिज्ञ नहीं और ये उद्देश्य हैं भी ऐसे जिन्हें सुनकर इन्सान आज भी हैरान रह जाता है । उनसे पता चलता है कि हमारी उम्मत में मानव-मित्रता की धारणा दूसरी सभी क़ौमों की तुलना में ज़्यादा विस्तृत, ज़्यादा साफ़

और प्रकाशमान हैं ।

इससे पहले कि हम इस्लामी इतिहास से जनकल्याण की संस्थाओं का ब्योरे वार वर्णन करें, यह उचित होगा कि इस विषय में इस्लामी सभ्यता के मूल सिद्धांतों पर एक नज़र डाल ली जाए । वास्तव में यही वे धारणाएं और मान्यताएं तथा नियम थे, जिन्होंने इस उम्मत के सदस्यों के दिलों पर गहरी छाप डाली और परिणामस्वरूप उन संस्थाओं की स्थापना हुई जिनकी कोई मिसाल मानवता के इतिहास में हमें नहीं मिलती ।

इस्लाम परोपकार की इस तरह दावत देता है कि मानव के दिल से कंजूसी, तंगदिली तथा दरिद्रता के सारे वसवसे (भ्रम, संदेह) मिट जाते हैं मिट जाते हैं आदमी अल्लाह की राह में ख़र्च करने के लिए तत्पर हो जाता है ।

अल्लाह तआला क़ुरआन में फ़रमाता है–

''हे 'ईमान' लाने वालो ! पाक चीज़ों में से जो तुमने कमाया हो, और जो कुछ तुम्हारे लिए हमने भूमि से पैदा किया है, उस में से ख़र्च करो, और ख़र्च करते हुए उसके ख़राब ही हिस्से (को छांट कर देने) का इरादा न करो...।

शैतान तुम्हें निर्धन होने से डराता और अश्लील बातों पर उकसाता है, और अल्लाह तुम्हें अपनी ओर से क्षमा और कृपा का वचन देता है और अल्लाह बड़ी समाई वाला और जानने वाला है । (क़ुरआन, 2:267,268)

इस्लाम हर अमीर और हर ग़रीब को सब की भलाई पर प्रोत्साहित करता है जो धनवान हैं वे यह काम अपने धन से कर सकते हैं, लेकिन जो ग़रीब हैं उनके लिए भी राहें खुली हुई हैं । वे यह कार्य अपने दिल से, अपनी ज़ुबान से तथा अपने हाथ से यहां तक कि अपने पांव से और कभी-कभी तो केवल अंपनी उपस्थिति से अंजाम दे सकते हैं । अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) से एक बार कुछ दरिद्र लोगों ने शिकायत की कि धनवान लोग नेकी के मैदान में उनसे आगे बढ़ गये हैं, क्योंकि वे अपनी दौलत को जनहित के कार्यों में ख़र्च कर रहे हैं, जबकि उन दरिद्रों के पास कोई चीज़ नहीं, जिससे वे दूसरों की सहायता कर सकें तथा सदक़ा दे सकें । तब नबी (सल्ल॰) ने यह स्पष्ट बता दिया केवल धन ही नेकी के कामों का साधन नहीं, बल्कि हर वह कार्य भलाई का काम और सदक़ा है, जिससे जीव जगत को फ़ायदा पहुंचें ।

अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) ने फ़रमाया : ''तुम जो एक बार अल्लाह की स्तुति करते हो वह भी सदक़ा है, रास्ते से किसी कष्ट देने वाली चीज़ जैसे कांटों आदि का हटाना भी सदक़ा है, दो आदमियों के बीच सुलह-सफ़ाई करा देना भी सदक़ा है, और अगर तुम किसी व्यक्ति को उसकी सवारी पर चढ़ाने में मदद दो, ताकि वह सुविधा से चढ़ जाए, तो यह भी सदक़ा है ।'' (बुख़ारी, मुस्लिम)

इस प्रकार इस्लाम भलाई कमाने के सारे रास्ते इन्सानों

HINDUSTAN TRAVELS

Prop.
ABDUL RASHID
Mob : 9425254335



Ambikapur to Bilaspur 4:30 (Morning)
Vishrampur to Bilaspur 4:25 (Morning)
Raipur to Ambikapur 9:20 (Night)

Address : Imlipara, Ambikapur, Surguja-497001 (C.G.)

के लिए खोल देता है और हर बूढ़ा व जवान, स्त्री व पुरुष, मालिक व मज़दूर, गुरु व शिष्य, उच्च पदवी प्राप्त व सामान्य नागरिक, धनवान व दरिद्र, ज़मींदार व कृषक, कहने का तात्पर्य यह है कि हर इन्सान नेकी व भलाई के काम में योगदान दे सकता है । उसकी आर्थिक स्थिति या ख़ाली जेब या शारीरिक अपंगता उसकी राह का रोड़ा नहीं बन सकते । इससे भी आगे बढ़कर इस्लाम मानव हृदय को जनहित की भावना के उस उच्च स्थान पर ला खड़ा करता है, जहां नेकी व भलाई के ऐसे पुंज फूटते हैं, जिनसे सारी मानवता लाभ उठाती है । उनका दीन-धर्म, रंग-रूप, क्षेत्र या भाषा, कोई भी चीज़ बाधा नहीं बनती ।

अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) फ़रमाते हैं : 'मानव जाति अल्लाह का कुटुम्ब है, अल्लाह को प्रिय वह है जो उसके कुटुम्ब के लिए ज़्यादा से ज़्यादा हितकर हो' इसी के साथ इस्लाम मानव हृदय को नेकी व भलाई के लिए प्रोत्साहित करके उसे यह भी समझाता है कि परोपकार के हर कार्य में सबसे पहले और सबसे ज़्यादा खुद उसका अपना हित है, जहां समाज में वह सम्मान की दृष्टि से देखा जाएगा । वहीं परलोक में सुफल उसके लिए हाथ फैलाएं उसका अभिवादन करता हुआ मिलेगा । कुरआन का इरशाद है, "तुम जो चीज़ भी ख़र्च करोगे वह तुम्हारे नफ़्स ही के लिए है ।" तथा "जो भी नेकी का काम करता है वह अपने ही लिए करता है ।"

यह बात ठीक मानव प्रकृति के अनुरूप है कि वह सबसे पहले अपने बारे में सोचता है, और पहले अपना भला चाहता है । इस्लाम ने परोपकार में 'अपने उपकार' की भावना को इस प्रकार जगाया कि मानव प्रवृत्ति की काया ही पलट गयी । जो कृपण था वह दानी बन गया, जो कंजूस था वह ख़र्च करने लगा, जिसके दिल में कभी दान का विचार भी नहीं आया था वह दान के अवसर तलाश करने लगा, जो अपनी रोटी में से किसी को एक टुकड़ा न देता था वह मेहमानों को खोजने लगा । इन्सान अपनी दौलत हर ज़रूरतमंद के लिए ख़र्च करने लगा, हालांकि उसे यह ख़याल हो सकता था कि वह उसे अपने लिए तथा अपने बाल-बच्चों के लिए बचा कर रखें । कुरआन की आयत नाज़िल होती है : 'कौन है जो अल्लाह को अच्छा क़र्ज़ दे, कि अल्लाह उसको उसके लिए कई गुणा कर दे ?' तो एक सहाबी अबू वहदा (रज़ि॰) ने पूछा : "रसूलुल्लाह क्या अल्लाह तआला भी अपने बन्दों से क़र्ज़ मांगता है ?" आप (सल्ल॰) ने फ़रमाया 'हां !' उन्होंने हुज़ूर (सल्ल॰) से कहा "आप अपना हाथ बढ़ाएं, और गवाही दें कि मैंने अपना फलां बाग़ अल्लाह की राह में सदक़ा कर दिया है, जिसका मैं मालिक हूं, और मेरे साथ उसमें कोई शरीक नहीं है ।" याद रहे कि बाग़ में खजूरों के सात सौ से अधिक फलदार वृक्ष थे । उसके बाद यह सज्जन अपने घर गये, जो कि उसी बाग़ में था । उन्होंने अपनी बीवी को बताया, तो वह रोई, पीटी, चीख़ी, चिल्लाई नहीं बल्कि खुश होकर बोली, आपका यह सौदा आपके लिए बहुत लाभकारी रहा । और इसी के साथ वह बाग़ ख़ाली करके इस्लामी राज्य के सुपुर्द कर दिया ।



शरबत पिएं, मगर एहतियात के साथ

■ विद्या प्रकाश

ग्रीष्म ऋतु आगमन होते ही छोटे-बड़े शहर, बाज़ार तथा क़स्बे में गन्ने के रस, बेल के और बर्फ मिश्रित सैक्रीनयुक्त शरबत के नाम पर ऐसे ऐसे शीतल पेय-पदार्थों की बिक्री की शुरुआत होने लगती है जो स्वास्थ्य के लिए हानिकारक तथा रोगवर्धक होते हैं । बेल का शरबत तथा गन्ने का रस तो स्वास्थ्य के लिए लाभकारी है, मगर ठेले पर जिस गन्दे तरीक़े से इनकी बिक्री की जाती है, वह नुक़सानदेह होता है । ठेले पर गन्ने का रस बेचने वाला व्यक्ति गन्ने पेरने वाली मशीन से गन्ना की पेराई कर उसकी खोई ठेले के नीचे अथवा बग़ल में एक तरफ़ रखता जाता है ।

मिठास पाकर गन्ने की खोई पर मक्खियां भिनभिनाते हुए गिलास या प्लास्टिक मग पर जाकर बैठती है । फिर इसी में गन्ने का रस भरकर ग्राहकों को दिया जाता है । रस विक्रेता अर्थ लोभ में ऐसे रोगग्रस्त गन्ने को भी मशीन में पेरकर रस निकाल लेता है जिसमें लाल रंग के चकत्तीदार दाग़ तथा घुन के आकार के काले रंग के छोटे-छोटे कीटाणु रहते हैं । इस प्रकार का गन्ने का रस जितना स्वास्थ्य के लिए फ़ायदेमंद नहीं होता, उससे कहीं ज़्यादा हानिकारक होता है । गन्ने के रस के कारोबार में लगे लोग एक बार इस्तेमालशुदा कांच के गिलास को सफ़ाई से नहीं धोते । वे थोड़ा-सा पानी डालकर और हिलाकर फिर ठेले पर चुपचाप रख देते हैं तथा फिर उसमें गन्ने का रस भरकर दूसरे ग्राहक को पिला देते हैं जिससे नाना प्रकार की संक्रामक बीमारियां फैलने का ख़तरा रहता है ।

इसी प्रकार बेल का शरबत ग्रीष्म ऋतु का सस्ता सर्वसुलभ तथा विशेष रूप से पाचन क्रिया में लाभकारी शीतल पेय है । यह क़ब्ज़, अपच तथा वायु विकार जैसे रोगों में फ़ायदेमंद है । मगर ठेले पर बेल का शरबत बेचने वाले लोग सड़े-गले बेल भी शरबत बनाने में प्रयोग कर डालते हैं जो ग्राहक को पता नहीं चल पाता । वे कांच के गिलास की धुलाई ठीक प्रकार से नहीं करते ।

ग्रीष्म ऋतु में विद्यालयों के आसपास ठेलों पर कृत्रिम रंग मिश्रित सैक्रीनयुक्त बर्फ़ डले शरबत की बिक्री ख़ूब होती है । लाल, पीले तथा हरे रंग के इस प्रकार के बर्फ़ मिश्रित सैक्रीनयुक्त शरबत देखने में सुन्दर तथा स्वाद में शीतल लगते हैं मगर इसको पीने से स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है तथा इससे तरह-तरह की बीमारियां फैलती हैं । गर्मी के मौसम में ठेलों पर मटकों में आम के नमकीन खट्टे पानी की बिक्री गन्दगी के साथ की जाती है जो नुक़सानदेह होता है ।

ग्रीष्म के मौसम में आमतौर पर बिकने वाले इस प्रकार के पेय पदार्थों को हम शीतलता पाने के लिए आगे-पीछे तथा अच्छे-बुरे परिणाम को सोचे बग़ैर हलक के नीचे उतार देते हैं । आजकल बाज़ारों में केमिकलयुक्त मैंगो जूस की बिक्री जोरों पर है जो पीने में जायक़ेदार मगर स्वास्थ्य के लिए नुक़सानदेह होता है ।

बाज़ारों में गन्दगी के साथ बेचे जाने वाले इस प्रकार के शीतल पेय पदार्थों को पीने से हमें परहेज़ करना चाहिए तथा घर में ही आम का और बेल का शरबत सफ़ाई के साथ बनवाकर हम पी सकते हैं तथा बीमारियों से खुद को महफ़ूज़ रख सकते हैं ।

'सदाकांक्षा' 2011

'सदाकांक्षा' (2011) का अगला अंक विभिन्न विधाओं पर केन्द्रित होगा। रचनाकार बन्धुओं से निवेदन है कि विभिन्न विधाओं पर अपनी पांच उत्कृष्ट रचनाएं संक्षिप्त जीवन परिचय के साथ 30 अक्तूबर 2011 तक निम्नलिखित पते पर भिजवाने का कष्ट करें। 'सदाकांक्षा' के निरंतर प्रकाशन के लिए हमें आपका भरपूर सहयोग अपेक्षित है।

संपादक, 'सदाकांक्षा'
इस्लामी साहित्य संगम
2703, बारादरी, बल्लीमारान, दिल्ली-110006
ई-मेल : sadakanchha2004@rediffmail.com

ईश्वर अवतार नहीं लेता

■ स्वामी दयानन्द

प्रश्न : ईश्वर अवतार लेता है या नहीं?

उत्तर : नहीं, क्योंकि 'अज एकपात्' 'स पर्यगाच्छु-क्रमकायम्' ये यजुर्वेद के वचन हैं । इत्यादि वचनों से परमेश्वर जन्म नहीं लेता ।

प्रश्न : यदा यदाहि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत ।
अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम् ॥ भ०गी०॥

श्री कृष्ण जी कहते हैं कि जब-जब धर्म का लोप होता है तब-तब मैं शरीर धारण करता हूं ।

उत्तर : यह बात वेदविरुद्ध होने से प्रमाण नहीं और ऐसा हो सकता है कि श्रीकृष्ण धर्मात्मा और धर्म की रक्षा करना चाहते थे कि मैं युग-युग में जन्म लेकर श्रेष्ठों की रक्षा और दुष्टों का नाश करूं तो कुछ दोष नहीं । क्योंकि 'परोपकाराय सतां विभूतय:' परोपकार के लिए सत्पुरुषों का तन, मन, धन होता है तथापि इससे श्रीकृष्ण ईश्वर नहीं हो सकते ।

प्रश्न : जो ऐसा है तो संसार में चौबीस ईश्वर के अवतार होते हैं और इनको अवतार क्यों मानते हैं ?

उत्तर : वेदार्थ के न जानने, सम्प्रदायी लोगों के बहकाने और अपने आप अविद्वान होने से भ्रमजाल में फंस के ऐसी-ऐसी अप्रामाणिक बातें करते और मानते हैं ।

प्रश्न : जो ईश्वर अवतार न लेवे तो कंस रावणादि दुष्टों का नाश कैसे हो सके ?

उत्तर : प्रथम तो जन्मा है वह अवश्य मृत्यु को प्राप्त होता है । जो ईश्वर अवतार शरीर धारण किये बिना जगत की उत्पत्ति, स्थिति, प्रलय करता है उसके सामने कंस और रावणादि एक कीड़ी के समान भी नहीं । वह सर्वव्यापक होने से कंस रावणादि के शरीर में भी परिपूर्ण हो रहा है । जब चाहे उसी समय मर्मच्छेदन कर नाश कर सकता है । भला इस अनन्त गुण, कर्म, स्वभावयुक्त परमात्मा को एक क्षुद्र जीव के मारने के लिए जन्ममरणयुक्त कहने वाले को मूर्खपन से अन्य कुछ विशेष उपमा मिल सकती है ?

और जो कोई कहे कि भक्तजनों के उद्धार करने के लिए जन्म लेता है तो भी सत्य नहीं । क्योंकि जो भक्तजन ईश्वर के आज्ञानुकूल चलते हैं उनके उद्धार करने का पूरा सामर्थ्य ईश्वर में है । क्या ईश्वर के पृथिवी, सूर्य, चन्द्रादि जगत का बनाने, धारण और प्रलय करने, रूप कर्मों से कंस रावणादि का वध और गोवर्धननादि पर्वतों का उठाना बड़े कर्म हैं ?

जो कोई इस सृष्टि में परमेश्वर के कर्मों का विचार करें तो 'न भूतो न भविष्यति' ईश्वर के सदृश कोई न है, न होगा और युक्ति से भी ईश्वर का जन्म सिद्ध नहीं होता । जैसे कोई अनन्त आकाश को कहे कि गर्भ में आया वा मूठी में धर लिया । ऐसा कहना कभी सच नहीं हो सकता । क्योंकि आकाश अनन्त और सबमें व्यापक है । इससे न आकाश बाहर आता है और न भीतर जाता, वैसे ही अनन्त सर्वव्यापक परमात्मा के होने से उसका आना-जाना कभी सिद्ध नहीं हो सकता । जाना वा आना वहां हो सकता है जहां न हो । क्या परमेश्वर गर्भ में व्यापक नहीं था जो कहीं से आया ? और बाहर नहीं था जो भीतर से निकला ? ऐसा ईश्वर के विषय में कहना और मानना विद्याहीनों के सिवाय कौन कह और मान सकेगा । इसलिए ईश्वर का जाना-आना, जन्म-मरण कभी सिद्ध नहीं हो सकता । इसलिए 'ईसा' आदि भी ईश्वर के अवतार नहीं ऐसा समझ लेना । क्योंकि राग, द्वेष, क्षुधा, तृषा, भय, शोक, दुख, सुख, जन्म, मरण आदि गुणयुक्त होने से मनुष्य थे ।

('सत्यार्थ प्रकाश', संप्तम समुल्लास)

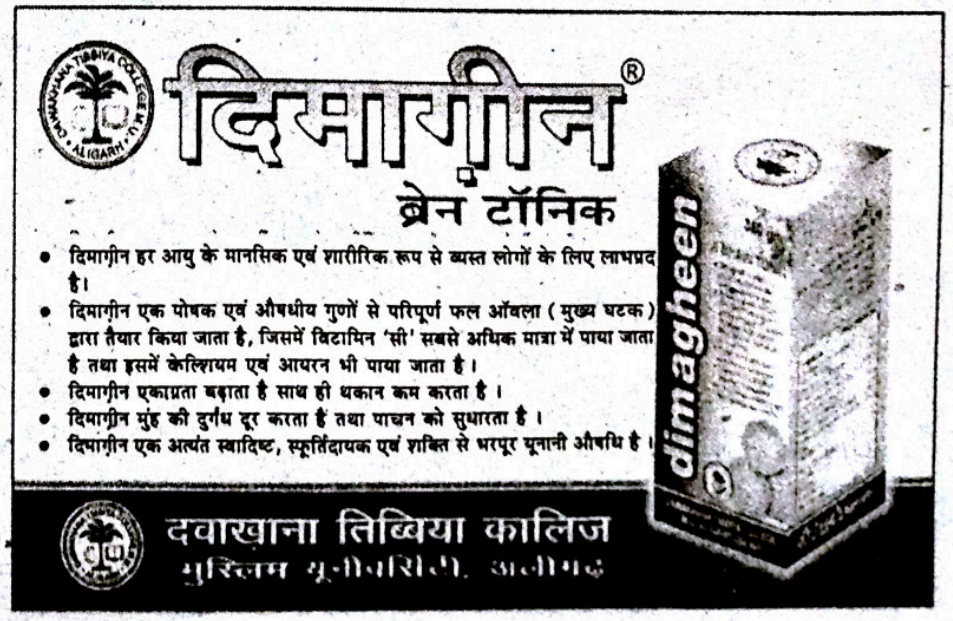

यूसुफ़ ख़ान का बक्सा

जब कभी यूसुफ़ ख़ान के बहु-बेटे उनसे मिलने आते, उनकी दृष्टि देर तक उस बक्से पर टिकी रहती जिसमें हमेशा ताला लगा रहता था और जिसे यूसुफ़ ख़ान कभी किसी के सामने नहीं खोलते थे । पर आज उनकी मौत के बाद यह सोचकर कि उनकी सारी जमापूंजी और वसीयतनामा इसी बक्से में होगी, उसका ताला तोड़ दिया गया । किंतु बक्से में से तीन जोड़ी कुर्ते पायजामों तथा एक पत्र के अलावा और कुछ न मिला । पत्र इस प्रकार था ।

मैं यूसुफ़ ख़ान,

तुम तीनों बेटों का भाग्यशाली पिता । 'भाग्यशाली इसलिए कि बुढ़ापे में जो दुर्दिन देखे, तुम लोगों का अपमानजनक व्यवहार, अवहेलना और स्वार्थपरता देखी उसने आंखें खोल दीं और जीवन के इस कटु सत्य का आभास हुआ कि इस संसार में कोई अपना नहीं, यहां तक कि अपने बच्चे भी । इसी सत्यबोध से मेरा मोहभंग हो गया ।

तुम लोगों की आशा के विपरीत जायदाद के नाम पर बना यह मकान धर्मार्थ दे रहा हूं, ताकि यहां स्कूल खुल सके । रही बात जमापूंजी की तो अधिकतर पूंजी तुम तीनों की पढ़ाई, विवाह और तुम्हारी स्वर्गवासी मां की असाध्य बीमारी पर ख़र्च हो गयी । जो थोड़ी-बहुत बची है वह घर के पुराने नौकर लखन के नाम कर दी है जिसने निस्स्वार्थ भाव से मेरी सेवा करते हुए एक सच्चा सेवक होने का धर्म निभाया । शेष बचे कपड़ों में से चाहो तो एक-एक जोड़ी ले लो, क्या पता बुढ़ापे में तन ढांकने के काम आएं, बेटे तो तुम लोगों के भी बड़े हो रहे हैं न ।

यूसुफ़ ख़ान

पत्र पढ़कर सबको सांप सूंघ गया और वे फटी आंखों से बक्से में पड़े कपड़ों को देखते रह गये ।

सुकीर्ति भटनागर
432, अरबन एस्टेट, फेज-1, पटियाला-147002

दर्पण



भ्रष्टाचार के ख़िलाफ़ जंग !

● डॉ॰ असग़र अली इंजीनियर

अन्ना हज़ारे को 'दूसरे गांधी' के रूप में उभारा जा रहा है । न केवल हर अख़बार बल्कि हर अख़बार पन्ना उनके स्तुतिगान से लबरेज है । लोकपाल बिल का मसौदा तैयार करने वाली समिति में 'सिविल सोसायटी' (सभ्य समाज?) के प्रतिनिधियों को शामिल करने की अन्ना की मांग को यू॰पी॰ए॰ सरकार ने मंज़ूर कर लिया है । यू॰पी॰ए॰ सरकार के इतने घोटाले उजागर हो चुके हैं कि उसके सामने अन्ना की मांग मंज़ूर करने के अलावा कोई चारा भी नहीं था । अन्ना के आमरण अनशन को 'सभ्य समाज' का भारी समर्थन मिला । 2जी स्पेक्ट्रम और कॉमनवेल्थ खेल घोटालों में आरोपों से घिरी यू॰पी॰ए॰ सरकार पहले से ही भारी दबाव में थी और इसलिए वह आसानी से अन्ना के सामने झुक गयी । अगर ऐसा नहीं होता तो अन्ना को इतनी आसानी से जीत हासिल नहीं हुई होती ।

अन्ना इस समय पूरे देश की आंखों का तारा बने हुए हैं । वे सामाजिक कार्यकर्ताओं और 'सभ्य समाज' के आदर्श बन गये हैं । इन वर्गों को भी अन्ना पर गर्व है और वे भ्रष्टाचार के विरुद्ध शुरू हुई इस लड़ाई को 'दूसरा स्वाधीनता संग्राम' बता रहे हैं । वैसे, ये चल रही प्रतिक्रियाएं त्वरित और भावनात्मक है । क्योंकि 'भ्रष्टाचार' जैसे गंभीर मुद्दे का हल भावनाओं में बहकर व अतिश्योक्तिपूर्ण दांवों से नहीं निकाला जा सकता । क्या यह सचमुच इतनी महान नैतिक विजय है, जितनी कि इसे बताया जा रहा है ? क्या इस आन्दोल के दूरगामी प्रभावों पर विचार किया जाना ज़रूरी नहीं है ? चूंकि, अन्ना व उनके आन्दोलन को गांधीवादी बताया जा रहा है, इसलिए सबसे पहले हमें संक्षेप में यह समझना होगा कि–आख़िर, गांधीवादी मूल्य क्या हैं और गांधीवादी आन्दोलन कैसा होना चाहिए ?

गांधीवादी संघर्ष के तीन मुख्य तत्व हैं, जिन पर कोई समझौता नहीं हो सकता है–सत्य, अहिंसा और अत्यंत सादा जीवन । इन तीन में से जो एक तत्व अन्ना के इस आन्दोलन में निश्चित रूप से मौजूद था, वह है 'अहिंसा' । बाक़ी दोनों तत्व 'सत्य' व 'अत्यंत सादा जीवन' अन्ना के इस आन्दोलन में मौजूद थे या नहीं, यह बहस का विषय हो सकता है । किन्तु कोई भी आन्दोलन लंबे समय तक 'अहिंसक' तभी रह सकता है जब वह 'सत्य' और केवल 'सत्य' पर ही आधारित हो । तथा, 'अत्यंत सादा जीवन' जीने वाले नेता ही 'सत्य' पर आधारित 'अहिंसक आन्दोलन' चला सकते हैं । शायद, यही कारण है कि इस देश में अभी तक 'दूसरा गांधी' पैदा नहीं हो सका । इसके विपरीत, चमक-दमक भरी ज़िन्दगी और झूठ व लोभ-लालच पर आधारित है–'भ्रष्टाचार' । अब अन्ना के आन्दोलन को किन तबक़ों का समर्थन मिला ?–विचारणीय है । इनमें पहला तबक़ा है–मध्य वर्ग; जिसका सादगी या सादी जीवनशैली से कोई लेना-देना नहीं है । बड़े उद्योगपतियों की तरह ही मध्यम वर्ग भी अपना काम निकालने के लिए रिश्वत देने में कोई संकोच नहीं करता । मध्यम वर्ग के यात्री टी॰सी॰ की मुट्ठी गरम कर ट्रेन में बर्थ पाने के लिए हमेशा तैयार रहते हैं । अपने मकानों के किये गये अवैध निर्माण को नज़रअंदाज़ करने के बदले नगरपालिका के कर्मचारियों को भी रिश्वत देने में उनको कोई संकोच नहीं होता । छोटे स्तर के अधिकारी व कर्मचारी भी दिन-रात रिश्वतख़ोरी में जुटे रहते हैं और वे भी पैसे की ख़ातिर कोई भी ग़ैर-क़ानूनी काम करने के लिए सदैव तत्पर रहते हैं ।

इन मध्यमवर्गीय लोगों को अपने लड़के-लड़कियों को अच्छे स्कूलों व कॉलेजों में भर्ती करवाने के लिए मोटी केपिटेशन फीस चुकाने में कोई गुरेज नहीं होता । सरकारी कार्यालयों, पुलिस थानों और अदालतों में जो लोग रिश्वत देते-लेते हैं–क्या वे आसमान से उतरे हैं ? जी नहीं, वही मध्यम वर्ग यह सब करता है जो इस समय अन्ना के आन्दोलन का इतने ज़ोर-शोर से समर्थन कर रहा है, मानो उसके दामन पर भ्रष्टाचार का एक छींटा भी कभी न पड़ा हो । इसलिए इस वर्ग को भ्रष्टाचार के ख़िलाफ़ आवाज़ उठाने का कोई नैतिक अधिकार नहीं है ।

अब, जिस दूसरा तबक़ा है राजनीतिज्ञों का एक हिस्सा जिसका समर्थन अन्ना को मिला । यद्यपि रणनीतिक कारणों से यह वर्ग खुलकर सामने नहीं आया । इस वर्ग का उद्देश्य था यू॰पी॰ए॰ सरकार को कमज़ोर करना । स्पष्टतः इस वर्ग के इरादे भी पवित्र नहीं थे । वह भी अपने स्वार्थों व हितों

से प्रेरित था । जो तीसरा वर्ग, अन्ना के साथ जुड़ा वह उन लोगों का था जो सिद्धांत और व्यवहार दोनों में ही भ्रष्टाचार से संघर्ष करना चाहते हैं । यह वर्ग ही गांधीवादी मूल्यों व विचारधारा के सबसे नज़दीक था, किन्तु अन्ना-समर्थकों में इसी वर्ग के समर्थकों की संख्या सबसे कम थी ।

अब, अन्ना हज़ारे और महात्मा गांधी में अन्तर को समझना भी ज़रूरी है । अन्ना, गांधी तो क़तई नहीं है । ज़्यादा से ज़्यादा उन्हें गांधीवादी कहा जा सकता है और उन्हें केवल यह श्रेय दिया जा सकता है कि उन्होंने आन्दोलन का गांधीवादी रास्ता चुना । गांधीजी का चिंतन मौलिक था । उनकी समझ बहुत गहरी थी । सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि उनके इरादे व लक्ष्य पवित्र थे और वे अपनी अंतरात्मा की आवाज़ सुनते थे । फिर, अपनी अंतरात्मा की आवाज़ भी वही सुन सकते हैं जिनका मनो-मस्तिष्क कलुषता से सर्वथा मुक्त हो और जो निश्चल, निस्वार्थी व निर्मल हों । इसलिए इस संदर्भ में अन्ना की तुलना गांधी से करना बेमानी व हास्यस्पद होगा । क्योंकि अन्ना की न तो मुद्दों पर गहरी पकड़ है और न ही वे गांधीजी जैसी मेधा व विद्वता के धनी हैं ।

अन्ना ने अपने जीवन में कभी साम्प्रदायिक हिंसा की भर्त्सना नहीं की और गुजरात क़त्लेआम के दौरान वे चुप्पी साधे रहे । जबकि गुजरात क़त्लेआम, भारत के इतिहास का एक काला अध्याय है । अगर गांधीजी इस वक़्त जीवित होंते तो वे बिना एक क्षण की भी देरी के आमरण अनशन शुरू कर देते । वे इसकी क़तई परवाह नहीं करते कि उन्हें 'सभ्य समाज' का समर्थन प्राप्त हो रहा है या नहीं । गांधीजी के लिए 'अहिंसा' जीवन दर्शन थी, रणनीति नहीं । अन्ना ने तो नरेन्द्र मोदी के 'विकास के मॉडल' की भी तारीफ़ कर डाली । तो, क्या हम विकास के नाम पर किसी समाज में व्याप्त हिंसा व अन्याय को नज़रअंदाज़ कर सकते हैं ? क्या ऐसा विकास प्रशंसनीय हो सकता है जिससे समाज के वंचित समूहों को कोई लाभ न पहुंचे ?

गांधीजी की दृष्टि में सच्चा विकास वही है जिससे समाज की अंतिम पंक्ति में खड़ा आख़िरी आदमी लाभांवित हो । जबकि मोदी का 'विकास का मॉडल' केवल उच्च व उच्च-मध्यम वर्गों को और अधिक धनी बना रहा है । मोदी के इस मॉडल से टाटा, रिलायंस आदि का ही विकास हो रहा है । यही कारण है कि उद्योग जगत के शहंशाहों को मोदी में प्रधानमंत्री बनने की योग्यता नज़र आ रही है । यह भी अत्यंत ही दुर्भाग्यपूर्ण है कि अन्ना से जब गुजरात क़त्लेआम के बारे में पूछा गया तो पहले तो वे चुप्पी साधे रहे और बाद में एक सहयोगी के कोंचने पर केवल इतना ही बोले कि–वे साम्प्रदायिक सद्भाव के हामी हैं और मुसलमानों सहित सभी वर्ग व समुदाय उनके अभियान का हिस्सा है । अन्ना ने यह बात काफ़ी बेमन से कही और वह भी उनके सहयोगियों के दबाव में, जो उनसे कहीं अधिक धर्मनिरपेक्ष है ।

अन्ना के आन्दोलन के लिए 'सभ्य समाज' का समर्थन जुटाने में आर०एस०एस० ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई । भाजपा व बाबा रामदेव जैसे दक्षिणपंथी धार्मिक नेताओं ने भी इसके लिए 'भीड़ जुटाओ' अभियान में भागीदारी की । अब बाबा रामदेव दुखी हैं कि उन्हें लोकपाल बिल की मसौदा समिति में शामिल नहीं किया गया है । दक्षिणपंथी राजनीतिक व धार्मिक ताक़तों का गठजोड़ देश के धर्मनिरपेक्ष चरित्र के लिए ख़तरा बन सकता है । हम सब जानते हैं कि जयप्रकाश नारायण के आन्दोलन का यही नतीजा हुआ था और नरेन्द्र मोदी भी इसी आन्दोलन से उभरे थे । फिर भी, यहां यह कह देना प्रासंगिक होगा कि जयप्रकाश नारायण, अन्ना हज़ारे से कहीं बेहतर व प्रतिबद्ध नेता थे ।

जयप्रकाश नारायण व उनके बाद वी०पी० सिंह के 'भ्रष्टाचार विरोधी आन्दोलन असफल ही रहे । यदि वे सफल हो गये होते तो आज हमारे देश में भ्रष्टाचार का बोलबाला न होता । फिर भी, इन दोनों की तुलना में अन्ना कहीं नहीं ठहरते । इसलिए अन्ना की विजय को 'द्वितीय स्वाधीनता संग्राम' की सफलता घोषित करना अर्थहीन है । अन्ना के आन्दोलन के असर को बढ़ा-चढ़ाकर बताने के पीछे मीडिया के अपने लक्ष्य हैं । चूंकि अन्ना एंड कंपनी, मोदी के विकास मॉडल की हामी है और यह मॉडल बड़े औद्योगिक घरानों के हित में है तथा मीडिया का एक बड़ा हिस्सा इन्हीं उद्योग समूहों के नियंत्रण में है, इसलिए मीडिया भी अन्ना को ग़ांधी बनाने पर तुला हुआ है । फिर, मीडिया के नियंताओं को यह भी पता है कि इस देश में 'गांधी' से ज़्यादा किसी का नाम नहीं चलता ।

गुजरात के जाने-माने गांधीवादी चिंतक चुन्नीभाई वैद्य ने मोदी द्वारा किये गये 'ग्रामीण विकास' की तारीफ़ करने के लिए अन्ना को सार्वजनिक रूप से लताड़ा है । मोदी के 'ग्रामीण विकास' पर वे सवाल करते हैं–'कहां है वह

ग्रामीण विकास, जिसकी अन्ना बात कर रहे हैं ? अगर गांवों में सचमुच विकास हो रहा होता तो पिछले 10 वर्षों में 10 प्रतिशत ग्रामीण आबादी शहरों में पलायन नहीं कर गयी होती । वे पूछते हैं–'ग्रामीण विकास के मामले में मोदी से सीखने के लिए क्या है ?' श्री वैद्य की यह टिप्पणी सन 2011 की जनगणना के आंकड़ों पर आधारित है । मल्लिका साराभाई ने भी इस मुद्दे पर अन्ना की निन्दा करते हुए कहा है कि–मोदीराज में गांवों में ज़रा भी विकास नहीं हुआ है । उनके अनुसार–'मोदी सरकार ने गांवों की चरनोई भूमि और सिंचित कृषि भूमि को चोरी-छिपे उद्योगपतियों को 'मिट्टी के मोल' में दे दी है ।' साराभाई के अनुसार–मोदी शासन में ग्रामीणजन बहुत तकलीफ़ झेल रहे हैं ।

मल्लिका साराभाई की मानें तो मोदी के कार्यकाल में गुजरात में भ्रष्टाचार ने सारे रिकार्ड ध्वस्त कर दिये गये हैं । 1700 करोड़ रुपये का 'सुजलाम सुफलाम जन संरक्षण घोटाला', 600 करोड़ रुपये का 'मत्स्यपालन घोटाला' व 100 करोड़ रुपये का 'बोरीबंद चैक डेम घोटाला'–ये सारे घोटाले इसी मोदी राज की उपलब्धि की देन है ! वे कहती हैं कि–'उद्योगपतियों को उपकृत करने की नीति के कारण राज्य क़र्ज़ के बोझ तले दब गया है ।' गुजरात में ही काम कर रहे मानवाधिकार कार्यकर्ताओं, जिनमें जुझार बंदूक़वाला, रोहित प्रजापति आदि शामिल हैं, ने भी गुजरात की सामाजिक व आर्थिक स्थिति के संबंध में सनसनीख़ेज खुलासे किये हैं और अन्ना के मोदी राग को सिरे से ख़ारिज कर दिया है ।

जबकि महात्मा गांधी 'ग्रामीण विकास' पर बहुत ज़ोर देते थे । वहीं, आज के घोषित किये जा रहे ये 'दूसरे गांधी' उस मुख्यमंत्री की तारीफ़ कर रहे हैं जिसने ग्रामीण क्षेत्रों की क़ीमत पर उद्योगपतियों को फ़ायदा पहुंचाया । गांधीजी ने जीवन भर छुआछूत व जात-पात के विरुद्ध संघर्ष किया, जबकि यह घोषित 'द्वितीय गांधी' उस राज्य की प्रशंसा कर रहे हैं जहां सरकारी स्कूलों में दलित व सवर्ण बच्चों को मध्यान्ह भोजन के लिए अलग-अलग लाइनों में बैठाया जाता है । जो अध्यापक सभी बच्चों को एक साथ बैठाने की जुर्रत करता है, उसका तबादला कर दिया जाता है । शायद, अन्नाजी इन कटु सच्चाइयों से वाक़िफ़ नहीं हैं अथवा वाक़िफ़ होकर भी अपने सहयोगी व समर्थक बने हुए 'सभ्य समाजजनों' के दबाव व प्रभाव के कारण इस कटु सच को कहने का साहस नहीं जुटा पा रहे हैं ।

निश्चित ही, अन्ना की 'भ्रष्टाचारी विरोधी' यह लड़ाई स्वागत योग्य है और वे निश्चय ही प्रशंसा के पात्र भी हैं । लेकिन, यदि वे इस लड़ाई को जारी रखना चाहते हैं तो उन्हें अपने साथियों-सहयोगियों की छंटनी करनी होगी । क्योंकि–भ्रष्टाचार के दल-दल में गले तक डूबे हुए सैनिकों की सेना, कभी 'भ्रष्टाचार के दानव' को परास्त नहीं कर सकती–चाहे उसका कमांडर कितना ही ईमानदार क्यों न हो । जैसा की गांधीजी कहा करते थे–'साधन की पवित्रता उतनी ही महत्वपूर्ण है, जितनी कि साध्य की ।'

SHATABDI FOUNDATION, GAYA

- Started Shatabdi Public School in 2001 with primary classes, has now developed into a 10+2 CBSE affiliated educational institution with quality education in modern subjects with moral orientation.
- Presently there are around 1000 students who are provided modern teaching facilities. The Foundation also adopts poor/ orphan students
- Under Upwardbound .scheme, another project has been launched for preparation of +2 students to compete in Entrance Test for Engineering, Medical and other professional & technical courses.
- Our immediate needs are — Purchase one more school bus, Construction of Prayer Hall & Purchase of 30 Computers.

Ahle Khair Hazrat are Requested to Donate.

Kindly send your cheque/draft in favour of "Shatabdi Foundation, Gaya".

(ProfZ.H.Khan) Chairman

(Prof M. B. Zaman) Secretary

Shatabdi Public School, Katari Hill Road, Gaya-823001 (Bihar) INDIA

मानव-अधिकार

● संपादन प्रभाग

ख़ुदा जहां इन्सान और सृष्टि का साधिकारिक स्वामी है, वह उसका सम्प्रभु, शासक और दयावान पालनकर्ता भी है । उसकी दया हर एक के लिए है । उसने अन्य जीवों के मुक़ाबले में मनुष्य को मान-सम्मान दिया है, उसमें अपनी रूह फूंकी है । इस पहलू से मानव-जाति में राष्ट्र, रंग और जाति के आधार पर भेदभाव किया ही नहीं जा सकता । जब एक ही ख़ुदा के पैदा किये हुए सभी हैं और हर एक का ताल्लुक़ उसी से जुड़ता है तो पूरी मानव-जाति का आपसी ताल्लुक़ भाई-भाई का क़रार पाता है । इस दृष्टि से देखें तो इस्लाम का 'एक ख़ुदा-एक इन्सान' का आह्वान बड़ा महत्वपूर्ण बन जाता है ।

इन्सानी ख़ून हर हाल में सम्माननीय है । इसे नाहक़ नहीं बहाया जा सकता । अगर कोई व्यक्ति नाहक़ किसी का ख़ून बहाकर उसकी पवित्रता भंग करता है; क़ुरआन इसे पूरी मानव-जाति की हत्या क़रार देता है ।

यद्यपि इस्लामी राज्य पृथ्वी के किसी भी भाग में स्थापित हो सकता है, इस्लाम अपने ही राज्यों की भौगोलिक सीमाओं की वजह से मानवाधिकार पर कोई पाबन्दी नहीं लगाता । कुल मिलाकर मानवों के सर्वव्यापी मूल अधिकारों को मान्यता देता है, जिन्हें तमाम परिस्थितियों में बरता जाना चाहिए और जिनका मान-सम्मान किया जाना चाहिए । भले ही ऐसा व्यक्ति इस्लामी राज्य के भीतर रहता हो या उसके बाहर, भले ही राज्य के भीतर शान्ति हो या किसी से लड़ाई छिड़ी हो । क़ुरआन स्पष्ट शब्दों में कहता है–

"ऐ लोगो, जो ईमान लाए हो ! अल्लाह के लिए सन्मार्ग पर क़ायम रहने वाले और न्याय की गवाही देने वाले बनो । किसी गिरोह की दुश्मनी तुम को इतना उत्तेजित न कर दे कि न्याय से फिर जाओ । न्याय करो, यह ईश-भय से ज़्यादा क़रीब है । अल्लाह से डर कर काम करते रहो, जो कुछ तुम करते हो, अल्लाह इससे पूरी तरह बाख़बर है ।" (क़ुरआन, 5 : 8)

इन्सानी ख़ून हर हाल में सम्माननीय है । इसे नाहक़ नहीं बहाया जा सकता । अगर कोई व्यक्ति नाहक़ किसी का ख़ून बहाकर उसकी पवित्रता भंग करता है, क़ुरआन इसे पूरी मानव-जाति की हत्या क़रार देता है–

"जिसने किसी इन्सान को ख़ून के बदले या धरती में बिगाड़ पैदा करने के सिवा किसी और वजह से क़त्ल किया, उसने मानो तमाम इन्सानों का क़त्ल कर दिया ।" (क़ुरआन, 5 : 32)

इस्लाम इसकी इजाज़त नहीं देता कि औरतों, बच्चों, बूढ़ों, बीमारों या घायलों को सताया जाए या उनके प्रति निष्ठुरता दर्शायी जाए । स्त्री की शुचिता और उसका स्त्रीत्व सदैव सम्मानित किया जाना चाहिए । भूखे व्यक्ति को खिलाया जाए, नंगे को पहनाया जाए, घायल या बीमार का सही इलाज किया जाए, भले ही ऐसे तमाम लोगों का ताल्लुक़ इस्लामी समुदाय से हो या वे उसके दुश्मन हों !

Jamaat-e-Islami Social Service Society (Regd), Gaya

The Society is in service in the field of education, health and Islamic understanding for the last 34 years. Our resources are limited, our task is tremendous. We seek your co-operation in the following activities:-

1. **IQRA PUBLIC SCHOOL :** Besides 800 paying students, about 150 poor or orphan girls & boys are provided free education upto Matriculation with Islamic Carriculam.
2. **MILLAT HOSPITAL :** Every year about 15000 poor & needy patients are provided with free medical treatment & medicine besides other services.
3. **INTEREST-FREE SOCIETY :** Provides short-tenn loan without interest to needy people.
4. **ISLAMIC INFORMATION CENTRE :** Established at Bodh-Gaya, where lakhs of foreigners visit every year during Nov - March. The Centre provides reading materials on Islam, distributes Islamic literature and invites interested visitors for discussion besides inter-faith dialogue on regular basis.

Kindly send your cheque/draft in favour of the society

(Q. Hoda)
Chairman

(Prof. M. B. Zaman)
Secretary

JISSS, Millat Campus, Leitch Road, Gaya-823001

कैसे बनते हैं बादल ?

बच्चो, आजकल बादलों की बहुत चर्चा हो रही है । जहां वर्षा नहीं हो रही वहां लोग आकाश की ओर देखते हुए बादलों की प्रतीक्षा करते रहते हैं । तरह-तरह के टोटके करते हैं कि बादल आएं और उनके यहां मेंह बरसाएं । जहां ये लगातार झमाझम बरस रहें हैं, वहां बाढ़ की-सी स्थिति बन रही है । लोग बादलों को कुछ समय के लिए चले जाने को कह रहे हैं ।

आओ आज बादलों के बारे में जानें । हम जानते हैं कि नदियों, झीलों, तालाबों और सागरों का पानी सूर्य की गरमी से भाप में बदल जाता है । यह भाप वाष्प के रूप में हवा में मिल जाती है । वाष्प मिली गर्म हवा हल्की हो ऊपर आसमान में चली जाती है । जब हवा से भरे वाष्प एक स्थान पर एकत्र होते हैं तो वे धुएं जैसे दिखायी देते हैं । इसे ही बादल कहते हैं । बादल दस प्रकार के होते हैं । परन्तु विभिन्न आकारों और आकृतियों के आधार पर इन्हें चार मुख्य भागों में बांटा गया है ।

(1) सायरस बादल : सायरस बादल सफ़ेद रंग के होते हैं और पक्षियों के पंखों जैसे दिखायी देते हैं । ये बर्फ़ के छोटे कणों से बने होते हैं । इनकी ऊंचाई 8000 से 11000 मीटर के बीच होती है ।

(2) स्ट्रैटस बादल : इन बादलों का निर्माण लगभग 2400 मीटर की ऊंचाई पर होता है । ये धुंध की परतों जैसे दिखायी देते हैं । ये बादल ख़राब मौसम और बूंदाबांदी के सूचक होते हैं ।

(3) क्यूमुलस बादल : ये बादल लगभग 1220 से 1525 मीटर की ऊंचाई पर बनते हैं । ये ऊपर से गुंबद जैसे और नीचे से सपाट होते हैं । ये आकाश में सफ़ेद पहाड़ या कपास के ढ़ेर जैसे दिखायी देते हैं ।

(4) निम्बोस्ट्रैट्स बादल : ये बादल बहुत कम ऊंचाई पर बनते हैं । ये पानी के नन्हें कणों से बने होते हैं । इनका रंग गहरा भूरा अथवा काला होता है । यही वे बादल हैं जो धरती पर वर्षा करते हैं ।

सबसे अधिक ऊंचाई पर बनने वाले बादलों कोनाक्टील्यूमैंट बादल कहते हैं । इनकी ऊंचाई 48000 से 80000 मीटी तक हो सकती है ।

रेगिस्तान में बादल कम क्यों बरसते हैं ?

बच्चो, रेगिस्तान में आपने रेत के बड़े-बड़े टीले देखे होंगे । रेत ही रेत नज़र आती है वहां चारों ओर । इस सब का एक कारण वहां वर्षा का कम होना भी है । अक्सर रेगिस्तान में बादल बहुत कम बरसते हैं । ऐसा क्यों होता है?

विश्व के अधिकतर रेगिस्तान भूमध्य रेखा से कुछ ही दूरी पर हैं । रेगिस्तान से उठने वाली गरम हवा तेज़ी से चलती है । जब यह हवा भूमध्य रेखा के पास से आने वाली ठंडी हवा से टकराती है तो बादल बनते हैं । नमी से भरे ये बादल जहां बनते हैं, वहीं बरस जाते हैं । मतलब, रेगिस्तान से दूर ही ये सारा पानी बरसा देते हैं । पानी बरसाने के बाद नमी रहित ये हवा चारों ओर घूमने लगती है । घूमते-घूमते रेगिस्तान तक भी पहुंच जाती है । लेकिन इस हवा में इतनी नमी नहीं होती कि वहां की गरम हवा से मिलकर बादल बनाए । कभी-कभी हवा में कुछ नमी बच जाती है तो थोड़ी-बहुत वर्षा हो जाती है ।



बिना बरसे क्यों भागते हैं बादल

बरसात के मौसम में हमारी निगाहें आकाश की ओर ही लगी रहती हैं । आकाश में थोड़े से भी काले बादल दिखायी देते हैं तो हमारा मन खुशी से भर उठता है । बारिश की आस बंधती है । कई बार ऐसा होता है कि आसमान काले-काले

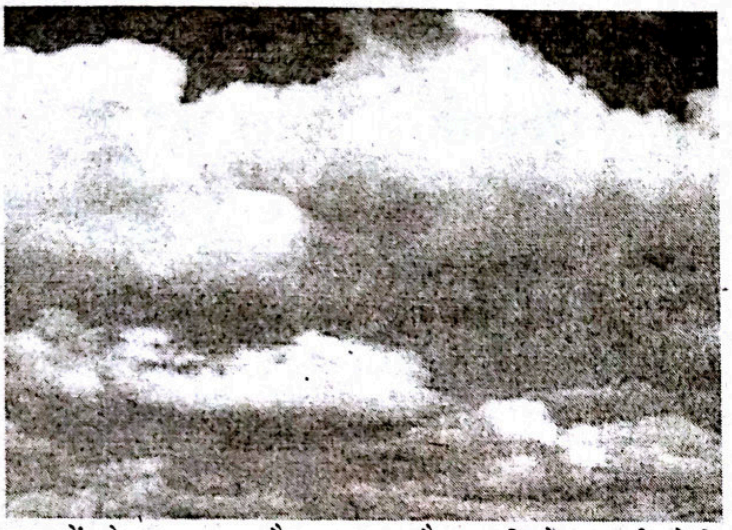

बादलों से भर जाता है । लगता है, अभी तेज़ वर्षा होगी, लेकिन बादल एक बूंद पानी बरसाये बिना ही ग़ायब हो जाते हैं । ऐसा क्यों होता है ?

बरसाती बादलों में बहुत ही सूक्ष्म जलकण मौजूद होते हैं । ठंडी हवा के संपर्क में आने से इन जलकणों का आकार बढ़कर बूंदों का रूप धारण कर लेता है । बूंदें भारी होने के कारण वर्षा के रूप में धरती पर गिरने लगती है । इसलिए जिस स्थान की हवा ठंडी होती है वहां अधिक वर्षा होती है । जहां पर बादलों के नीचे की हवा गरम होती है, वहां बादलों में मौजूद जलकण फिर से वाष्प में बदल जाते हैं और बादल बिन बरसे ही चले जाते हैं ।

इसलिए ही तो कहते हैं कि अपनी धरती पर वृक्ष लगाकर उसे हरी-भरी रखो । धरती हरी-भरी होगी तो बादल ख़ूब बरसेंगे ।

मुद्रक एवं प्रकाशक ख़लील अहमद द्वारा दावत ट्रस्ट (रजि०), D-314, दावत नगर, अबुल फ़ज़्ल इन्कलेव, जामिया नगर, नयी दिल्ली-110025 से प्रकाशित एवं भारत ऑफ़सेट, गली क़ासिम जान, बल्लीमारान, दिल्ली-6 से मुद्रित ।
फोन: 011-26949430
संपादक : डॉ० मुहम्मद अहमद

संस्था की लिखित अनुमति के बिना सम्पूर्ण या आंशिक पुनर्प्रकाशन पूर्णत: प्रतिबंधित है ।

With best compliments from:

Ph: 0651-2330144, 2330604
Mo. 09334706965

Azad Pharma
formerly
Azad Pharmacy

Timing :
10:00 a.m. to 09:00 p.m.

Sunday
Closed

B-7, Sainik Market, Main Road, Ranchi-834001 (Jharkhand)



AAF



Res. (0832) 2732406
Mob.: 9422058677
9422439911
9225904060
9225903421

K. ABOOBAKER

Fish Merchants & Commission Agent

Wholesale Fish Market, Margao, Goa-403601

Posted on 20-21 July 2011
August 2011
E-mail: kantimonthly@hotmail.com
Publishing Date: 18.07.2011

हिन्दी भाषियों की मासिक पत्रिका
कान्ति

RNI 53372/91
DL(S)-01/3147/2009-2011
LICENSED TO POST WITHOUT PREPAYMENT
License No. U (SE)-73/2009-11



BISMILLA FISHERIES

Near Zuari Acid Tank, Vasco-da-Gama, GOA
Ph. : 0832-Off. : 518634/513240/518786, Res. : 514587, Mobile : 9822123919